जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

हिण्डौन सिटी

Rashtradoot

फोनः- 230200, 230400 फैक्सः- 07469-230600 वर्षः 17 संख्याः 219 प्रभात हिण्डौन सिटी, शुक्रवार 13 जून, 2025 पो. रजि.SWM-RJ-6069/2017-18 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

अहमदाबाद विमान क्रैश में 241 की मौत

लंदन जा रहा एयर इंडिया का बोइंग विमान उड़ान भरते ही रिहायशी इलाके में गिरा

अहमदाबाद, 12 जून। अहमदाबाद से लंदन जा रहा एयर इंडिया का एक ड्रीमलाइनर बोइंग 787-8 विमान गुरुवार को अपराह्न सरदार पटेल अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे से उड़ान भरते ही दुर्घटनाग्रस्त हो गया। आधिकारिक जानकारी के अनुसार, उड़ान संख्या एआई 171 में 230 यात्री, दो पायलट और चालक दल के 10 अन्य सदस्य सवार थे। अब तक हादसे में केवल एक यात्री के जिंदा बचने की बात आई है। बाकी सभी लोगों की मौत हो गई है।

- करीब सवा आठ सौ फिट की ऊँचाई पर जाने के बाद विमान तेजी से नीचे आने लगा और हवाई अड्डे की परिधि के बाहर मेधावी नगर रिहायशी इलाके के एक अस्पताल परिसर में गिरा, गिरते ही विमान में आग लग गई।

अहमदाबाद से लंदन जा रहा एयर इंडिया का एक ड्रीमलाइनर बोइंग 787-8 विमान गुरुवार को अपराह्न सरदार पटेल अंतरराष्ट्रीय हवाईअड्डे से उड़ान भरते ही दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इसमें 12 क्रू मेंबर समेत 242 लोग सवार थे। हादसे में केवल एक यात्री जिंदा बचा है, बाकी सभी लोगों की मौत हो गई है।

इन यात्रियों में 169 भारतीय नागरिक , 53 ब्रिटिश, सात पुर्तगाली और एक कैनडा का नागरिक हैं। यात्रियों की सूची में गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी का नाम भी शामिल है। यह विमान एयरलाइंस के बेड़े में 2016 में शामिल किया गया था। डायरैक्टोरेट जनरल ऑफ सिविल एविएशन (डीजीसीए) ने इस दुर्घटना की जांच के आदेश दे दिये हैं।

डीजीसीए के एक वक्तव्य में कहा गया है कि एयर इंडिया के विमान वीटी-एएनबी ने अहमदाबाद से लंदन के गैटविक हवाई अड्डे के लिए उड़ान भरी थी, लेकिन तुरंत बाद ही यह दुर्घटनाग्रस्त हो गया। विमान की कमान कैप्टन सुमित सभरवाल के पास थी और उनके साथ फर्स्ट ऑफिसर क्लाइव कुंदर थे। कैप्टन सुमित सभरवाल 8200 घंटों के अनुभव वाले पायलट हैं। सह-पायलट के पास 1100 घंटों का उड़ान अनुभव था।

एयर ट्रैफिक कंट्रोल (एटीसी) के अनुसार, विमान ने रनवे संख्या 23 से अपराह्न एक बजकर 39 मिनट पर उड़ान भरी थी। उड़ान भरने के कुछ ही क्षणों बाद, इसने एटीसी को "मे डे", यानी गंभीरतम आपातस्थिति का संकेत दिया, लेकिन उसके बाद एटीसी द्वारा की गयी कॉल पर विमान से कोई प्रतिक्रिया नहीं आयी। इसके तुरंत बाद, विमान हवाई अड्डे के निकट रिहायशी इलाके में गिर गया और दुर्घटना स्थल से काले धुएं के गुबार उठने लगे।

हवाई अड्डे के प्रवक्ता ने बताया कि दुर्घटना के बाद हवाई अड्डे से सभी उड़ानों के आवागमन को अस्थायी तौर पर रोक दिया गया है। विमान करीब सवा आठ सौ फुट की ऊंचाई पर जाने के बाद तेजी से नीचे आने लगा और हवाई अड्डे की परिधि के बाहर रिहायशी इलाके में एक अस्पताल के परिसर में गिरते ही

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विमान दुर्घटना में पूर्व मुख्यमंत्री विजय रुपाणी की मृत्यु

अहमदाबाद, 12 जून। अहमदाबाद विमान दुर्घटना में गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रुपाणी की भी मृत्यु हुई है। केन्द्रीय जल शक्ति मंत्री एवं गुजरात भारतीय जनता पार्टी अध्यक्ष सीआर पाटिल ने रुपाणी के मृत्यु की पुष्टि की है। रुपाणी एयर इंडिया के उस विमान में सवार थे जो गुरुवार को अहमदाबाद से लंदन के लिये उड़ान भरते ही दुर्घटनाग्रस्त हो गया। विमान में 230 यात्री, दो पायलट तथा चालक दल के 10 अन्य सदस्य सवार थे। अभी तक प्राप्त जानकारी के अनुसार, हादसे में एक यात्री जीवित बचा है और उसका अस्पताल में उपचार चल रहा है।

मोदी, शाह, खड़गे, ने विमान हादसे पर शोक जताया

नयी दिल्ली, 12 जून। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी, केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे सहित अनेक नेताओं ने गुजरात के अहमदाबाद शहर में गुरूवार को हुए विमान हादसे पर गहरा दुख व्यक्त किया है और प्रभावित परिवारों के प्रति संवेदना जतायी है।

मोदी ने इसे दिल दहलाने वाली घटना बताते हुए कहा कि प्रभावित लोगों की सहायता के लिए हरसंभव कदम

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

प्लेन क्रैश क्यों हुआ?

हवाई जहाज के दोनों इंजनों ने एक साथ काम करना बंद कर दिया था, इसलिए प्लेन पूरी तरह से टेकऑफ नहीं कर पाया

-रेणु मित्तल-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 जून। भारत और विश्व के विमानन इतिहास की सबसे भीषण त्रासदियों में से एक आज उस समय घटी, जब करोड़ों भारतीयों के सपनों के साथ-साथ एक बोइंग ड्रीमलाइनर विमान भी अहमदाबाद से लंदन जाते हुए दुर्घटनाग्रस्त हो गया। विमान में यात्रा कर रहे 242 यात्रियों में से एक व्यक्ति चमत्कारी रूप से बच गया, लेकिन 787 जैसे अत्यंत मज़बूत और आधुनिक विमान के इस हादसे ने देश और दुनिया को हिलाकर रख दिया है।

- दूसरी थ्योरी है कि हवाई जहाज के "विंग्स" पर लगे "फ्लैप्स" नहीं खुले तथा विंग्स पर चिपके ही रहे। अतः विमान ऊँचाई नहीं पकड़ पाया। ऊँचाई पकड़ने के लिए फ्लैप्स 15 से 20 डिग्री का कोण बनाते हुए खुले होने चाहिए। फ्लैप्स के खुलने से दवाब बनता है, जो हवाई जहाज को ऊँचाई पकड़ने में मदद करता है।
- भीषण गर्मी थी तथा "फ्यूल टैंक" पैट्रोल से पूरे भरे हुए थे, लम्बी यात्रा के लिए। अतः ऊँचाई पकड़ने के लिये पूरा "थ्रस्ट' मिलना चाहिए था और फ्लैप्स न खुलने से तथा जहाज पर "फ्यूल टैंक" पैट्रोल से भरे होने के कारण काफी वजन था। अतः प्लेन को ऊँचाई पकड़ने के लिए आवश्यक "थ्रस्ट" नहीं मिल पाया।

आखिर हुआ क्या था? इस समय सब कुछ विशेषज्ञों की अटकलों पर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

क्रैश में बचा एक मात्र यात्री टहलता नज़र आया

अहमदाबाद, 12 जून। "जाको राखे साइयाँ मार सके ना कोय..."। अहमदाबाद प्लेन क्रैश में यह उक्ति फिर सही साबित हुई है। इस भीषण हादसे के बाद भी एक यात्री सकुशल बचा। हादसे के बाद वह घटनास्थल पर टहलता हुआ नजर आया। उसने न केवल मीडिया से बात की, बल्कि यह भी बताया कि हादसे में वह कैसे बचा। इस हादसे में जिंदा बचे शख्स का नाम रमेश विश्वास कुमार। रमेश विश्वास कुमार सीट नंबर-11 पर बैठे था।

- सीट नं. 11 पर बैठा रमेश विश्वास कुमार प्लेन क्रैश होते ही कूद गया था।

रमेश विश्वास कुमार गुजरात के पास स्थित केंद्रशासित प्रदेश दीव का रहने वाला है। जैसे ही प्लेन क्रैश हुआ, वैसे ही वह कूद गया था। पुलिस ने भी कन्फर्म किया है कि जो आदमी बचा उसका नाम विश्वास रमेश कुमार है। रमेश कुमार विश्वास ने बताया हादसे के बाद जोरदार धमाका हुआ, चारों

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मुख्यमंत्री ने विमान दुर्घटना में मृत राजस्थान के 11 यात्रियों के परिजनों को फोन पर ढांढ़स बंधाया

उन्होंने अपने सभी कार्यक्रम निरस्त किये तथा शोक संवेदना व्यक्त की

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा

- मुख्यमंत्री भजनलाल ने कहा कि दुर्घटनाग्रस्त विमान में राजस्थान के यात्री उदयपुर, बाँसवाड़ा, बीकानेर और बालोतरा के निवासी थे। जिला प्रशासन सभी के परिजनों से संपर्क में है और हर संभव सहायता सुनिश्चित कर रहा है।
- राजस्थान प्रदेश भाजपा ने विमान दुर्घटना पर गहरा शोक व्यक्त किया तथा 13 जून तक अपने सभी प्रस्तावित कार्यक्रमों को निरस्त कर दिया।

जयपुर, 12 जून। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने गुरुवार को हुई अहमदाबाद विमान दुर्घटना पर गहरा दुःख जताते हुए, इस भीषण हादसे में जान गंवाने वाले लोगों के प्रति गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है। शर्मा ने हादसे में गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी के निधन पर भी संवेदनाएं जतायी हैं। शर्मा ने कहा कि यह हादसा अत्यंत दुःखद एवं हृदय विदारक है। इस कठिन समय में मैं दिवंगत लोगों की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना करता हूं। ईश्वर उनके परिजनों को इस असहनीय पीड़ा को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। उन्होंने घायलों के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की कामना भी की।

मुख्यमंत्री ने कहा गुजरात सरकार और केन्द्र सरकार इस हादसे से उत्पन्न स्थिति को संभालने में जुटी हुई हैं और पड़ोसी राज्य होने के नाते राजस्थान सरकार भी हरसंभव सहयोग को तैयार है।

शर्मा ने कहा कि अब तक इस विमान में राजस्थान के 11 यात्रियों के सवार होने की जानकारी मिली है। ये यात्री उदयपुर, बांसवाड़ा, बीकानेर और बालोतरा जिलों के निवासी थे।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

टाटा समूह एक-एक करोड़ रू. आर्थिक सहायता देगा

मुंबई, 12 जून। टाटा समूह ने अहमदाबाद में एयर इंडिया के विमान हादसे में मारे गये लोगों के परिजनों को एक-एक करोड़ रुपये नगद सहायता राशि प्रदान करने की घोषणा की है।

टाटा संस के चेयरमैन एन. चंद्रशेखरन ने 'एक्स' पर एक बयान में एयर इंडिया की अहमदाबाद लंदन की उड़ान संख्या 171 की दुर्घटना पर समूह की ओर से गहरा दुख व्यक्त किया। उन्होंने कहा, टाटा समूह इस त्रासदी में प्राण गंवाने वाले प्रत्येक व्यक्ति के परिजनों को एक-एक करोड़ रुपये देगा। हम घायल व्यक्तियों के इलाज का पूरा खर्च उठायेंगे और यह सुनिश्चित किया जायेगा कि उन्हें पूरी मदद मिले और उनका ध्यान रखा जाये।

- घायलों के इलाज का पूरा खर्च उठायेगा तथा छात्रावास भवन के पुनर्निर्माण में मदद करेगा।

चंद्रशेखरन ने इसके अलावा अहमदाबाद के बीजे मेडिकल्स के

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

काफी बेचैनी सी है, भाजपा के कैडर में जातिगत जनगणना के मुद्दे पर

बेचैनी केवल राजनीतिक रणनीति की दृष्टि से ही नहीं, बल्कि पार्टी के मूल दर्शन के कारण भी है

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 जून। मोदी सरकार ने हालांकि जाति जनगणना कराने की घोषणा की थी, लेकिन खुद प्रधानमंत्री और भाजपा को इससे हिचक रही है और पार्टी इसका विरोध कर रही है क्योंकि यह राजनीतिक और सामाजिक रूप से एक जटिल मुद्दा है।

- भाजपा "व्यापक हिंदू समाज" की परिकल्पना पर आधारित है, जबकि, जातिगत जनगणना "छोटी-छोटी जातियों" की पहचान उभार कर जातिगत भागों व विभाजन को उभारती है।

जाति जनगणना का अर्थ है, राष्ट्रीय

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

हवाई जहाजों व हवाई यात्रा में "सेफ्टी" का मुद्दा अब सबसे अहम् हो गया है

सरकार "नागरिक उड्डयन" की दृष्टि से भारत को अंतर्राष्ट्रीय "हब" (केन्द्र) बनाने के सपने सजो रही थी। पर, इस प्रयास को भारी धक्का लगा है, अहमदाबाद में हुए प्लेन क्रैश से

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 जून। गुरुवार को अहमदाबाद में यात्री विमान एआई-171 की दुखद दुर्घटना ने न केवल देश को झकझोर दिया है, बल्कि विमानन सुरक्षा से जुड़े गंभीर मुद्दों को एक बार फिर से केन्द्र में ला दिया है। एयर इंडिया द्वारा संचालित यह 11 साल पुराना विमान आधुनिक तकनीक से लैस था और इसका रूटीन निरीक्षण भी किया गया था, फिर भी यह एक भयावह हादसे का शिकार हो गया, जिसे विशेषज्ञ हाल के वर्षों की सबसे बड़ी विमान दुर्घटनाओं में से एक बता रहे हैं।

- यह भावना जोर पकड़ रही है कि सिविल एविएशन सैक्टर बड़ी स्वस्थ गति से बढ़ रहा था। यात्री बढ़ रहे थे, नई हवाई पट्टियों की संख्या जोरों से बढ़ रही थी। पर, हवाई जहाजों की देख-रेख व सेफ्टी की दृष्टि से रख-रखाव व टैस्टिंग का इंफ्रास्ट्रक्चर उस गति से नहीं बढ़ा है। चूक होने का बस इन्तज़ार सा ही था।
- कांग्रेस ने इस मुद्दे पर, सरकार को दोषी ठहराते हुए आरोप लगाया कि "प्राइवेटाइज़ेशन" पर सरकार का ज्यादा जोर था, पैसेंजर सेफ्टी पर कम।
- एयर इंडिया का जहाज आधुनिकतम साज-सामान व टैक्नॉलजी से सुसज्जित था, पर, यह भी सच है कि प्लेन दस साल से कार्यरत है। इस लम्बी अविध में प्लेन में अंदर ही अंदर कितनी "वेयर एण्ड टेयर" (टूट-फूट) हुई है, सतही निरीक्षण से पकड़ने में नहीं आता। अतः हवाई जहाजों का गहराई से आंतरिक इन्स्पैक्शन होना जरूरी है। पर, शायद इसके लिए हम अभी मानसिक रूप से व तकनीकी सुविधाओं से निरीक्षण करने के लिए मशीन व मैन पावर से सुसज्जित नहीं हैं।

हवाई दुर्घटना में मारे गए लोगों में गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रुपाणी भी शामिल हैं, जिसकी पुष्टि राज्य भाजपा अध्यक्ष एवं केन्द्रीय मंत्री सी.आर. पाटिल ने की है।

विमान में सवार अधिकांश लोगों के मारे जाने की आशंका है। जबकि, अहमदाबाद के विभिन्न अस्पतालों में अब भी 43 से अधिक घायल लोगों का इलाज चल रहा है। इस हादसे में जीवित बचे एक यात्री रमेश विश्वास कुमार ने दुर्घटना का प्रत्यक्ष विवरण दिया है। दुर्घटना में हुई मौतों की समीक्षा चल रही है।

हालांकि यह पहला अवसर है, जब किसी बोइंग 787 विमान की घातक

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

आत्मा को न शस्त्र काट सकता है, न आग जला सकती है, न जल भिगो सकता है और न हवा सुखा सकती है। –भगवत गीता

पर्व ईद-उल-अज़हा को मनाने के लिये जानवरों (बकरे) की कुर्बानी देने के स्थान पर हम सब एक राय से उसके विकल्प पर क्यों न विचार करें?

हमारे देश का संविधान देश के समस्त नागरिकों को सामाजिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्र प्रतिष्ठा और अवसर की समता प्राप्त कराने के लिये तथा उन सब में व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता और अखण्डता के लिये दृढ़ संकल्प होने का आव्हान करता है।

संविधान ने हमें मूल अधिकार दिये और संविधान के अनुच्छेद 51क में घोषणा की कि इस देश के प्रत्येक नागरिक के कुछ मूल कर्त्तव्य होंगे जो संक्षेप में इस प्रकार है:–

''वह संविधान की पालना करे, भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे, वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और संवर्धन करे तथा प्राणी मात्र के प्रति करूणा भाव रखे, हिंसा से दूर रहे''।

संविधान के अनुच्छेद 48क में राज्य को निर्देश दिया है कि वह वन्य जीवों की रक्षा करने का प्रयास करेगा। अनुच्छेद 48क की व्याख्या करते हुये सुप्रीम कोर्ट ने टी.एन. गोदावर्मन थिरूमुलपाद बनाम भारत संघ एवं अन्य; एआईआर 2012 एस.सी 1254 के निर्णय में स्पष्ट किया कि जीने के अधिकार में अच्छे स्वास्थ्य एवं बेहतर जीवन यापन के लिये स्वच्छ पर्यावरण का अधिकार भी सम्मिलित है।

भारत में हिन्दू धर्म के मंदिरों में पशुबलि दी जाती थी। टोंक में ऊँटों की बलि होती थी और देवी मां के मंदिरों में भैंसों की बलि दी जाती थी।

क्योंकि संसार की बडी आबादी मांसाहारी है, अत: पशुशालाओं को कुछ पशुओं को कत्ल करने की अनुमति दी गई है; किन्तु Prevention of Cruelty to Animals Act, 1960 के तहत् कई प्रतिबंध निर्धारित किये हैं और अपेक्षा की है कि पशुओं को कष्ट नहीं होगा। इसके अतिरिक्त मांस के लिये किये जाने वाले पशु को केवल पशुशालाओं में ही काटा जा सकता है।

संविधान प्राणी मात्र के प्रति करूणा का भाव और हिंसा से दूर रहने का निर्देशन देता है, किन्तु ईश्वर की कृपा हेतु पशुबलि/कुर्बानी को ईश्वर की कृपा प्राप्त करने के औचित्य को स्वीकार नहीं करता; इसके विपरीत अनुच्छेद 51क(ज) में नागरिकों का यह कर्त्तव्य निर्धारित करता है कि वे वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञार्नाजन तथा सुधार की भावना का विकास करेंगे। प्राकृतिक पर्यावरण की जिसके अन्तर्गत झील, वन, नदी और वन्यजीव हैं, रक्षा करेंगे और सम्वर्धन करेंगे तथा प्राणी मात्र के प्रति दयाभाव रखेंगे। प्राणी में सभी प्रकार के जानवर अर्थात् बकरे आदि भी आते हैं।

कम्बोडिया के लोग पहाड़ों में भी आत्मा का वास होने की बात करते हैं। हम नदियों को देवी मां के रूप में देखते हैं और उनमें भी मानवीय स्पन्दन जैसी अनुभूति होती है मानते हैं। इस विचारधारा को कुछ उच्च न्यायालयों ने अपने निर्णय में सही माना है।

देश के 29 राज्यों में से 20 राज्यों में गायों तथा दुधारू जानवरों व बोझ ढोने वाले पशुओं के वध को अमान्य माना है और सर्वोच्च न्यायालय ने अनुच्छेद 48 व 48क व 51क के आधार पर इन प्रावधानों को प्रवर्तनीय माना है। गो सेवा संघ के केस में यहां तक कह दिया है कि पशु वध के निषेध पर इस बात का कोई असर नहीं होगा कि वे पशु कालान्तर में बोझा ढोने व दूध देने के योग्य नहीं रहे। देश के The Wild Life (Protection) Act, 1972 ने जंगली जानवरों को अभयदान दिया है।

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 21 प्रत्येक व्यक्ति को गरिमा मय जीवन जीने का अधिकार देता है और जीने का अधिकार आधारभूत व्यक्ति का Human Right (मानव अधिकार) है। अनुच्छेद 21 में शब्द स्पमि की व्याख्या करते हुये इसके विस्तृत रूप में Animal Life (पशु जीवन) को भी शामिल किया गया है। मूल कर्त्तव्यों में भी प्राणी मात्र के प्रति करूणा भाव रखने का उल्लेख है। इसी बात को इशोपनिषध में सभी Species के प्रति समान भाव रखने पर जोर दिया है। पशु क्रूरता निवारण अधिनियम (PCA Act) का उद्देश्य भी पशुओं के प्रति करूणा भाव और उनके जीवन की सुरक्षा पर जोर दिया है। कुरान में अल्लाह को Most Gracious, Most Merciful विशेषण से सम्बोधन दिया है।

यदि हम Universal Declaration of Animal Welfare (DWAW) जो एक अभियान है पर विचार करें तो पायेंगे कि World Society for the Protection of Animals Welfare इसका समर्थन करते हैं, भारत भी एक सहयोग देश है। World Health Organisation of Animal Health (OIE) जिसका भारत सदस्य है, वह WTO का एक अभिन्न अंग है, जिसके 178 सदस्य देश हैं जिनमें भारत एक देश है। यह प्रक्रिया इन्हें अन्तर्राष्ट्रीय संधि का दर्जा देते हैं, जिसका निर्देश सदस्यों के लिये बाधकारी है। OIE ने 5 अन्तर्राष्ट्रीय निर्देश जानवारों की स्वतंत्रता व पीड़ा विहीन जीवन के लिये स्वीकार किये है। ये निर्देशन PCA Act की धारा 3 से 11 में मिलते हैं ये उसी प्रकार की जानवरों के अधिकार हैं, जो मानव अधिकार के रूप में संविधान के चेप्टर-III में है। पशुओं के इन अधिकारों को वही मान्यता है जो चेप्टर-III ने संविधान में मिलती है। सरकार भी इन्हें मानने को बाध्य है। ये अन्तर्राष्ट्रीय संधि की तरह देश की अदालतों में Enforceable हैं।

ईदगाह में यशस्वी शहर काजी खालिद उस्मानी जी नेतृत्व में मुस्लिम समाज के लोगों की मौजूदगी में गत शनिवार को पर्व पर सबको बधाई दी है। उन्होंने लोगों को नसीयत दी कि पर्व के समय दूसरे मजहब के लोगों की भावनाओं का ध्यान रखें और कुर्बानी के लिये गंदगी न हो इस पर ध्यान दें। खालों की उचित व्यवस्था करें। इस पर्व पर घर आने वाले दूसरे धर्म के मेहमानों को मिठाई, मिल्क सेक, सेवई की व्यवस्था की जाती है।

PCA Act की धारा 28 धार्मिक प्रथाओं के लिये अपवाद है अत: सुप्रीम कोर्ट ने पशुबलि (कुर्बानी) को एक सीमा तक धार्मिक प्रथा मानकर PCA Act में अपवाद मानते हुये Closed एवं प्राइवेट क्षेत्र में स्वीकृति पशुबलि की दी है; किन्तु इस बिन्दु पर विचार नहीं किया कि क्या ईद-उल-अज़हा पर्व पर कुर्बानी देना मुस्लिम धर्म की एक Essential Religious प्रेक्टिस है तथा क्या उक्त प्रथा को निषेध किये जाने से संविधान के अनुच्छेद 25 व 26 का Violation तो नहीं होगा, क्योंकि हमें उक्त अनुच्छेदों को संविधान के अनुच्छेद 21, 48, 48क, 51क के संदर्भ में देखना होगा। हमें PCA एक्ट की धारा 11 व 28 की परीक्षा उक्त अनुच्छेदों की पृष्ठभूमि में करनी होगा। साथ ही हमें यह भी देखना होगा कि अन्तर्राष्ट्रीय संधि की पालना करना देश का कर्त्तव्य है। धारा 28 का उद्देश्य है कि पशु की बलि (कुर्बानी) करना अपराध नहीं है, यदि पशुबलि धर्म सम्मत हो यानी AIR 195 SC 282 के निर्णय के अनुसार बकरे की बलि धर्म का अभिन्न अंग हो और उसका सम्बन्ध Doctrine of Religion से हो। बकरे को मारना इस प्रकार Essential Religious प्रेक्टिस नहीं है। इन बिन्दुओं पर सुप्रीम कोर्ट में सम्भवत: कभी बहस ही नहीं हुई। अत: PCAAct की धारा अवैध और Ultra vires है।

ईद-उल-अज़हा पर्व के रूप में उस घटना की याद में मनाया जाता है जब हज़रत अब्राहिम ने Sacrifice किया था। चूंकि अब्राहिम ने अल्लाह की Command की पालना की थी अब्राहिम ने अल्लाह की आज्ञा में अपने पुत्र की कुर्बानी स्वीकार दी थी। अल्लाह ने हस्तक्षेप किया और अपने Angel जिब्राइल से अब्राहिम को सूचना भेजी कि उसका बलिदान पहले ही स्वीकार हो चुका है अत: उसे Reward दिया गया। कुरान (37:100:111) में अल्लाह ने Ordain किया है, "Those who do good shall be rewarded", बकरे की कुर्बानी करना अच्छा काम नहीं कहा जा सकता। ईद-उल-अज़हा तो बकरे की कुर्बानी देकर मनाया जाता है, जबकि अब्राहिम ने अल्लाह की Comman् को माना था उस पर अमल नहीं हुआ था। बकरे का गोश्त (पकाकर) परिवारजन, पडोसी व दोस्त को उल्लास के साथ परोसा जाता है।

इस विषय को समझने के लिये हमें संविधान The Prevention of Cruelty Act, 1960; Wild Life (Protection) Act, 1972; States द्वारा बनाये गये The Prohibition of Bird and Animal Sacrifice Act, Local Municipal Acts, Local Panchayat Acts, International Covenants, संविधान की ग्यारहवीं व बारहवीं अनुसूची। हिन्दुओं ने समय की पुकार को स्वामी विवेकानंद, राजा राममोहन राय, स्वामी दयानंद सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस के प्रवचनों द्वारा पशुबलि के निषेध के महत्व को समझा। यह क्रूर प्रथा कई राज्यों में कानून द्वारा निषेध हो चुकी है।

ईदगाह में यशस्वी शहर काजी खालिद उस्मानी जी नेतृत्व में मुस्लिम समाज के लोगों की मौजूदगी में गत शनिवार को पर्व पर सबको बधाई दी है। उन्होंने लोगों को नसीयत दी कि पर्व के समय दूसरे मजहब के लोगों की भावनाओं का ध्यान रखें और कुर्बानी के लिये गंदगी न हो इस पर ध्यान दें। खालों की उचित व्यवस्था करें। इस पर्व पर घर आने वाले दूसरे धर्म के मेहमानों को मिठाई, मिल्क सेक, सेवई की व्यवस्था की जाती है।

देश के चीफ काजी जब इस प्रकार का संदेश दे रहे हैं तो नि:सन्देह मुझे उम्मीद है कि हम सब ऐसे प्रबुद्ध व्यक्तियों से मिलकर प्रयास करें तो कुर्बानी का कोई विकल्प निकाल सकते हैं। जहां जहां भैंसों की बलि बंद हुई है वहां वैकल्पिक व्यवस्था की गई है। मंदिरों में कुकुम्बर काटा जाता है कहीं नारियल फौडे जाते हैं, आदि जिन्हें समाज के सभी लोगों को व पिछडे, गरीबों आदि में वितरित किया जाता है। त्यागना है तो अपनी बुराईयों को छोडें। आइये मिलजुल भाईचारे के वातावरण में जानवरों (बकरे-भेडों) की कुर्बानी का शाकाहारी विकल्प तलाश करें।

विश्व के दो व्यक्तियों ने बीड़ा उठाया है कि शाकाहारी बनो और विश्व को बचाओ। एक है जॉन रोबिन्स की बहुचर्चित पुस्तक **The Food Revolution: How Your Diet Can Help Save Your Life and Our World " और दूसरी है दी सुप्रीम मास्टर चिंगहाई की पुस्तक **From Crisis to Peace: The Organic Vegan Way Is The Answer** दोनों ने अकाटय प्रमाणों से प्रमाणित किया है कि शाकाहारी बनकर धरती को विनाश होने से बचाया जा सकता है।

सबको सन्मति दे भगवान!

-अतिथि सम्पादक,
पानाचन्द जैन
पूर्व न्यायाधीश, राजस्थान हाई कोर्ट

जल संरक्षण की पारंपरिक तकनीकों से वंदे गंगा अभियान को सफलता मिलेगी

अंजलिका पंवार

रेतीले राजस्थान की तपती ज़मीन पानी की हर बूँद का महत्व समझती है। यही कारण है कि हर राजस्थानी पानी बचाने को सबसे ज्यादा महत्व देता है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा 5 जून से 20 जून तक चलाए जा रहे वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान राजस्थान में जल संरक्षण की इसी अलख को जगा रहा है। दरअसल राजस्थान में यह पंक्तियाँ हर किसी की ज़ुबान पर रहती हैं–

''जळ थोड़ो नेह घणो''

राजस्थान की शुष्क धरा पर गिरती पानी की एक-एक बूंद सभी प्रदेशवासियों के जीवन में वही स्थान रखती है, जितना कि हरे-भरे वृक्षों की हर डाली पर जीवन की सांसें। जल संरक्षण की प्राचीन परंपराएं वर्तमान परिस्थितियों में भी कारगर हैं। भजनलाल सरकार इन्हें संरक्षित और पोषित करने का प्रयास कर रही है। जल संरक्षण की इन्हीं परम्परागत तकनीकों से राजस्थान के शुष्क एवं अर्ध शुष्क जलवायु में जल संरक्षण सहज बन रहा है। जानते हैं इन पारंपरिक तकनीकों के बारे में–

जोहड़ :- जोहड़ मिट्टी के छोटे बांध होते हैं जो वर्षा के पानी को संचित करते हैं और उसे जमीन में रिसने देते हैं, जिससे भूजल स्तर में वृद्धि होती है। जोहड़ कुओं के जल स्तर को बनाए रखते हैं जिससे पीने और खेती के लिए बड़ी मदद मिलती है। इनके निर्माण में सामुदायिक सहयोग शामिल होता है जिससे स्थानीय निवासियों को जल आपूर्ति सुनिश्चित होती है।

बावड़ी :-बावड़ी गहरे, बहु-मंजिला कुएँ होते हैं जिनमें पानी तक पहुँचने के लिए सीढ़ियाँ होती हैं। राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में बावड़ियाँ न केवल पीने के पानी और सिंचाई के लिए महत्वपूर्ण हैं बल्कि ये सामाजिक मिलन स्थल के रूप में भी कार्य करती हैं। इनके निर्माण में कला और स्थापत्य का अनोखा संगम देखने को मिलता है, जैसे कि दौसा की आभानेरी, जोधपुर की तोरी और जैसलमेर की पटवा बावड़ी स्थापत्य कला की बेजोड़ प्रस्तुति हैं। आज के दौर में प्राचीन समय में निर्मित बावड़ियां पर्यटन का भी एक अच्छा स्त्रोत साबित हो रही हैं। इसको इस तथ्य से समझा जा सकता है कि आभानेरी बावड़ी दौसा जिले का सबसे महत्वपूर्ण ट्यूरिस्ट स्पॉट है।

टांका :- टांका भूमिगत टैंक या जलाशय होते है जो छत और आँगन से वर्षा जल को एकत्रित और संचित करता हैं। अमूमन टांके घरों और स्कूलों में बनाए जाते हैं ताकि पीने के पानी का स्थायी स्त्रोत मिल सके। टांका का निर्माण अपेक्षाकृत सरल होता है और यह जल संरक्षण का एक प्रभावी तरीका है, खासकर ग्रामीण इलाकों में। टांका के माध्यम से वर्षा जल का संग्रहण और उपयोग ग्रामीण क्षेत्रों में जल संकट का समाधान करने में मदद करता है। राजस्थान के लगभग सभी राजकीय विद्यालयों में टांके देखने को मिल जाते हैं।

खड़ीन :- खड़ीन एक पारंपरिक रन ऑफ खेती प्रणाली है, जिसमें खेत के निचले किनारे पर एक लंबा मिट्टी का बांध बनाया जाता है ताकि वर्षा के समय बहने वाले पानी को एकत्रित किया जा सके। जैसलमेर क्षेत्र में खड़ीन प्रणाली काफी प्रचलित है और यह कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एकत्रित पानी का उपयोग फसलों की सिंचाई और भूजल पुनर्भरण के लिए किया जाता है।

नाड़ी :- नाड़ी छोटे से मध्यम आकार के तालाब होते हैं जो वर्षा जल को घरेलू और पशु धन के उपयोग के लिए संचित करते हैं। सरकार की अनूठी पहल से नाड़ी निर्माण हेतु मनरेगा फंड को कन्वर्ज किया जा रहा है जिससे अब बजट की समस्या नहीं रही है। नाड़ी सूखे या अनुमान से कम बरसात के समय में बहुत उपयोगी होती हैं और अक्सर सामुदायिक रूप से प्रबंधित की जाती हैं।

कुंड :- कुंड भूमिगत संरचनाएँ होती हैं जिनके चारों ओर एक कटोरी के आकार का कैचमेंट एरिया होता है जो वर्षा जल को संचित करता है। थार मरुस्थल में कुंड आमतौर पर घरेलू पेयजल के लिए एक महत्वपूर्ण स्त्रोत प्रदान करते हैं।

राजस्थान के निवासियों की प्रतिभा और अनुकूलता का प्रमाण इन पारंपरिक जल संरक्षण तकनीकों में झलकता है। आज के आधुनिक युग में भी यही प्राचीन तकनीकें जल संरक्षण के इरादों को मजबूती प्रदान करती हैं। ये तकनीकें सीमित जल संसाधनों का कुशलतापूर्वक प्रबंधन करती हैं और भारत के सबसे शुष्क राज्य में जीवन निर्वाह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। सामुदायिक सहयोग और पारंपरिक ज्ञान का उपयोग करके हम जल संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठा सकते हैं और वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान समाज की इसी ज्ञान विरासत को सरकार के सहयोग से नए आयाम देकर राज्य के प्रत्येक गांव, ढाणी को जल आत्मनिर्भरता की ओर ले जाने का प्रयास है।

लेखिका-
सुश्री अंजलिका पंवार,
सहायक जनसम्पर्क अधिकारी,
शोध एवं संदर्भ शाखा, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग।

आओ जरा कश्मीर समस्या को समझने का प्रयास करें - भाग-2

महावीर सिंह

इस लेख के पूर्व भाग में हमने इंडिपेंडेंस ऑफ इंडिया एक्ट और उसके तहत धार्मिक आधार पर भारत के विभाजन के बारे में संक्षेप में जाना। अधिसंख्य देशी रियासतों में भारत अथवा पाकिस्तान में विलय के विकल्प को चुना। उसके कुछ तो भौगोलिक कारण थे और ज्यादा महत्व पूर्ण देशी रियासतों के राजाओं की यह समझ थी कि बदली हुई परिस्थितियों में उनका स्वतंत्र अस्तित्व पूर्णत: अव्यवहारिक व असंभव है। भारत की अंतिम सरकार ने देशी राजाओं को अनेक प्रकार की सुविधाएं देकर उनके विलय को सौहार्द्रपूर्ण बना दिया। हमने यह भी देखा कि जूनागढ़ का भारत विलय कठिन परिस्थितियों में हुआ जहां वहां के नवाब में पाकिस्तान विलय के पत्र पर हस्ताक्षर कर दिए थे किंतु जनता में उसे जनमत संग्रह के आधार पर अस्वीकार कर दिया।

कश्मीर की स्थिति पर भी विचार किया गया था। कश्मीर के राजा हरि सिंह अनिश्चय की स्थित में थे। वस्तुत वे अपने राज्य को न भारत और न पाकिस्तान में विलय करना चाहते थे। कश्मीर की अधिसंख्य जनसंख्या मुस्लिम धर्मावलंबी थी और राजा हिन्दू धर्म मानने वाला था। कश्मीर की सीमा आजाद भारत से और पाकिस्तान से मिलती थी। कश्मीर का वह भाग जिसे अब हम पाक ओक्यूपाइड कश्मीर कहते है वहां की अधिसंख्य जनसंख्या मोटे तौर पर इस्लाम को मानने वाले कबाइली (ट्राइबल) लोगों की थी। पाकिस्तान को, द्वि राष्ट्र सिद्धांत---टू नेशन थ्योरी--- के अनुसार कश्मीर का स्वतंत्र अस्तित्व स्वीकार नहीं था किंतु वह सीधे-सीधे कश्मीर की स्वतंत्रता पर आक्रमण कर्ता भी नहीं दिखना चाहता था। इसलिए पाकिस्तान में कबाइलियों को हथियारबंद किया, प्रशिक्षित किया और पाकिस्तानी सेना के संरक्षण में कश्मीर घाटी व अन्य भागों में प्रवेश करा दिया। राजा हरि सिंह को अपने अस्तित्व का खतरा सामने दिख गया, तब उन्होंने भारत सरकार से सैन्य मदद की गुहार की। भारत की अंतरिम सरकार ने स्पष्ट किया कि बिना भारत में विलय के भारत द्वारा सैन्य मदद दिया जाना कानूनी व व्यवहारिक दृष्टि से संभव नहीं होगा, तब जाकर राजा हरि सिंह ने भारत के साथ विलय पत्र पर हस्ताक्षर किए।

इसलिए कश्मीर की आज जो उलझी स्थिति है उसके पहले दो कारण है:- पाकिस्तान का कश्मीर पर कबाइलियों की आड़ में छद्म आक्रमण, राजा हरि सिंह का भारत में विलय पर अत्यंत विलंब से लिया निर्णय हैं। विलंब से लिए निर्णय के कारण हथियारबंद कबाइली श्रीनगर के अति समीप तक आ गए जहां से भारतीय सेना में उन्हें पीछे धकेलना शुरू किया। उस समय तक राजा हरि सिंह के आधिपत्य वाले कश्मीर राज्य का बड़ा हिस्सा पाकिस्तान के कब्जे में जा चुका था। अब एक प्रश्न जो बार बार मीडिया में उठाया जाता है वह है कि भारत में युद्धविराम क्यों किया और संयुक्त राष्ट्र संघ में क्यों गया? क्यों नहीं, जैसा कुछेक नेता कहते है, तीन-चार दिन युद्ध जारी रखकर पूरा कश्मीर स्वतंत्र करवाया???

उस समय की भारत और विश्व की परिस्थितियों को बिना ध्यान में रखे, 60, 70 साल बाद इस प्रकार के प्रश्न करना बड़ा आसान है। भारत को आजाद हुए कुछ ही महीने हुए थे। द्वितीय युद्ध के बाद और ब्रिटिश शासन की भारत के प्रति अहित कारी आर्थिक नीतियों के कारण शासन के पास खाली राजकोष का था। देश अधिकांश वस्तुओं के लिए विदेशों पर निर्भर था। सबसे बड़ी बात यह थी कि नव स्वतंत्र भारत की विश्व समुदाय में क्या हैसियत थी? कितने देश, कितने समय तक हमें सैन्य व आर्थिक सहायता दे सकते थे? 1947 के 5,7 साल पहले के और फिर उसके भारत में विलय के बाद के कश्मीर के घटनाक्रमों को समझने के लिए शेख अब्दुल्ला के किरदार व उनकी भूमिका को भी समझना पड़ेगा। यह निर्विवाद है कि कश्मीर के भारत विलय में शेख अब्दुल्ला की सकारात्मक भूमिका रही था।

विलय पत्र के साथ ही महाराजा हरि सिंह में लॉर्ड माउंटबेटन को पत्र लिखा था कि वे अंतरिम सरकार बनाएंगे जो कबाइली समस्या के कारण उत्पन्न आपातकाल से निपटने में उनकी सहायता करेगी। शेख अब्दुल्ला को आपातकाल में प्रधानमंत्री की बनाने की बात भी लिखी। इस के बाद, राजा द्वारा आमंत्रण के बाद शेख अब्दुल्ला में 30 अक्टूबर 1947 को अंतरिम प्रधानमंत्री का पद संभाला। कश्मीर के भारत में विलय को भारत की सरकार द्वारा स्वीकार करने के पश्चात माउंटबेटन द्वारा पत्र लिखा गया था कि उनकी सरकार के मतानुसार, जहां कहीं भी विलय का मुद्दा विवादित हो उसका फैसला लोगों की इच्छा के अनुरूप किया जाना चाहिए। जब भी जम्मू कश्मीर में कानून व्यवस्था बहाल हो जाएगी, हमलावर बाहर निकाल दिए जाएंगे, तब विलय के प्रश्न पर लोगों की राय ली जाएगी।

शेख अब्दुल्ला पहले जम्मू कश्मीर मुस्लिम कॉन्फ्रेंस के नेता थे किंतु फिर उन्होंने सभी धर्म-जात वालों को इस से जोड़ा और इसका नया नाम जम्मू कश्मीर नेशनल कॉन्फ्रेंस रखा। यह दल जनता के अधिकारों, समस्याओं के लिए राजा के विरुद्ध भी आंदोलन रत था।

भारत की आजादी के संघर्ष से जुड़े बड़े नेताओं के साथ भी संपर्क में रहती थी। 1947 आते-आते शेख अब्दुल्ला जम्मू कश्मीर के सर्वाधिक लोकप्रिय जन नेता हो गए। कबाइली आक्रमण के कारण छिन्न-भिन्न हुई, प्रशासनिक व कानून व्यवस्था को बहल करने में नेशनल कॉन्फ्रेंस के कार्यकर्ताओं में सक्रिय भूमिका अदा की। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर महाराजा हरि सिंह ने इन्हें अंतरिम सरकार गठन करने और प्रधान मंत्री बनाने का आमंत्रण दिया। अंतरिम प्रधान मंत्री के बाद शेख अब्दुल्ला 1951 में जम्मू कश्मीर के पहले निर्वाचित प्रधान मंत्री बने। भारत की सरकार तत्समय नव स्वतंत्र देश की विभिन्न आंतरिक परिस्थितियों को ध्यान में रख कर और विश्व के देशों में नए भारत की एक लोकतांत्रिक, शांतिप्रिय व सैन्य बल के बजाए वार्ताओं के जरिए विवादों के समाधान के सिद्धांत को समर्पित राष्ट्र की छवि प्रस्तुत करने के लिए यह मुद्दा संयुक्त राष्ट्र में ले गई और संयुक्त में दोनों देशों के बीच युद्ध विराम करवाया।

शेख अब्दुल्ला ने यूएनोकी सुरक्षा परिषद में 5 फरवरी 1948 को भारत का पक्ष रखते हुए कहा था कि कबाइली हमलावरों में हजारों लोगों का नरसंहार किया, उनकी संपत्तियां लूटी।हिंदू और सिख थे, मुसलमान भी थे, हजारों लड़कियों का अपहरण किया। मरे गए लोगों में अधिकांश हिन्दू व सिख थे। मुसलमान भी थे। सैन्य, पुलिस प्रशासन विफल हो चुका था। ऐसी परिस्थिति में नेशनल कॉन्फ्रेंस के हजारों कार्यकर्ताओं में प्रशासन संभाला। लेकिन कालांतर में शेख अब्दुल्ला और भारत सरकार में मतभेद उभरे। भारत सरकार की सूचनाओं के अनुसार शेख विद्रोहियों अर्थात पाक समर्थित तत्वों से संपर्क बढ़ाने लगे। भारत सरकार ने विद्रोहियों समर्थन देने के आरोप लगा कर उन्हें जेल में डाल दिया। उस समय विश्व अमरीका और रूस के नेतृत्व में दो अलग-अलग खेमों में बंटा था। 1954 में, अमरीका ने दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों की सुरक्षा के लिए एक सैन्य संगठन बनाया जिसका नाम था सीटो। पाकिस्तान को इसमें शामिल किया और अमरीका ने उसे भरपूर सैन्य व आर्थिक मदद दी।

इतिहास गवाह है कि लोकतंत्र के झंडाबरदार बने शक्तिसंपन्न पश्चिमी देशों को अन्य देशों में तानाशाह व सैन्य शासकों के साथ गलबहियां करने से कभी कोई परहेज नहीं रही बशर्ते वे उनके इशारों के अनुसार चलते रहे। भारत के प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू में और मिश्र, इंडोनेशिया आदि कई देशों के साथ, इन दिनों सैन्य गुटों से अलग रहना उचित समझा (नॉन अलाइनइड नेशंस)। इस आंदोलन के जरिए नवस्वतंत्र भारत में दुनिया में अपनी अलग प्रजातांत्रिक, विकासोन्मुख, प्रजाहितैषी देश वाली पहचान बनाई। जहां बहुत से नवस्वतंत्र देश राजनीतिक अस्थिरता के शिकार हो रहे थे भारत में लोकतंत्र जड़ें पकड़ रहा था। जरा, पाकिस्तान में इसी अवधि में क्या हो रहा था, इस पर विचार करें। 1947 से 1958 के बीच अल्पावधियों के लिए एक के बाद एक 7 प्रधान मंत्री हुए अर्थात पाकिस्तान में लोकतंत्र अस्थिर हो रहा था और अंततोगत्वा 1958 में वहां की सेना ने शासन पर कब्जा कर लिया। इसके बाद से पाकिस्तान में या तो सैन्य शासन रहा अथवा सामान्यत सेना के पूर्ण नियंत्रण वाली कमजोर, नुमाइशी चुनी हुई सरकारें रही। 1958-71, 1977-88, 1999-2008 तक तो सीधे-सीधे सैन्य तानाशाहों का शासन रहा। इन्हीं अवधियों में 1965, 1971, 1998 में पाकिस्तान में भारत पर सैन्य आक्रमण किए। पाकिस्तान के साथ 1965 का युद्ध का तो कारण कश्मीर में आंतरिक असंतोष भड़काना और विद्रोहियों को हर तरह से सहायता देना ही था। इसका कोड नाम आपरेशान जिब्राल्टर रखा गया था।

यहां यह बात भी ध्यान में रखने योग्य है कि 1965 आते-आते, इस समस्या के बाबत संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद जन्मतसंग्रह वाला प्रस्ताव भी महत्वहीन हो गया था। पाकिस्तान पीओके से हटा नहीं, जो जन्मतसंग्रह कराने की प्रमुख पूर्व शर्त थी। इस युद्ध में पाकिस्तान को करारी हार का सामना करना पड़ा।

1965 के युद्ध के बाद रूस की पहल पर युद्ध विराम हुआ और फिर 10 जनवरी 1966 को ताशकंद समझौता हुआ जिसकी आजकल खूब चर्चा होती है। भारत की दृष्टि से ताशकंत समझौते की प्रमुख बात यह थी कि---भारत और पाकिस्तान संयुक्त राष्ट्र नियमों का पालन करते हुए, अपने विवादों को शांतिपूर्ण तरीके से सुलझाएंगे। बल प्रयोग नहीं किया जाएगा। दोनों देशों की सेनाएं 5 अगस्त 1965 की स्थिति पर चली जाएंगी--। जन्मतसंग्रह पर यह पूर्ण विराम था।

1971 का भारत पाकिस्तान युद्ध पूर्णत: पाकिस्तानी सेना द्वारा चुनाव परिणामों को नकारने और बांग्लादेशियों पर अत्याचारों के कारण भारत में लाखों शरणार्थियों के आने और विश्व समुदाय के शक्तिशाली राष्ट्रों द्वारा इन अत्याचारों की अनदेखी का परिणाम था। इन सब अत्याचारों के बावजूद अमरीका, हर प्रकार से, पाकिस्तानी सैन्य शासन समर्थक बना रहा। इस युद्धों की परिणीति 1971 के शिमला समझौते से हुई। इस में दोनों देश पुन: संकल्पबद्ध हुए की---दोनों देश विभिन्न मुद्दों पर अपने मतभेदों को शंतिपूर्ण तरीके से सुलझाएंगे व उपमहाद्वीप में स्थाई शांति व सहयोग के लिए काम करेंगे। लोक कल्याण पर अपनी ऊर्जा लगाएंगे। कश्मीर के संदर्भ में, 17 सितंबर 1971 की युद्ध विराम रेखा को दोनों देशों में नियंत्रण रेखा के रूप में मान्यता दी और इसे अपरिवर्तनीय/बाध्यकारी माना।दोनों देश अपने मतभेदों को द्विपक्षीय वार्ताओं के माध्यम से शांतिपूर्ण तरीके से सुलझाएंगे--।

वर्तमान ऑपरेशन सिंदूर के संदर्भ में चल रही डिबेट्स में ताशकंत और शिमला समझौतो पर कई प्रकार की सही गलत बातें राजनीतिक दलों के लोग करते रहते है। इस प्रकार की बातें अधिकांशत: तत्समय के तथ्यों व देश तथा वैश्विक परिस्थितियों को बिना ध्यान में रखे, केवल जनता का भ्रमित करने और अपने-अपने समर्थकों को बनाए रखने के लिए की जाती है।

–महावीर सिंह, पूर्व आईएस

राशिफल शुक्रवार 13 जून, 2025

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, द्वितीया तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2082, पूर्वाषाढ़ा नक्षत्र रात्रि 11:21 तक, शुक्ल योग दिन 1:48 तक, गर करण दिन 3:19 तक, चन्द्रमा आज धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-धनु, मंगल-सिंह, बुध-मिथुन, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज राजयोग सूर्योदय से रात्रि 11:21 तक है। भद्रा रात्रि 3:33 से आरम्भ होगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 7:19 तक, लाभ अमृत 7:19 से 10:44 तक, शुभ 12:27 से 2:09 तक, चर 5:34 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:30 से 12:00 तक। सूर्योदय 5:31, सूर्यास्त 7:17

मेष

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य से संबंधित यात्रा संभव है। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

वृष

अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

मिथुन

परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। आज परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कर्क

व्यक्तिगत परेशानियां दूर होने लगेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह

व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

कन्या

घर-परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

तुला

व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

धनु

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब होगा।

कुंभ

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

मीन

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

संक्षिप्त

चोरी का खुलासा

सूरौठ। पुलिस अधीक्षक बृजेश ज्योति उपाध्याय, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सत्येन्द्र पाल सिंह के निर्देशन में एवं पुलिस उपाधीक्षक गिरधर सिंह चौहान के सुपरविजन में सूरौठ थाना अधिकारी महेश कुमार मय टीम द्वारा कार्रवाई करते हुए दो माह पूर्व थाना क्षेत्र के गांव खानाका में हुई चोरी में दो मुल्जिमान के कब्जे से एक मोबाइल, 100 ग्राम सोने व 300 ग्राम चांदी के आभूषण बरामद किए। चोरी के प्रकरण का खुलासा करने में सबसे अहम भूमिका विजेंद्र कुमार कांस्टेबल की रही जो मूलतः झुंझुनू जिले के ही निवासी है। मुल्जिमों के डेरों पर भेष बदलकर एवं वहीं क्षेत्रीय भाषा का ज्ञान होने से मुल्जिमों को बातों में फंसा कर घटना का खुलासा किया है। कांस्टेबल विजेंद्र का कहना है कि किसी गरीब व्यक्ति के घर पर से चोरी गया हुआ सोने चांदी के आभूषण जब हमने बरामद किए तो पीड़ित का चेहरा खुशी से खिल उठा और उस खुशी को देखकर करीब 10 दिन से लगातार कार्य करने की थकान गायब हो गई।

5 लाख रुपये का चैक दिया

करौली। करौली महाराजा कृष्ण चन्द्रपाल सोल ट्रस्टी श्री कैलादेवी मंदिर ट्रस्ट द्वारा श्री यादव वाटी गौशाला करौली को पाँच लाख रूपये का चैक दिया है। यादव वाटी गौशाला करौली के मंत्री गोविंद सिंह सेंगर ने बताया कि गौशाला कि गायों के चारे पानी की व्यवस्था हेतु महाराजा कृष्ण चन्द्रपाल सोल ट्रस्टी श्री कैलादेवीजी मंदिर ट्रस्ट द्वारा श्री कैलादेवी मंदिर ट्रस्ट से 5 लाख रुपये का चैक अनुदान स्वरूप प्रदान किया है। श्री यादव वाटी गौशाला करौली की समस्त कार्यकारिणी ने सोल ट्रस्टी कृष्णचन्द्रपालएवं समस्त मंदिर ट्रस्ट प्रबन्धन का हार्दिक आभार व्यक्त किया इस अवसर पर गौशाला के अध्यक्ष शिवनाथ सिंह, कार्यकारी अध्यक्ष मुन्ना सिंह, उपाध्यक्ष सीताराम शर्मा एडवोकेट,द्वारिका प्रसाद गुप्ता, मंत्री गोविन्द सिंह सेंगर, एवं सदस्य ऊधोसिंह एडवोकेट,लक्ष्मीनारायण शास्त्री,पुरुषोत्तम शर्मा, गिरिराज प्रसाद गुप्ता,प्रेम सिंह जादौन आदि उपस्थित रहे।

शिकार जमाकर्ताओं का प्रदर्शन

करौली (निसं.) करौली में चिट फंड कंपनी से ठगी के शिकार जमाकर्ता परिवारों और जपत्तप संघ ने गुरुवार को जिला कलेक्ट्रेट के बाहर प्रदर्शन किया। प्रदर्शनकारियों ने अतिरिक्त जिला कलेक्टर को राष्ट्रपति और मुख्य न्यायाधीश के नाम ज्ञापन सौंपा। संगठन के प्रदेश संयोजक ब्रजमोहन योगी के निर्देशन में जिला अध्यक्ष छोटेलाल प्रजापत और जिला संयोजक भरतलाल सैनी ने आंदोलन का नेतृत्व करते हुए कहा कि अनियमित जमा योजनाएं कानून 2019 बड्स एक्ट के तहत पीड़ितों को भुगतान दिलवाने की मांग की जा रही है। प्रदर्शनकारियों का कहना है कि केंद्र और राज्य सरकार को लाखों ज्ञापन भेजे जा चुके हैं। फिर भी सरकारें इस विषय को नजरअंदाज कर रही हैं। संगठन के पदाधिकारियों ने आरोप लगाया कि सरकार ने बड्स एक्ट 2019 के तहत नियुक्त अधिकारियों के अधिकारों की अनदेखी की है। ईडी, सीबीआई, सेबी, परिसमापक और एनसीएलटी जैसी एजेंसियों ने कंपनियों से राशि जब्त कर ली है। लेकिन निवेशकों को अब तक भुगतान नहीं किया गया है। प्रदर्शनकारियों ने चेतावनी दी कि मांगें पूरी नहीं होने पर जिला मुख्यालय पर बड़े स्तर पर विरोध किया जाएगा। प्रदर्शन में रमेश चंद्र, विनोद प्रजापत, रामजीलाल, गोपाललाल, प्रभुलाल, कमरसिंह और शिवचरण सहित कई पीड़ित परिवारों के सदस्य शामिल थे।

बालश्रम निषेध दिवस आयोजित

करौली (निसं.) विश्व बालश्रम निषेध दिवस के अवसर पर जिला पुलिस अधीक्षक बृजेश ज्योति उपाध्याय ने कार्यालय में बालश्रम की रोकथाम को लेकर पोस्टर विमोचन किया। इस दौरान पुलिस अधीक्षक ने जिलेवासियों को बालश्रम की रोकथाम के लिए जिला प्रशासन का सहयोग करने की बात कही। पुलिस अधीक्षक कार्यालय में पोस्टर विमोचन के दौरान एक्शनएड के रिजनल मैनेजर सिओन किंगोरी, जिला युवा अधिकारी शरद त्रिपाठी, एक्शनएड यूनिसेफ जिला समन्वयक दिनेश कुमार बैरवा, चाइल्ड हेल्पलाइन प्रभारी भीकम सिंह, सहयोग सेवा संस्थान अध्यक्ष घनश्याम लोधा, सचिव हेमराज माली, स्वयंसेवक गरीमा कुमारी मौजूद रहें। इस दौरान जिला प्रशासन एवं एक्शनएड यूनिसेफ करौली की ओर से आज से 11 जुलाई तक बालश्रम मुक्त करौली अभियान के सफल संचालन के साथ सफल क्रियान्वयन हेतु आमजन को जागरूक करें।

संत कवि कबीर की जयंती मनाई

भरतपुर (निस)। श्री रामलीला समिति भरतपुर के तत्वाधान में दाल बाजार स्थित लक्ष्मण मंदिर व संतोषी मंदिर में भक्तिकाल के महान संत कवि कबीर की जयंती भागीरथ सिंह विभाग संघ संचालक की अध्यक्षता में मनाई गई।

अध्यक्ष भागीरथ सिंह द्वारा अपने उद्बोधन में संत कवि कबीर के समय व्याप्त सनातन धर्म की विषम परिस्थितियों को सुलझाने में विशेष योगदान का सराहा गया। उन्होंने कहा कि कबीर ने सभी समाजों में व्याप्त कुरीतियों एवं पाखंडों का खंडन कर समाज को प्रेम से रहने की सीख दी तथा वर्तमान के संतों से प्रार्थना की कि वे भी इसी तरह का वातावरण पैदा कर सनातन धर्म के संवर्धन की ओर ध्यान दें। इस अवसर पर गोरधन निवासी बृजेश गोस्वामी द्वारा सुमधुर आवाज में भजन की प्रस्तुति दी तथा उपस्थित विद्वान, साहित्यकार एवं कवि डॉ. सुरेश चंद शर्मा (सुमनेश), राकेश राजस्थानी, श्याम सिंह जघीना मधुर, सुरेश चंद शर्मा, चंचल तेनगुरिया, हरीओम हरि, पूरन शर्मा, डॉ. रामदास, सी.एस. कृष्णा, हरिओम दिवाकर, महेश सिंघल, ओमप्रकाश गुप्ता आदि ने अपनी रचनाओं एवं कबीर के दोहे व साखियों के माध्यम से संत कबीर के द्वारा सभ्य समाज हेतु प्रदत्त मार्गदर्शन पर सार्थक विचार व्यक्त किये।

संकल्प से सिद्धी तक कार्यक्रम में भाजपा ने किसान संवाद किया

भरतपुर (निस)। मोदी सरकार के सफलतम गौरवमयी 11 साल पूर्ण होने पर केंद्र सरकार की उपलब्धियों को जनता तक पहुंचाने के लिए भारतीय जनता पार्टी द्वारा 'संकल्प से सिद्धी' तक कार्यक्रम के अंतर्गत आदर्श ग्राम पंचायत रारह में एक किसान संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री भागीरथ चौधरी रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजपा जिला अध्यक्ष शिवानी दायमा ने की। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि पूर्व प्रदेश मंत्री एवं 'वंदे गंगा जल संरक्षण अभियान' के जिला समन्वयक भानुप्रताप राजावत रहे। कार्यक्रम का नेतृत्व जिला उपाध्यक्ष मोहन रारह ने किया। किसान संवाद कार्यक्रम में किसानों से संवाद करते हुए केंद्रीय मंत्री भागीरथ चौधरी ने मोदी सरकार की किसान कल्याणकारी नीतियों के बारे में जानकारी दी। जिला अध्यक्ष शिवानी दायमा ने अपने उद्बोधन में कहा कि मोदी सरकार ने किसान सम्मान निधि की वृद्धि कर किसानों को जो तोहफा दिया है उससे सभी किसान भाईयों में हर्षोल्लास का माहौल है। तत्पश्चात् रारह पंचायत सभागार में स्थित लाईब्रेरी में प्रबुद्ध जनों के साथ विचार-विमर्श किया। इस

कार्यक्रम में प्रबुद्ध जनों के साथ मोदी सरकार की 11 साल की उपलब्धियों पर चर्चा की। राज्य सरकार के 'प्रकृति संरक्षण अभियान' के अंतर्गत 'वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान' के तहत रानीकुण्ड रारह पर साफ-सफाई की तथा जल पूजन कर समस्त किसान भाईयों को जल संरक्षण करने का आवहान् किया और बताया कि जल देवता है, जल ही जीवन है, जल है तो कल है। जल का सुनियोजित तरीके से संग्रहण, संरक्षण एवं संवर्द्धन किया जाना चाहिए। 'वंदे-गंगा जल संरक्षण अभियान' के जिला समन्वयक भानुप्रताप राजावत ने अपने वक्तव्य में कहा कि सभी सम्मानीय किसानों को अधिक से अधिक जल संचय करना चाहिए ताकि आने वाली पीढ़ी को किसी भी प्राकृतिक समस्या का सामना नहीं करना पड़े। ग्राम पंचायत रारह के मिनी सचिवालय में 'एक पेड़ मां के नाम अभियान' के तहत केंद्रीय मंत्री भागीरथ चौधरी ने एक पौधा लगाकर इस अभियान को गति प्रदान की तथा सभी किसान भाईयों से अधिक से अधिक पेड़ लगाकर प्रकृति का संरक्षण करने का आवहान किया। कार्यक्रम में इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष वीरेन्द्र बुद्धवार, जिला महामंत्री ब्रजेश अठावाल, जिला प्रवक्ता एवं मीडिया प्रभारी डॉ0 वीरेन्द्र पचौरी, जिला सोशल मीडिया संयोजक आशीष खण्डेलवाल, किसान मोर्चा जिला अध्यक्ष गौरव लुधावई, जघीना मण्डल अध्यक्ष जीतेन्द्र फौजदार, प्रदेश कार्य समिति सदस्य युवा मोर्चा जगत गुर्जर, भारतीय सरसों अनुसंधान संस्थान सेवा के निदेषक डॉ0 वी.वी. सिंह, अतिरिक्त कृषि निदेषक देशराज सिंह, संयुक्त निदेषक योगेष शर्मा, डॉ. नवाब सिंह, महिपाल सिंह, सुरेष गुप्ता, जनकराज मीणा, डॉ. अषोक शर्मा, विनय मित्र, अनुराग तमरौली, राहुल चौधरी, राम कुमार चरौरी, आकाष हथैनी, मनोज किरार आदि प्रमुख लोग उपस्थित थे। अहमदाबाद विमान दुर्घटना की दुखद घटना के बाद भारतीय जनता पार्टी ने आज के सभी आगामी कार्यक्रम निरस्त कर दिए हैं तथा गहरी शोक संवेदना व्यक्त की है।

कृषक संवाद कार्यक्रम आयोजित

भरतपुर (निस)। विकसित कृषि संकल्प अभियान के अंतिम दिन गुरूवार को वैर तहसील के गाँव चक धरसोनी, सुहांस व बझेराकलां में कृषक संवाद कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अभियान के नोडल अधिकारी व कृषि विज्ञान केन्द्र कुम्हेर के वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. नवाब सिंह ने उपस्थित किसानों को मृदा जांच रिपोर्ट के अनुसार खाद एवं उर्वरक प्रयोग करने की सलाह दी। उन्होंने खरीफ फसलों की बुवाई सीड ड्रिल से कूंडो में करने तथा बुवाई के समय खाद एवं उर्वरक देने तथा खाली खेतों में हरी खाद हेतु ढैंचा बोने की सलाह भी दी। कृषि महाविद्यालय भुसावर के डीन डॉ. उदय भान सिंह ने कद्दूवर्गीय बगीचे फसलों की बेमौसम खेती, पॉली हाउस, लोटनल बूंद-बूंद सिंचाई पद्धति व प्रिसीजन फार्मिंग की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि किसान फल व सब्जियों की वैज्ञानिक खेती अपना कर अपनी आमदनी बढा सकते हैं। डॉ. अरूण कुमार प्रधान वैज्ञानिक भारतीय सरसों अनुसंधान संस्थान, भरतपुर ने सरसों की उत्पादन तकनीक, तेल की मात्रा बढाने, उन्नत किस्में तथा उसके कीट एवं रोग नियंत्रण विषय पर व्याख्यान दिया।

सार-समाचार

कार्यालयों का निरीक्षण

करौली (निसं.) जिला कलेक्टर नीलाभ सक्सेना ने गुरवार को मण्डरायल के पंचायत समिति कार्यालय, तहसील कार्यालय व उपजिला चिकित्सालय का औचक निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जमीनी स्तर पर जायजा लिया। निरीक्षण के दौरान जिला कलेक्टर ने इस दौरान ओपीडी के समय मरीजों को उपलब्ध करवाए जा रहे इलाज, दवाइयां की उपलब्धता, जांच उपकरण की क्रियाशीलता आदि की वर्तमान स्थिति का जायजा लिया। इसके अलावा वार्ड में भर्ती मरीजों से भी बात की एवं उपलब्ध करवाए जा रहे है इलाज की जानकारी ली। उन्होंने नि:शुल्क दवा एवं जांच योजना के तहत मरीजों को मिलने वाली सुविधाओं की जानकारी लेकर आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने निर्देशित किया कि इलाज में किसी भी तरह की लापरवाही और मरीजों को दवा अथवा जांच में परेशानी बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने गर्मी के मौसम को देखते हुए जिला चिकित्सालय में पेयजल, नियमित रूप से साफ सफाई करवाने एवं चिकित्सा अधिकारियों को सतर्क एवं सक्रिय रहकर कार्य करने के निर्देश दिए। इसके पश्चात उन्होंने पंचायत समिति कार्यालय मण्डरायल का निरीक्षण कर वंदे गंगा जल संरक्षण अभियान के तहत संचालित की जा रही गतिविधियों की समीक्षा की एवं अभियान को सफल बनाने के लिए आवश्यक दिशा निर्देश प्रदान किये। साथ ही गतिविधियों की फोटो एवं वीडियो संबंधित पोर्टल पर नियमित रूप से अपलोड करवाने के निर्देश दिये। इसके अलावा साफ-सफाई रखने एवं सभी ग्राम पंचायतों में अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने के निर्देश दिये। तत्पश्चात जिला कलेक्टर ने मण्डरायल में तहसील कार्यालय का निरीक्षण किया और पौधारोपण कर एवं वंदे गंगा जल संरक्षण अभियान के तहत जल स्त्रोतन, संरक्षण एवं पर्यावरण संरक्षण सहित स्वच्छता का संदेश दिया। इस दौरान उन्होंने राजस्व रिकार्ड संधारित करवाने, तहसील परिसर में सफाई करवाने, बरसात के मौसम के दौरान वर्षा के पानी का संरक्षण करने, तहसील परिसर सहित अन्य विभागों की छतों की सफाई करने के निर्देश दिये। इस अवसर पर ब्लॉक स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

चोरी का खुलासा

सूरौठ। पुलिस अधीक्षक बृजेश ज्योति उपाध्याय, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक सत्येन्द्र पाल सिंह के निर्देशन में एवं पुलिस उपाधीक्षक गिरधर सिंह चौहान के सुपरविजन में सूरौठ थाना अधिकारी महेश कुमार मय टीम द्वारा कार्रवाई करते हुए दो माह पूर्व थाना क्षेत्र के गांव खानाका में हुई चोरी में दो मुल्जिमान के कब्जे से एक मोबाइल, 100 ग्राम सोने व 300 ग्राम चांदी के आभूषण बरामद किए। चोरी के प्रकरण का खुलासा करने में सबसे अहम भूमिका विजेंद्र कुमार कांस्टेबल की रही जो मूलतः झुंझुनू जिले के ही निवासी है। मुल्जिमों के डेरों पर भेष बदलकर एवं वहीं क्षेत्रीय भाषा का ज्ञान होने से मुल्जिमों को बातों में फंसा कर घटना का खुलासा किया है। कांस्टेबल विजेंद्र का कहना है कि किसी गरीब व्यक्ति के घर पर से चोरी गया हुआ सोने चांदी के आभूषण जब हमने बरामद किए तो पीड़ित का चेहरा खुशी से खिल उठा और उस खुशी को देखकर करीब 10 दिन से लगातार कार्य करने की थकान गायब हो गई।

प्रत्येक कार्यक्रम की समय से हो क्रियान्विति : सीएमएचओ

करौला (निसं.) कार्यक्रमों की समय पर क्रियान्वयन को लेकर करौली ब्लॉक के प्रशिक्षण एवं समीक्षात्मक बैठक का आयोजन एनएचम ट्रेनिंग सेंटर में सीएमएचओ डॉ. जयंतीलाल मीणा की अध्यक्षता में हुआ जिसमें उन्होंने कार्यक्रमों की समय पर क्रियान्विति के निर्देश प्रदान किये। प्रशिक्षण में प्रतिभागियों को टीबी मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत टीबी उन्मूलन हेतु चलाए जा रहे 100 दिवसीय विशेष कैम्प के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई। समीक्षात्मक बैठक दौरान गैर संचारी रोग, आदर्श ग्राम पंचायत योजना,गुरु गोवल आकांक्षी ब्लॉक विकास योजना,सामुदायिक आधारित शिशु मृत्यु समीक्षा और अन्य बिंदुओं पर करौली ब्लॉक की विशेष समीक्षा की गई। प्रतिभागियों में बीपीएम, बीएचएस, सीएचसीपीएचसी प्रभारी,सीएचओ,एएनएम,सेक्टर हेल्थ सुपरवाइजर और डाटा एंट्री ऑपरेटर से कार्यक्रम वाईज समीक्षा की। इस दौरान डिप्टी सीएमएचओ डॉ. सतीश चंद मीणा,डीटीओ डॉ.धर्मेंद्र कुमार,बीसीएमओ ओपी महावर,डीपीओ आशुतोष पांडे,एनसीडी सेल से डीएएम कपिल बंसल और डीपीसी मनोज कुमार ने कार्यक्रम अनुसार क्रियान्वयन से अवगत हुए।

आक्षेपपूर्ति की अंतिम तिथि 15 जून

करौला (निसं. जिला परिवीक्षा एवं समाज कल्याण अधिकारी बबलू शर्मा ने बताया कि राजस्थान सरकार बजट वर्ष 2025-26 के अन्तर्गत सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग द्वारा संचालित मुख्यमंत्री दिव्यांगजन स्कूटी योजनान्तर्गत पूर्व में जारी विज्ञिप्त में संशोधन करते हुए स्कूटी आवेदन की अंतिम तिथि 15 मई से बढ़ाकर 30 मई निर्धारित की गई थी। उन्होंने बताया कि आवेदन पत्रों में आक्षेपपूर्ति आवेदन की अंतिम तिथि के 15 दिवस के अन्दर-अन्दर करनी होगी। अत: समस्त पात्र लाभार्थियों को सूचित किया जाता है कि 15 जून तक आवेदन पत्रों में आक्षेपपूर्ति करवा लेवे।

मेल शावक को विशेष निगरानी में रखा

करौली। सवाईमाधोपुर रणथंभौर टाइगर रिजर्व से एक महत्वपूर्ण कदम के तहत बाघिन टी-84 एरोहेड के मेल शावक को कैलादेवी बाघ अभयारण्य में स्थानांतरित किया गया है। देर रात को की गई इस शिफ्टिंग में शावक को एक वशेष एंक्लोजर में रखा गया है।

23वें दिन भी आंदोलन जारी रहा

भरतपुर (निस)। दी बार एसोसिएशन समिति भरतपुर के तत्वाधान में तीन न्यायिक अधिकारियों के स्थानांतरण की मांग को लेकर 23वें दिन भी आंदोलन जारी रहा। धरना स्थल पर पूर्व घोषणा के अनुसार सांकेतिक भूख हड़ताल की गई। धरना स्थल पर एडवोकेट रुपेंद्रसिंह, भूपेंद्र सिंह मदेरणा, हरकेश सिंह, गांधीदेव, अशोक सहना, ज्ञानसिंह तथा के. के. दुवे के द्वारा भूख हड़ताल पर बैठकर आंदोलन के क्रांतिकारी रूप का जय उद्घोष किया गया। इनके अलावा धरना स्थल पर एडवोकेट शशि बंसल, प्रभारानी, श्वेता यादव, हेमराज शर्मा ध्वजगिरिष्ठ किशन सिंह, उत्तम पोहिया, भूपेंद्र सिंह नीरपाल, सुरेश गुप्ता, रमेशचंद शर्मा, यदुवीरसिंह डागुर तथा बल्देव जोनवाल आदि अधिवक्ताओं ने धरना देकर संघर्ष के प्रति एकजुटता पेश की।

संघर्ष समिति के अध्यक्ष गांधीदेव द्वारा बताया गया कि संघर्ष समिति उपरोक्त न्यायिक अधिकारियों की कार्य प्रणाली का पुरजोर विरोध करती है

बाल श्रम निषेध दिवस पर कार्यशाला का आयोजन

भरतपुर (निस)। राजस्थान राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के मासिक एक्शन प्लान के अनुसार गुरूवार को जिला विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा आशा यूनिट-बाल विवाह मुक्त गांव अभियान एवं बालश्रम निषेध दिवस पर क्षमतावर्धन हेतु एक दिवसीय जिला कार्यक्रम एडीआर भवन, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जिला न्यायालय परिसर भरतपुर में प्रयत्न संस्था एवं दिशा फाउण्डेशन के सहयोग से कराया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत जिला एवं सेशन न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण भरतपुर, श्रेयस कौशिक के द्वारा दीप प्रज्ज्वलित करके की गई। उन्होंने बताया कि बाल विवाह एक कानूनी अपराध है तथा बाल विवाह के दुष्परिणामों के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई। सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण भरतपुर, अनुतोष गुप्ता द्वारा आशा-जागरूकता समर्थन, सहायता और कार्यवाही योजना 2025 के अंतर्गत बाल विवाह निषेध अधिनियम के प्रभावी क्रियान्वयन, बाल विवाह के हितधारकों को संवेदनशील, बाल विवाह के रोकने के लिए एक संस्था का ढांचा बनाने तथा बाल विवाह पीड़ितों के पुनर्वास के लिए राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा जारी मानक संचालन प्रक्रिया के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की गई।

सहायक निदेशक बाल संरक्षण ईकाई अमित अवस्थी द्वारा केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में जानकारी प्रदान की गई। सेमिनार में श्रम विभाग की लेबर इंस्पेक्टर स्वाति सिंह द्वारा बाल श्रम में लिप्त बालकों के लिए कानूनी प्रावधानों तथा उनके पुनर्वास हेतु योजनाओं के बारे में जानकारी प्रदान की गई। निदेशक दिशा फाउण्डेशन दिनेश कुमार सिंह द्वारा बाल श्रम एवं बाल विवाह की रोकथाम के लिए चलाई जा रही मुहिम में सभी विभागों को आपसी समन्वय के साथ कार्य करने पर जोर दिया। प्रयत्न संस्थान की प्रोग्राम मैनेजर एवं जस्ट राईट्स फॉर चिल्ड्रन मुहिम की प्रभारी शालो हैम्प्रेम द्वारा बाल विवाह मुक्त भारत अभियान के तहत जिले में संचालित विभिन्न गतिविधियों एवं उपलब्धियों के बारे में पीपीटी के माध्यम से जानकारी प्रदान की गई।

सेमीनार में आज महिला एवं बाल विकास अधिकारिता विभाग, बाल संरक्षण ईकाई, मानव तस्करी विरोधी यूनिट, पुलिस बाल कल्याण अधिकारी, आशा ईकाई के पैनल अधिवक्ता एवं पैरा लीगल वॉलिंटियर्स द्वारा भाग लिया गया और सेमिनार में प्रयत्न संस्थान की कलस्टर कोर्डिनेटर टीना चौधरी, लीगल ऑफिसर नीतू शर्मा, सामाजिक कार्यकर्ता, दिशा फाउण्डेशन मधु शर्मा उपस्थित रहे।

कंस्लटेशन कार्यशाला आयोजित

करौली । विश्व बालश्रम निषेध दिवस पर पंचायत समिति सभागार करौली में जिला स्तरीय विशिष्ट कार्य योजना पर हितधारकों के साथ जिला कंस्टेशन कार्यशाला का आयोजन जिला प्रशासन, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, बाल अधिकारिता विभाग एवं एक्शनएड यूनिसेफ करौली के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। विश्व बालश्रम निषेध दिवस की थीम प्रगति स्पष्ट है लेकिन अभी और काम करना बाकी है आइये गति बढ़ाएं पर चर्चा कर बालश्रम मुक्त करौली अभियान की रणनीति तैयार की गई। जिला समन्वयक दिनेश कुमार बैरवा ने कार्यक्रम की शुरुआत करते हुए जिले में बालश्रम की स्थिति पर प्रकाश डालते हुए जिला स्तरीय कार्य योजना पर विस्तृत चर्चा की साथ ही आज से 11 जुलाई तक बालश्रम मुक्त करौली अभियान के संबंध में चर्चा कर अभियान की रणनीति पर चर्चा की गई। कार्यशाला में जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान डाइट के प्राचार्य पुष्पेंद्र शर्मा ने बालश्रम रोकने के संबंध में विभाग द्वारा किए जा रहे हैं।

जल संरक्षण जन अभियान को सफल बनाने में निभाएं सहभागिता : कलक्टर

> जिला कलक्टर ने विद्युत विभाग के अधिकारी को निर्देशित किया कि भीषण गर्मी को देखते हुये विद्युत आपूर्ति बाधित न हो, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग अधिकारी को पेयजल आपूर्ति की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने ने आगामी बरसात के मौसम को देखते हुए ग्रामीण क्षेत्र में जर्जर सड़कों की शीघ्र मरम्मत कराए

भरतपुर (निस)। त्रिस्तरीय जनसुनवाई कार्यक्रम के तहत माह के द्वितीय गुरूवार को जिला कलक्टर डॉ अमित यादव की अध्यक्षता में नदबई पंचायत समिति कार्यालय में उपखण्ड स्तरीय जनसुनवाई का आयोजित की गई। जिला कलक्टर ने आमजन की समस्याएं सुनकर मौके पर ही प्रकरणों का निस्तारण कर राहत प्रदान की। अन्य प्रकरणों के सम्बन्ध में संबंधित विभागीय अधिकारियों को प्रकरणों का तुरंत समाधान कर राहत देने के निर्देश दिए। जिला कलक्टर ने ग्रामीणों को राज्य सरकार के वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान को सफल बनाने में अपनी सहभागिता निभाने की बात कही।

जिला कलक्टर ने विद्युत विभाग के अधिकारी को निर्देशित किया कि भीषण गर्मी को देखते हुये विद्युत आपूर्ति बाधित न हो, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग अधिकारी को पेयजल आपूर्ति की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने ने आगामी बरसात के मौसम को देखते हुए ग्रामीण क्षेत्र में जर्जर सड़कों की शीघ्र मरम्मत करवाने के निर्देश दिए। उन्होंने राज्य सरकार के रास्ता खोलो अभियान के तहत गांवों में हो रहे रास्तों पर अवैध अतिक्रमण को चिह्नित कर हटाने निर्देश दिए। जन सुनवाई के दौरान जिला कलक्टर ने निर्देश दिए कि आमजन की जायज समस्या का त्वरित समाधान करें। समस्याओं के निस्तारण में किसी तरह की ढिलाई नहीं बरती जाए। जनसुनवाई दौरान उन्होंने ग्राम विकास अधिकारियों को ग्राम पंचायतवार सर्वे कर यथासंभव सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं में पात्रजनों को लाभान्वित करने के दिशा-निर्देश दिए। इससे पहले जिला कलक्टर ने नदबई आरओबी व कुंड-पोखर निर्माण कार्य का आकस्मिक निरीक्षण करते हुए विभागीय अधिकारियों विकास कार्यों को समय पर गुणवत्तापूर्ण पूरा कराने के निर्देश दिये। इस दौरान उपखण्ड अधिकारी गंगाधर मीणा, तहसीलदार जगवीर सिंह बेनीवाल, विकास अधिकारी सौदान सिंह, अधिशाषी अधिकारी पवन गुप्ता सहित अन्य ब्लॉकस्तरीय अधिकारी मौजूद रहे।

कलक्टर ने सुनी आमजन की परिवेदनाएं

करौली (निसं.) राज्य सरकार के निर्देशानुसार नवीन त्रिस्तरीय जनसुनवाई व्यवस्था की अनुपालना में आमजन की परिवेदनाओं की सुनवाई एवं उनके त्वरित निस्तारण के लिए ब्लॉक स्तरीय जनसुनवाई आयोजित की गई। मण्डरायल के उपखंड कार्यालय पर जिला कलक्टर नीलाभ सक्सेना ने निर्देशन में ब्लॉक स्तरीय जनसुनवाई आयोजित की गई।

जनसुनवाई में जिला कलक्टर ने संवेदनशीलता के साथ परिवादियों की समस्याएं सुनी और उनके शीघ्र निस्तारण के लिए संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिये। साथ ही विभिन्न प्रकरणों में त्वरित कार्यवाही करते हुए परिवादियों को राहत भी दिलाई। जिला कलेक्टर ने जनसुनवाई के दौरान कहा कि राजस्थान संपर्क पोर्टल पर 90 से 180 दिन के प्रकरण, मुख्यमंत्री कार्यालय से प्राप्त प्रकरण, संभाग कार्यालय, मानवाधिकार आयोग से प्राप्त प्रकरणों का अधिकारी 07 दिन में निस्तारण करना सुनिश्चित करें जिससे कि राज्य सरकार की मंशा के अनुसार आमजन को राहत मिले। उन्होंने लंबित चल रहे दर्ज प्रकरणों का प्राथमिकता से निस्तारण करते हुए समय पर रिपोर्ट भिजवाना सुनिश्चित करें जिससे परिवादी की समस्या का समाधान हो सके। उन्होंने समस्त जिला स्तरीय अधिकारी एवं उपखंड अधिकारियों को हिदायत दी कि वे आमजन से प्राप्त शिकायतों के निस्तारण में अविलम्ब और प्राथमिकता के साथ कार्यवाही करें तथा उनके निस्तारण के संबंध में की गयी कार्यवाही की सूचना को शीघ्रता से भिजवाने की व्यवस्था सुनिश्चित करें। जिला कलक्टर ने प्रभारी अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि वे आमजन की परिवेदनाओं को संवेदनशीलता के साथ नियमित रूप से सुने और मानवीय दृष्टिकोण अपनाते हुए उनका त्वरित निस्तारण कर परिवादियों को राहत दिलाएँ। अधिकारीगण यह भी सुनिश्चित करें कि इस जनसुनवाई में प्राप्त प्रकरणों की आगामी जनसुनवाई में पुनरावृत्ति न हो। जनसुनवाई के दौरान कुल 22 परिवाद प्राप्त हुए जिनमें अतिक्रमण हटवाने, बिजली की समस्या का निपटारा करने, पेयजल व्यवस्था करवाने।

प्रकाश गुरपुरब मनाया गया

कोटा, (निसं)। सिखों के छठे सतगुरु श्री गुरु हरगोबिंद साहिबजी का प्रकाश गुरपुरब बाबा तारा सिंह गुरमत विद्यालय गुरुद्वारा अगमगढ़ साहिब बड़गांव कोटा में मनाया गया। कार्यक्रम में हजूरी रागी भाई परविंदर सिंह के रागी जत्थे ने गुरबाणी का कीर्तन करते हुए 'पंच प्याले पंच पीर छठम पीर बैठा गुर भारी', 'सतगुर साचौ दीया भेज' आदि शब्दों का गायन किया। सिख धर्माचार्य ज्ञानी गुरनाम सिंह अंबालवी ने कथा का वाचन करते हुए कहा।

आम सूचना

मैं कि सुमनेश कुमार गुप्ता पुत्र स्वर्गीय श्री किशोरी श्याम गुप्ता उम्र करीब 58 साल निवासी सी 117 जवाहर नगर भरतपुर का हूं।

मैं शपथ पूर्वक बयान करता हूं कि मेरी पुत्रवधू श्रीमती सोनल खंडेलवाल पत्नी सनत गुप्ता मुझे व मेरी पत्नी कृष्णा गुप्ता पुत्र सनत गुप्ता व छोटे पुत्र और पुत्रवधू से हमेशा लड़ाई झगड़ा करती रहती है तथा पुत्रवधू सोनल खंडेलवाल के आचार विचार सही नहीं है तथा मुझे , अपने पति सनत गुप्ता व मेरे परिजनों को शारीरिक हानि पहुंचाने तथा झूठ केसों में फसाने की धमकी देती है, सनत गुप्ता अपनी पत्नी के द्वारा हमारे प्रति किए गए दुर्व्यवहार का कोई विरोध नहीं करता है तथा सोनल खंडेलवाल 1 वर्ष से हमारा घर अपने पुत्र सयंत गुप्ता सहित छोड़कर अपने माता-पिता के घर में रह रही है अभी भी सोनल खंडेलवाल व उसकी माता रतन प्रभा खंडेलवाल, पिता राजकुमार खंडेलवाल मुझे व मेरी पत्नी व मेरे परिवार को परेशान करते हैं तथा मानसिक रूप से प्रताड़ित करते हैं तथा शारीरिक रूप से भी नुकसान पहुंचाने की धमकी देते हैं तथा धन की मांग करते हैं गत 8 जून 2025 को भी सोनल खंडेलवाल और रतनप्रभा खंडेलवाल ने हमारे घर में घुसकर गाली गलौज की, धमकी दी तथा मारपीट करने की कोशिश की धन की मांग की। उनके द्वारा किए गए कृत्यों से मैं बुरी तरह आहत हूं इसलिए मैं अपनी समस्त चल अचल संपत्ति से अपने पुत्र सनत गुप्ता व उसकी पत्नी सोनल खंडेलवाल व उनके पुत्र सयंत गुप्ता को बेदखल करता हूं। भविष्य में उनके द्वारा किए गए किसी भी कार्य के लिए मैं तथा मेरे अन्य परिवारीजन जिम्मेदार नहीं होंगे। अब मेरा व मेरे अन्य पारिवारिक जनों का सोनल खंडेलवाल, सनत गुप्ता, सयंत गुप्ता से कोई संबंध व सरोकार नहीं है। यह मैं अपने होशो हवास में बिना किसी दबाव के लिख रहा हूं तथा उसके परिणाम को भली-भांति जानता हूं।

सुमनेश कुमार गुप्ता पुत्र स्व० श्री किशोरी श्याम गुप्ता जाति वैश्य उम्र करीब 58 साल निवासी सी-117, जवाहर नगर, भरतपुर

ग्राम पंचायत काशीपुरा में रात्रि चैपाल आज

करौली (निसं.) जिला कलेक्टर नीलाभ सक्सेना ने बताया कि आज शुक्रवार को सांय 6:30 बजे से करौली पंचायत समिति की ग्राम पंचायत काशीपुरा में रात्रि चैपाल का आयोजन कर जन परिवेदनाएं सुनकर उनका त्वरित निस्तारण किया जाएगा। उन्होंने इस संबंध में संबंधित अधिकारियों को आवश्यक तैयारियों के साथ उपस्थित होने के निर्देश जारी किये है।

कार्यशाला का आयोजन आज

करौली (निसं.) जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्र के महाप्रबंधक गणे'ा शर्मा ने बताया कि वन्दे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के अन्तर्गत जिला स्तरीय सीएसआर कार्य'ााला का आयोजन आज शुक्रवार को प्रात: 11:00 बजे से जिला कलक्टर नीलाभ सक्सेना की अध्यक्षता में किया जायेगा।

ढाई दर्जन प्रतिभाएं सम्मानित

> कार्यक्रम संयोजक प्रमोद बंसल व बृजेश जिंदल ने जानकारी दी

भुसावर भरतपुर (निस)। भारत विकास परिषद की स्थानीय शाखा की ओर से देर सांय कस्बे के दीवली रोड स्थित कलावती वाटिका में इस सत्र के प्रतिभावान विद्यार्थीओ का सम्मान समारोह व परिवार मिलन समारोह आयोजित कर ढाई दर्जन प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम संयोजक प्रमोद बंसल व बृजेश जिंदल ने जानकारी देते हुए बताया कि शाखा की ओर से इस सत्र के प्रतिभावान विद्यार्थियों का सम्मान समारोह एवं परिवार मिलन समारोह का आयोजन प्रांतीय प्रकल्प प्रभारी अंशु मित्तल व शाखा संरक्षक देवकीनंदन सोनी के मार्गदर्शन एवं शाखा अध्यक्ष मनीष मित्तल की अध्यक्षता में किया गया। समारोह का शुभारम्भ मातृशक्ति वीना गोयल, अनिता सिंघल, राजकुमारी, रेनू बंसल, स्मिता व रेखा द्वारा भारत माता व स्वामी विवेकानंद की तस्वीर पर दीप प्रज्जवन व माल्यार्पण एवं वंदेमातरम गान के साथ किया गया। इस अवसर पर वक्ताओं ने अपने अपने विचार व्यक्त करते हुए बताया कि भारत विकास परिषद की शाखाएँ पूरे देश में सम्पर्क, सहयोग, संस्कार, सेवा व समर्पण का भाव लेकर स्वस्थ समर्थ संस्कारित भारत बनाने की दिशा में निरंतर कार्य कर रही हैं। समारोह में शाखा की ओर से सदस्य हेमन्त पाण्डेय के नेतृत्व में कस्बे के माध्यमिक व उच्च माध्यमिक परीक्षा में उत्कृष्ट अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी केशव सैनी, दीपक पाण्डेय, नितिन, जय, भूदेव, छायांक, गगन, हिमांशु, रोशनी, ओमप्रकाश, जतिन, किंजल, प्रांजल, ललतेश, लक्षिता, दिव्यांश, निशांत, तृष्णा, ईशु, नेहा, इशिका, रिषभ देव, मौसम कुमारी, महक, अंजली, आशिका, वेदिका को दुपट्टा पहनाकर व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया तथा भामाशाह विजय नैबारिया की ओर से शील्ड व मैडल प्रदान किए गए।

इस अवसर पर वेदप्रकाश शर्मा, पवन अठावाल, नित्यानंद शर्मा व नवीन मित्तल को शाखा की सदस्यता ग्रहण करने पर वरिष्ठ सदस्य सुभाष सिंघल ने शपथ दिलाई।

कार्यक्रम में शाखा की ओर से कस्बे में स्नेक केचर के रूप में सेवा का कार्य कर रहे अखलेश शर्मा को भी प्रशस्ति पत्र देकर व शॉल पहनाकर सम्मानित किया गया। पूर्व अध्यक्ष शेरसिंह सैनी व चंद्रप्रकाश आर्य ने सभी का आभार व्यक्त किया। समापन राष्ट्र गान के साथ किया गया। इस मौके पर राजेश गोयल, ताराचंद, हेमन्त पाण्डेय, दिलीप सिंघल, भगवानसिंह, कृष्ण कुमार, शेरसिंह, सूरज जिंदल, चन्द्रप्रकाश, विजय अठावाल, मनीष मलिक, अमित सिंघल, श्याम सुंदर शर्मा, शैलेश मित्तल, विद्या गर्ग, लवकेश सैनी, राजेंद्र गर्ग, किशोरी खत्री, अजय सैनी, सीमा मनोचा, राहुल सिंघल, प्रदीप मित्तल, रोहित सिंघल, अरविन्द बंसल, कृष्ण मित्तल, निक्कू सोनी, विद्यार्थीओ के अभिभावक, आदि मौजूद रहे।

अभियान ले रहा है जन आंदोलन का स्वरूप

करौला (निसं.) जिला कलेक्टर ने बताया कि गुरुवार को जिले में वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान पखवाडे के तहत कई कार्यक्रम आयोजित किये गये। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में कृषि एवं उद्यान विभाग द्वारा स्प्रिंकलर, ड्रिप, फार्म पौण्ड, पाईप लाईन की स्वीकृती जारी करना,डीबीटी के माध्यम से रा'ि जारी करना, प्राकृतिक, जैविक, प्रिसीजन खेती, सूक्ष्म सिंचाई पद्धति पर कार्य'ााला एवं प्रदर्शनी ,स्वीकृत कार्यों का अवलोकन एवं नये कार्यों की स्वीकृतियां, हरियालो राजस्थान अंतर्गत पौधारोपण कार्यों की अग्रिम तैयारी, कम्पोस्टिंग तकनीक का प्रचार-प्रसार करना, लघु सिंचाई संयंत्रो की प्रदर्शनी, प्रगतिशील कृषकों से चर्चा, किसान चैपाल, कृषि विज्ञान केन्द्रों पर संगोष्ठी एवं कृषि 'िाक्षा कार्य'ााला, डिग्गियों की साफ-सफाई आदि कार्य किये गये। इसके साथ ही स्वायत्त शासन विभाग द्वारा जल स्त्रोतो की साफ-सफाई एवं मरम्मत, जल स्त्रोतो आदी।

क्षेत्रीय कार्यालय राजस्थान राज्य प्रदूषण नियन्त्रण मण्डल प्लॉट संख्या 14-15, मीणा कॉलोनी, जेल के पीछे सवाई माधोपुर (राज.)

क्रमांक:-रा.प्र.नि.मं./क्षे.का./स.मा./करौली-1052/367-370 दिनांक: 10.06.2025

पर्यावरण स्वीकृती हेतु लोक सुनवाई के लिए आम सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि मैसर्स चैतन्य कंस्ट्रक्शन कंपनी-मैसनरी स्टोन कलस्टर खनन परियोजना क्षेत्र-1.00 है. (प्रस्तावित) उत्पादन क्षमता-66903 टीपीए (आरओएम), कलस्टर क्षेत्र 13.1647 है. ग्राम सलेमपुर के पास, तहसील सपोटरा जिला के लिए पर्यावरण स्वीकृति के सम्बंध में जन सुनवाई हेतु आवेदन मय दस्तावेजों के राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल के समक्ष प्रस्तुत किया गया है।

उक्त परियोजना से संबंधित पर्यावरणीय प्रभाव आंकलन रिपोर्ट एवं संक्षिप्त कार्यपालक सार निम्न कार्यालयों में उपलब्ध है:-

(1) पर्यावरण विभाग, राजस्थान सरकार, शासन सचिवालय जयपुर। (2) सदस्य सचिव, राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल, झालाना संस्थानिक क्षेत्र, झालाना डूंगरी, जयपुर (3) कार्यालय जिला कलक्टर, करौली। (4) क्षेत्रीय कार्यालय, राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण, सवाईमाधोपुर (5) कार्यालय जिला परिषद, करौली। (6) जिला उद्योग केन्द्र, करौली। (7) खनिज अभियन्ता, खान एवं भू-विज्ञान विभाग, करौली। चूंकि राजस्थान राज्य प्रदूषण मण्डल को उक्त परियोजना बाबत भारत सरकार के वन, पर्यावरण एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, नई दिल्ली द्वारा जारी अधिसूचना संख्या एस.ओ. 1533 दिनांक 14.09.2006 के प्रावधानों के अनुसार में जन सुनवाई हेतु इस आशय की सूचना जारी कर 30 दिवस का नोटिस दिया जाना अनिवार्य है। अत: सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि परियोजना के पर्यावरणीय स्वीकृति हेतु जन-सुनवाई दिनांक 10.06.2025 को "भारत निर्माण राजीव गांधी सेवा केन्द्र" ग्राम-सलेमपुर, तहसील-सपोटरा जिला-करौली में प्रात: 11:00 बजे निर्धारित की गयी थी जिसे कार्यालय जिला कलक्टर, करौली के पत्र दिनांक 09.06.2025 द्वारा प्रशासनिक कारणों एवं उप प्रधान का चुनाव निहित होने के कारण स्थगित कर 02 जुलाई, 2025 को पूर्वोक्त स्थान व समय पर नियत की गयी। अत: जन-सुनवाई है "भारत निर्माण राजीव गांधी सेवा केन्द्र" ग्राम-सलेमपुर, तहसील-सपोटरा जिला-करौली में दिनांक 02.07.2025 को प्रात: 11:00 बजे उपस्थित होकर अपने सुझाव-आक्षेप प्रस्तुत कर सकते हैं। इस संबंध में लिखित सुझाव/आक्षेप इस सूचना के प्रकाशन के जनसुनवाई से पूर्व तक राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल, क्षेत्रीय कार्यालय, सवाई माधोपुर में भी प्रस्तुत कर सकते है।

भवदीय - (बलजीत मीणा) क्षेत्रीय अधिकारी

अहमदाबाद प्लेन क्रैश दुखान्तिका : उदयपुर के चार लोगों की दर्दनाक मौत

शहर के मार्बल व्यवसायी संजीव मोदी के पुत्र शुभ मोदी व शगुन मोदी लंदन घूमने जा रहे थे, हादसे का शिकार हुये

उदयपुर, (का.सं.)। अहमदाबाद में हुई विभत्स विमान दुर्घटना में उदयपुर के चार लोग सवार थे, जिनमें उदयपुर शहर के मार्बल व्यापारी के बेटा-बेटी शामिल है जो लंदन घूमने जा रहे थे। वहीं लंदन में ही शैफ का काम करने वाले दो युवक सवार थे जो जिले के वल्लभनगर व मावली क्षेत्र के रहने वाले है।

- **लंदन में ही शैफ का काम करने वाले दो युवक सवार थे जो जिले के वल्लभ नगर व मावली क्षेत्र के रहने वाले हैं, इनकी भी मौत हो गई**

अहमदाबाद विमान हादसे के बाद उदयपुर में प्रभावितों के घर पर जिला कलेक्टर पहुंचे।

जानकारी के अनुस्सर एयर इंडिया की फ्लाइट नंबर ए-।-.171 ने अहमदाबाद से गुरुवार दोपहर 1:38 बजे उड़ान भरी थी। दोपहर 1:40 बजे यह क्रैश हो गया। विमान एयरपोर्ट की दीवार और एयर कस्टम कार्गो ऑफिस के पास क्रैश हुआ। विमान के गिरते ही पूरे इलाके में धुएं का गुबार दिखाई दिया। विमान में उदयपुर जिले के चार जने सवार थे, जिनमें शहर के सहेली नगर क्षेत्र निवासी मार्बल व्यवसायी संजीव मोदी के पुत्र शुभ मोदी व शगुन मोदी शामिल है। हादसे की खबर लगते ही संजीव व उनकी पत्नी श्वेता अहमदाबाद के लिए रवाना हो गए जबकि दो अन्य में प्रकाशचंद व वरदीचंद शामिल है। वरदीचंद मेनारिया उदयपुर शहर से 47 किलोमीटर दूर वल्लभनगर क्षेत्र के रूण्डेडा का निवासी है। वरदीचंद की पत्नी और उनका बेटा दीपक उन्हें अहमदाबाद छोड़ने गए थे। अभी वे वहीं है। वरदीचंद एक माह पहले ही लंदन से आए थे। हादसे के समाचार के बाद वरदीचंद के भाई भगवान लाल भी अहमदाबाद के लिए रवाना हो गए। वहीं वरदीचंद के साथ ईटाली के पास रोहिड़ा गांव के प्रकाश मेनारिया भी थे। दोनों ही लंदन में कुकिंग का काम करते थे और छुट्टियां बीताकर पुन: लंदन लौट रहे थे।

इधर, हादसे से प्रभावितों की जानकारी सामने आने पर जिला कलक्टर नमित मेहता, एडीएम प्रशासन दीपेंद्रसिंह राठौड़ गुरूवार शाम सहेलीनगर स्थित संजीव मोदी के निवास पर पहुंचे। हादसे की सूचना मिलते ही परिवार अहमदाबाद के लिए रवाना हो चुका था। निवास पर कुछ रिश्तेदार व पड़ौसी मौजूद थे। जिला कलक्टर मेहता ने रिश्तेदारों से जानकारी ली तथा उन्हें ढांढस बंधाया। इसी प्रकार वल्लभनगर एसडीएम सुरेंद्र पाटीदार सहित अन्य अधिकारी वरदीचंद मेनारिया के निवास पर तथा मावली तहसीलदार-थानाधिकारी सहित अन्य रोहिड़ा में प्रकाशचंद्र मेनारिया के निवास पर पहुंचे। उधर, मुख्यमंत्री कार्यालय से भी जिला प्रशासन से पूरे घटनाक्रम की जानकारी ली गई।

बांसवाड़ा की डॉ. कोनी व्यास, पति और बच्चों की भी मौत

बांसवाड़ा/जयपुर। अहमदाबाद में हुई विमान दुर्घटना में बांसवाड़ा की डॉ. कोनी व्यास, उनके पति डॉक्टर प्रदीप जोशी, बच्चे प्रद्युत जोशी, मिराया जोशी और नकुल जोशी की भी मौत हो गई। उदयपुर के पेसिफिक हॉस्पिटल उमरड़ा के प्रबंधन ने बताया कि डॉ. कोनी व्यास ने एक महीने पहले यहां से जॉब छोड़ दी थी। वे उनके पति के साथ ही रहने के लिए लंदन जा रही थी, इसलिए उन्होंने इस्तीफा दिया।

श्रीगंगानगर में भीषण गर्मी जारी

श्रीगंगानगर, (निसं)। जिले में भीषण गर्मी और लू का प्रकोप लगातार 11वें दिन भी जारी रहा। जिले का अधिकतम तापमान 47 डिग्री सेल्सियस से अधिक दर्ज किया गया, जो देश में सबसे अधिक रहा। चिलचिलाती धूप और तपती हवाओं के कारण जनजीवन पूरी तरह प्रभावित हो गया है। सुबह 11 बजे के बाद से ही सड़कें वीरान नजर आने लगती हैं और लोग दोपहर में घरों में गुजारने को मजबूर हैं। गर्म हवा के थपेड़ों और तीखी धूप की वजह से बाजारों में कर्फ्यू जैसे हालात बन गए हैं। राहगीर छांव और ठंडे पेय पदार्थों का सहारा लेकर गर्मी से बचाव की कोशिश कर रहे हैं। युवाओं को मुंह पर कपड़ा बांधकर निकलना पड़ रहा है, इसके बावजूद दोपहर में बाहर निकलना मुश्किल हो गया है। तेज गर्मी का असर हर क्षेत्र पर साफ नजर आ रहा है। सबसे पहले असर यातायात पर पड़ा है। रोडवेज बसों में यात्रियों की संख्या में 50 फीसदी तक की गिरावट आई है। दोपहर में बस स्टैंड लगभग सूने दिखाई दे रहे हैं।

कार की टक्कर से रिटायर्ड पुलिसकर्मी घायल

पाली, (नि.सं.)। पाली में 62 वर्षीय रिटायर्ड पुलिसकर्मी गुरुवार को मंदिर के दर्शन कर वापस बाइक से अपने घर जा रहे थे। इस दौरान बीच रास्ते तेज गति से आ रहे कार ड्राइवर ने उन्हें टक्कर मार दी। हादसे में वे घायल हो गए। इलाज के लिए उन्हें हॉस्पिटल ले जाया गया।

जानकारी के अनुसार, पाली पुलिस में हेड कॉन्स्टेबल के पद से रिटायर्ड हुए 62 वर्षीय दलपतसिंह पुत्र भोपाल सिंह गुरुवार सुबह पुलिस लाइन के पास स्थित राजीव नगर स्थित अपने मकान से हाउसिंग बोर्ड स्थित सांई बाबा मंदिर दर्शन करने गए थे। दर्शन कर वे वापस हाउसिंग बोर्ड से अपने घर के लिए बाइक लेकर रवाना हुए। इस दौरान मिलगेट पुलिस चौकी पास तेज रफ्तार से आ रहे कार ड्राइवर ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। हादसे में वे बाइक से नीचे गिर गए, जिससे उनके सिर और बॉडी में जगह-जगह चोटें आई। इलाज के लिए उन्हें परिजन पाली के बांगड़ हॉस्पिटल लेकर पहुंचे। जहां उनका उपचार किया गया।

सगी बहनों से दुष्कर्म

बीकानेर, (निसं)। पूगल पुलिस थाना क्षेत्र में 14 और 18 साल की बहनों के साथ पड़ौस के खेत में रहने वाले युवकों की ओर से दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। दोनों आरोपी सगे भाई हैं।

पीड़िताओं के पिता की ओर से पुलिस को दी गई रिपोर्ट में बताया गया है कि उसका परिवार खेत काश्त करता है और खेत में ही ढाणी में रहते हैं। पड़ोस में राजकुमार यादव का खेत है जिसे महेन्द्र बावरी का परिवार काश्त करता है। दोनों के परिजनों का एक-दूसरे के घर आना जाना था। पीड़ित परिवार में 18 और 14 साल की दो पुत्रियां हैं जो कुछ दिनों से गुमशुम रहती है। उनकी मां ने पूछा तो बड़ी पुत्री ने बताया कि 8-9 महीने पहले ढाणी में अकेली नहा रही थी। इस दौरान महेन्द्र बावरी का बेटा लक्ष्मण आया और उसने फोटो खींच ली। बाद में फोटो वायरल करने की धमकी देकर लगातार दुष्कर्म करता रहा और किसी को बताने पर घरवालों को जान से मारने की धमकी दी। लक्ष्मण के छोटे भाई ने भी 14 साल की लड़की की फोटो खींची और उसे एडिट कर वायरल करने की धमकी देकर सात-आठ माह से दुष्कर्म करता रहा। पूगल थाना पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है और दोनों बहनों का मेडिकल मुआयना करवाया गया है।

जवाहर कला केन्द्र, जयपुर
कार्यालय महानिदेशक
क्रमांक :- जकके/स्टेज लाईट एवं फोटोग्राफी एवं विडियोग्राफी/2025-26/405-406 दिनांक :- 06/06/2025
जवाहर कला केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रमों हेतु फोटोग्राफी एवं विडियो रिकॉर्डिंग दर अनुबंध हेतु एवं Arrangement of Stage lights, sound and other related items on hire basis दर अनुबंध हेतु ई-निविदा आंमत्रित की जाती है। निविदा की विस्तृत सूचना एवं शर्तें https://sppp.rajasthan.gov.in, eproc.rajasthan.gov.in and JKK की विभागीय वेबसाईट पर देखी जा सकती है।
NIB No. : JKK2526A0013, UBN No. : JKK2526SLRC00013
NIB No. : JKK2526A0014, UBN No. : JKK2526SLRC00014
राज.संवाद/सी/25/4164 अतिरिक्त महानिदेशक (प्रशा.)

OFFICE OF THE PRINCIPAL & CONTROLLER
RUHS COLLEGE OF MEDICAL SCIENCES, Jaipur
Sector-11, Kumbha Marg, Pratap Nagar, Jaipur-302033
Ph- 0141-2795624, 634 Email- principalruhscms@ruhsraj.org
No. :- RUHS-CMS/Store/2025-26/2822 Date :- 11/06/2025
Notice Inviting E-Bids
राज.स्वा.वि.वि. आयुर्विज्ञान महाविद्यालय में NICU/PICU/ICU के लिए कार्य की प्रकृति के आधार पर उच्च कुशल मैनपावर (नर्स ग्रेड-II) सेवाओं के उपापन हेतु दर संविदा हेतु (कुल अनुमानित लागत राशि रू. 1,25,000,00/-) दिनांक 23/06/2025 को अपरान्ह 02.00 बजे तक ऑनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है। अधिक विवरण के लिए वेबसाईट Website sppp.raj.nic.in or eprocrajasthan.gov.in or www.ruhscms.org का अवलोकन करें।
UBN : CMS2526SLRC00025
Principal
Raj.Samwad/C/25/4146 RUHS College of Medical Sciences, Jaipur

राजस्थान-सरकार
कार्यालय नगरपरिषद चूरू (राज0)
राजकीय डेडराज भरतिया अस्पताल के पास, चूरू :- 331001
दूरभाष :- 01562-250318 ई-मेल :- npchuru@gmail.com
क्रमांक :- न.प.चूरू/सफाई शाखा/2025-26/15831333 दिनांक :- 10.06.2025
ई-निविदा सूचना 25 वर्ष 2025-26
राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से नगरपरिषद, द्वारा 01 कार्य की निविदा आईडी नम्बर DLB2526A2334 आमंत्रित की जाती है। विस्तृत विवरण वेबसाइट http://eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.raj.nic.in पर तथा कार्यालय समय में किसी भी कार्य दिवस को नगरपरिषद चूरू के कार्यालय में एवं सूचना बोर्ड पर देखी जा सकता है।
UBN Code :- DLB2526WLOB07477
राज.संवाद/सी/25/4126 आयुक्त, नगरपरिषद, चूरू

कार्यालय नगर परिषद बून्दी
क्रमांक:- 1546 दिनांक:- 12.06.2025
-:: निविदा सूचना ::-
नगर परिषद बून्दी द्वारा जारी निविदा सं0: न.प.बू/निर्माण /2025-26/1322 दिनांक 26/05/2025 की निविदा दिनांक 27/05/2025 से दिनांक 12/06/2025 शाय: 6.00 बजे तक ऑनलाईन विक्रय की जानी थी। निविदा दिनांक 13/06/2025 को 3.00 बजे तक प्राप्त कर निविदा दिनांक 13/06/2025 को 04.00 बजे ऑनलाईन खोली जाना थी। उक्त निविदा में संशोधन करते हुए निविदा दिनांक 20/06/2025 शाय: 6.00 बजे तक ऑनलाईन विक्रय की जायेगी तथा निविदा दिनांक 23/06/2025 को 3.00 बजे तक प्राप्त कर निविदा दिनांक 23/06/2025 को 04.00 बजे ऑनलाईन खोली जायेगी। विस्तृत शर्तें व विवरण निविदा sppp.rajasthan.gov.in/eproc.rajasthan.gov.in पर DLB2526WSOB05994, DLB2526WSOB05997, DLB2526WSOB05972, DLB2526WSOB05978, DLB2526WSOB05981, DLB2526WSOB05989, DLB2526WSOB05991, तथा कार्यालय समय मे किसी भी कार्यदिवस को नगर परिषद मे देखा जा सकता है।
राज.संवाद/सी/25/4129 आयुक्त, नगर परिषद, बून्दी

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता, सार्वजनिक निर्माण विभाग, विद्युत खण्ड मेडीकल कॉलेज (पी डब्ल्यु डी केम्पस जैकब रोड) जयपुर
क्रमांक :- दिनांक :
निविदा सूचना संख्या :- 09/2025-26
राजस्थान के राज्यपाल महोदय की ओर से विद्युत कार्यों हेतु उपयुक्त श्रेणी में सा.नि.वि., राजस्थान, जयपुर में पंजीकृत संवेदकों, एवं नियमानुसार सक्षम स्तर से स्वीकृति उपरान्त केन्द्रीय / राज्य सरकार व उनके अधिकृत संगठनो/केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग / डाक एवं दूर संचार विभाग/ रेल्वे इत्यादि में पंजीकृत संवेदक भाग ले सकते है को निर्धारित प्रपत्र में कुल 2 पैकेज / कार्यों, जिनकी कुल लागत राशि रूपये 189.59 लाख है, के लिए ई-टेन्डरिंग प्रक्रिया हेतु ऑन लाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है।

निविदा फार्म डाउनलोड एवं अपलोड करने की तारीख एवं समय	03.06.2025 सुबह 9.30 बजे से 12.06.2025 सांय 6:00 बजे तक

निविदा से सम्बन्धित समस्त विवरण वेब साईट http://dipr.rajasthan.gov.in/tender.asp पर एवं निविदा दस्तावेज का विवरण वेबसाईट http://eproc.Rajasthan.gov.in एवं sppp.raj.nic.in पर देखा जा सकता है।
सम्पूर्ण निविदा प्रक्रिया http://eproc.rajasthan.gov.in पर ऑनलाइन सम्पादित की जावेगी।
UBN:- PWD2526A0993, PWD2526WSOB03233, PWD2526WSOB03237
अधिशाषी अभियन्ता सा.नि.वि. विद्युत खण्ड मेडीकल कॉलेज जयपुर
DIPR/C/7198/2025

कार्यालय अधिशाषी अभियन्ता जन स्वा.अभि. विभाग खण्ड सॉचौर
एन.एच. 68, PHED Campus, सॉचौर (जालोर)
Te. Pho. No 02979-283624, E-mail.: eephedscr@gmail.com
कमांक: अ.अ./जन स्वा./सौं/निविदा/2025-26/788 दिनांक:- 3/6/25
ई-निविदा सूचना संख्या- 06/2025-26
राजस्थान के राज्यपाल की ओर से खण्ड सॉचौर के अधीन विभिन्न कार्य कराने हेतु लोक निर्माण विभाग में पंजीकृत ठेकेदारों से ई-टेण्डरिंग प्रकिया में ऑन लाईन निविदा आमंत्रित की जाती है जिसका विवरण निम्नानुसार है:-

कार्यालय का नाम व स्थान	अधिशाषी अभियन्ता, जन स्वा. अभि. विभाग खण्ड सांचौर
निविदा का कार्य	ANNUAL RATE CONTRACT FOR CLEANING DISINFECTION AND RESTORATIOIN OF WATER SUPPLY RESERVOIR UPKEEPING FIT FOR, POTABLE WATER SUPPLY, PAINTING AND SLOGAN WORK AT VARIUOUS SITE UNDER DIVISION SANCHORE
निविदा की कुल लागत (राशि लाखो में)	कुल निविदा 01 रु. 25.00 लाख
निविदा प्रपत्र वेबसाईड पर उपलब्ध एवं ऑन लाईन सबमिट की दिनांक	04.06.2025 से 16.06.2025 को 13.00 बजे तक
निविदाएँ खोलने की तिथी व समय	17.06.2025 को 11.00 बजे से
UBN No	PHE2526WSRC03242

निविदा से संबंधित समस्त विवरण वेबसाईट http://sppp.rajasthan.gov.in एवं http://dipr.rajasthan.gov.in http://eproc.rajasthan.gov.in पर देखा एवं भरा जा सकता है। शुद्धि पत्र केवल वेबसाईड पर ही अपलोड किये जायेगे।
(पृथ्वीसिंह)
अधिशाषी अभियंता
जन स्वास्थ्य अभियांत्रिक विभाग, खण्ड सॉचौर
DIPR/C/7686/2025

सफाई कर्मचारी की ऑन ड्यूटी तबियत बिगड़ी, अस्पताल में मौत

- **बताया जा रहा है कि तेज गर्मी की वजह से ड्यूटी के दौरान सफाई कर्मचारी की तबीयत बिगड़ गई थी**
- **भीषण गर्मी को मध्यनजर रखते हुए सफाई कर्मियों के लिए समय परिवर्तन की मांग**

जोधपुर, (कांस) । जोधपुर में नगर निगम के सफाई कर्मचारी की ऑन ड्यूटी तबियत बिगड़ गई, जिसे इलाज के लिए अस्पताल लाया गया, जहां उसकी मौत हो गई। बताया जा रहा है कि तेज गर्मी की वजह से ड्यूटी के दौरान सफाई कर्मचारी की तबीयत बिगड़ गई इसकी वजह से उसकी मौत हो गई।

नगर निगम जोधपुर के कर्मचारी यूनियन नेता राकेश गुजराती ने बताया कि सफाई कर्मचारी दीपक तेजी वार्ड संख्या 22 में सफाई कर्मचारी के पद पर कार्यरत था। मृतक दीपक अपनी मां की जगह अनुकंपा नियुक्ति पर लगा था। आज दीपक स्वस्थ हालत में सुबह ड्यूटी पर आया था। अचानक कार्य करते हुए उसकी तबीयत बिगड़ गई। इस पर शुरुआत में सेटेलाइट हॉस्पिटल लेकर गए। वहां से तुरंत मथुरादास माथुर हॉस्पिटल लेकर आए। यहां इलाज के दौरान दीपक की मौत हो गई। उन्होंने मांग करते हुए कहा निगम आयुक्त इस भीषण गर्मी को मध्यनजर रखते हुए सफाई कर्मचारियों के लिए समय परिवर्तन करें जिससे सफाई कर्मचारियों को राहत मिले। उन्होंने बताया कि पिछले साल भी गर्मी के बढ़ते असर को देखते हुए सफाई कर्मचारियों की शिफ्ट के समय परिवर्तन को लेकर आयुक्त को बताया गया था, लेकिन उसके बावजूद कोई ध्यान नहीं दिया गया।

यूआर साहू ने आरपीएससी चेयरमैन का पदभार संभाला

पूर्व डीजीपी यूआर साहू ने गुरूवार को राजस्थान लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष का पदभार ग्रहण किया।

अजमेर, (कासं)। राजस्थान पुलिस के पूर्व डीजीपी यूआर साहू ने गुरूवार को राजस्थान लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष का पदभार ग्रहण किया। इस दौरान उनके साथ अजमेर रेंज के डीआईजी ओमप्रकाश एसपी वंदिता राणा व एएसपी हिमांशु जांगिड़ मौजूद रहे। सचिव रामनिवास मेहता द्वारा उन्हें पद व गोपनीयता की शपथ दिलाई तथा आयोग के कार्यवाहक अध्यक्ष कैलाश चंद मीणा ने उन्हें कार्यभार सौंपा।

- **'आयोग के अध्यक्ष पद का दायित्व चुनौतीपूर्ण है, परीक्षाओं व साक्षात्कारों का समयबद्ध आयोजन प्राथमिकता रहेगी'**

कार्यभार ग्रहण करने के बाद नवनियुक्त अध्यक्ष यूआर साहू ने पत्रकारों से वार्ता करते हुए कहा कि आयोग के अध्यक्ष पद का दायित्व चुनौतीपूर्ण है। उनके द्वारा इसके निर्वहन का पूर्ण प्रयास किया जाएगा। परीक्षाओं व साक्षात्कारों का समयबद्ध आयोजन उनकी प्राथमिकता रहेगा, उन्होंने कहा कि आयोग की प्रक्रियाओं के संबंध में वर्तमान सदस्यों व अधिकारियों से जानकारी प्राप्त कर आगामी कार्ययोजना निर्धारित की जाएगी।

आरपीएससी ने विचारित सूची जारी की

अजमेर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा भू-वैज्ञानिक (खान एवं भ-विज्ञान विभाग) प्रतियोगी परीक्षा-2024 अंतर्गत विचारित सूची जारी की गई है। सूची में 90 अभ्यर्थियों को पात्रता जांच लिए अस्थाई रूप से सम्मिलित किया गया है। इस परीक्षा का आयोजन 7 मई 2025 को किया गया था। विस्तृत सूचना आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

आयोग सचिव ने बताया कि यह सूची चयन प्रक्रिया में भाग लेने वाले अभ्यर्थियों की अभ्यर्थिता सुनिश्चित करने के क्रम में केवल दस्तावेज सत्यापन के उद्देश्य से है। यह चयन सूची अथवा वरीयता सूची नहीं है। अंतिम रूप से सफल अभ्यर्थियों की सूची संबंधित विभाग द्वारा दस्तावेज सत्यापन कराए जाने के बाद आयोग द्वारा जारी की जाएगी। उक्त परीक्षा की विचारित सूची में सम्मिलित अभ्यर्थियों को विस्तृत आवेदन-पत्र ऑनलाइन भरने होंगे। विस्तृत आवेदन पत्र ऑनलाइन भरने का लिंक 20 से 26 जून 2025 (रात्रि 11.59) तक खोला जाएगा। अभ्यर्थियों को ऑनलाइन आवेदन तथा दस्तावेज सत्यापन के संबंध में आयोग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों की पालना भी सुनिश्चित करनी होगी।

अभ्यर्थियों को आवेदन विथड्रॉ करने का अंतिम अवसर

अजमेर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा बायोकेमिस्ट (चिकित्सा शिक्षा ग्रुप-1 विभाग) भर्ती-2024 के अन्तर्गत वांछित योग्यता न होने पर भी ऑनलाइन आवेदन करने वाले अभ्यर्थियों को आवेदन विथड्रॉ करने का अंतिम अवसर दिया गया है। विस्तृत सूचना आयोग की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

आयोग के वरिष्ठ उप सचिव भंवरसिंह पंवार ने बताया कि 27 सितंबर 2024 को उक्त पदों पर भर्ती का विज्ञापन जारी कर दिनांक 8 अक्टूबर से 6 नवंबर 2024 तक ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए थे। आयोग द्वारा की गई रेण्डम/सेम्पल जांच में यह पाया गया कि कतिपय आवेदकों के पास अनिवार्य योग्यता नहीं होने के उपरांत भी उनके द्वारा आवेदन किया गया है। पूर्व में आयोग द्वारा उक्त पदों हेतु शैक्षणिक व वांछित योग्यता न होने पर भी आवेदन करने वाले अभ्यर्थियों को 5 से 9 जून तक आवेदन विथड्रॉ करने का अवसर दिया गया था। इस दौरान भी आवेदन विथड्रॉ नहीं करने वाले अपात्र अभ्यर्थियों को आगाह किया है कि वे अपना ऑनलाइन आवेदन पत्र दिनांक 14 जून 2025 तक विथड्रॉ कर लेवें अन्यथा अभ्यर्थी को आयोग द्वारा भविष्य में ली जाने वाली समस्त परीक्षाओं से विवर्जित कर दिया जाएगा। इसके अतिरिक्त उनके विरूद्ध भारतीय न्याय संहिता 2023 की धारा 217 के अन्तर्गत कार्यवाही भी की जायेगी।

परीक्षा का आयोजन 15 से

अजमेर, (कासं)। राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा सहायक अभियंता संयुक्त प्रतियोगी (मुख्य) परीक्षा-2024 का आयोजन 15 से 18 मार्च 2026 तक किया जाएगा। आयोग सचिव ने बताया कि 5 अगस्त 2024 को विभिन्न विभागों में सहायक अभियंता (सिविल, इलेक्ट्रिकल, मैकेनिकल एवं कृषि अभियांत्रिकी) के 1014 पदों पर भर्ती के लिए विज्ञापन जारी किया गया था। इस भर्ती के अंतर्गत प्रारंभिक परीक्षा का आयोजन 28 सितंबर 2025 को किया जाना प्रस्तावित है।

तीन बाल श्रमिक मुक्त कराए

भीलवाड़ा, (निसं)। बाल श्रम मुक्तिकरण के लिए चलाए जा रहे उमंग 5 अभियान के तहत अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक रोहित मीणा के निर्देशानुसार मानव तस्करी विरोधी इकाई, श्रम विभाग, बाल अधिकारिता विभाग एवं जिला बाल संरक्षण इकाई द्वारा संचालित चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 एवं नवाचार संस्थान ने इंद्रा मार्केट में स्थित अमित टी सेंटर से 2 बाल श्रमिक एवं सुनील स्टेशनर्स से 1 बाल श्रमिक को बाल श्रम से मुक्त करवाया।

बच्चों को बाल कल्याण समिति सदस्य विनोद राव के समक्ष प्रस्तुत किया गया, श्रम विभाग के श्रम निरीक्षक आशीष यादव एवं शिव प्रसाद ने बच्चों के बयान लिए।

बाल कल्याण समिति अध्यक्ष चन्द्रकला ओझा एवं सदस्य विनोद राव के आदेशानुसार बच्चों के आश्रय की आवश्यकता होने से बच्चों को आश्रय हेतु एवरेस्ट शेल्टर होम में रखवाया। रेस्क्यू ऑपरेशन के दौरान मानव तस्करी विरोधी इकाई के प्रभारी शौकत अली, एएसआई ओमप्रकाश सेन, हेड कॉन्स्टेबल मुकेश पारीक एवं बाल अधिकारिता विभाग के सहायक निदेशक धर्मराज प्रतिहार के निर्देशानुसार चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 के परियोजना समन्वयक हेमंत सिंह सिसोदिया, काउंसलर निर्मला पुरोहित एवं सुपरवाइजर राधेश्याम गुर्जर, आनंद कुमार सुनारिया एवं कैस वर्कर अरविंद वर्मा एवं नवाचार संस्थान के जिला प्रभारी जितेंद्र सिंह तोमर एवं रेड एवं रेस्क्यू ऑफिसर भगवत सिंह चारण ने कार्रवाई करते हुए तीन बाल श्रमिक को बाल श्रम से मुक्त करवाया।

वैन और बाइक की टक्कर में 12 दिन की बच्ची सहित तीन की मौत

झालावाड़, (निसं)। झालावाड़ जिले के अकलेरा थाना क्षेत्र के अरनिया पुलिया पर मारुति वैन और बाइक की जोरदार टक्कर हो गई, जिसमें बाइक सवार दो युवकों ने मौके पर ही दम तोड़ दिया जबकि वैन में सवार नव प्रसूता की हालत गंभीर है तथा उसकी 12 दिन की पुत्री की मौत हो गई।

- **बाइक सवार दो युवकों ने मौके पर ही दम तोड़ा, वैन में सवार नव प्रसूता की हालत गंभीर तथा उसकी 12 दिन की पुत्री की मौत हो गई**

अकलेरा पुलिस के अनुसार बीरामचंद एवं कालूराम नामक दो युवक बाइक पर सवार होकर घाटोली गांव जा रहे थे, जिनकी बाइक अरनिया नदी की पुलिया पर सामने से आ रही वैन से टकरा गई। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि बाइक के परखच्चे उड़ गए और दोनों युवाओं ने मौके पर ही दम तोड़ दिया। वहीं दूसरी तरफ वैन में सवार नवप्रसूता की 12 वर्षीय बच्ची की भी मौके पर मौत हो गई, जबकि नव प्रसूता भूली बाई की हालत गंभीर बनी हुई है। पुलिस ने बताया कि बांसखेड़ा निवासी भूली बाई ने 12 दिन पूर्व एक बच्ची को जन्म दिया था जिसकी तबीयत खराब होने के चलते उसको अकलेरा के एक निजी अस्पताल में भर्ती करवाया गया था, जहां से अस्पताल वालों ने बालिका को झालावाड़ ले जाने की सलाह दी, जिस पर भूली बाई एवं उसका ससुर तथा अन्य परिजन भूली भाई और उसकी नवजात बच्ची को लेकर झालावाड़ जा रहे थे, जहां रास्ते में यह हादसा हो गया। भूली भाई की नवजात बालिका की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि भूली भाई की हालत गंभीर बनी हुई है, जिसको अकलेरा के निजी अस्पताल में दाखिल करवाया गया है।

अरनिया नदी की पुलिया पर हुये हादसे में बाइक के परखच्चे उड़ गए।

महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)
क्रमांक-डीपीएम/मप्रकृप्रौविवि/निविदा/2025-26/(02)(03)/6090 दिनांक : 12.06.2025
निविदा सूचना-(02)(03)(2025-26)
माननीय कुलपति महोदय, म.प्र.कृ.प्रौ.वि.वि. उदयपुर की ओर से विश्वविद्यालय हेतु स्टेशनरी (अनुमानित लागत रू. 20 लाख), विज्ञापन प्रकाशन (अनुमानित लागत रू. 15 लाख) मुहरबन्द निविदाएँ आंमत्रित की जाती है। समस्त शर्तें एवं विस्तृत विवरण www.eproc.rajasthan.gov.in, www.sppp.rajasthan.gov.in एवं www.mpuat.ac.in पर देखा जा सकता हैं। निदेशक
UBN No. ATU2526GLRC00097, UBN No. ATU2526SLOB00098 (आयोजना एवं परिवेक्षण निदेशालय)

MUNICIPAL BOARD, NATHDWARA DIST.- RAJSAMAND
S.No./M.B.Nath/NIT/STORE/2025/ 7358 Date : 10-06-2025
Notice Inviting Bid
Bids for different works Nit No. 18/2025-26 of Municipal Board Nathdwara are invited from interested bidders up to date 21-06-2025 on 18:00 Hours. Other particulars of the bid may be visited on the procurement portal (http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppp.raj.nic.in) of the state govt.
UBN No.- DLB2526SLOB07475 TO 07474
Commissioner, Municipal Board Nathdwara
Raj.Samwad/C/25/4120

सार्वजनिक अधिशाषी अभियंता सार्वजनिक निर्माण विभाग खण्ड केकडी
क्रमांक-554-573 दिनांक-05/06/2025
Notice Inviting Bid No:- 04/2025-26
Bids For Rate Contract for Patch Repair work & Other Maintenance work on Various roads under PWD Dn Kekri for the Year 2025-6 Procurement are Invited from interested bidders upto 6.00 PM of 16.06.2025 Other particulars of the id may be visited on the procurement portal (http://eproc.rajasthan.gov.in, http://sppps.raj.nic.in) of the state website. The approximate value of the procurement is Rs. 195.12 Lacs.
UBN No :- PWD 2526 WSRC03726
(Bhim Singh Meena)
Executive Engineer
PWD Dn. Kekri
DIPR/C/7653/2025

फर्जी कॉलेज बनाकर फर्जी तरीके से छात्रवृत्ति उठाने वाले तीन आरोपी गिरफ्तार

छात्रवृत्ति पोर्टल पर फर्जी दस्तावेज अपलोड कर फर्जी छात्रवृत्ति उठाने का कर रहे थे गोरखधंधा

जयपुर। जयपुर ग्रामीण जिले के गोविंदगढ़ थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए काल्पनिक रूप से फर्जी कॉलेज बनाकर फर्जी तरीके से लाखों रुपये की छात्रवृत्ति उठाने वाले तीन आरोपितों को गिरफ्तार किया गया है। फिलहाल आरोपितों से पूछताछ की जा रही है।

उप महानिरीक्षक पुलिस आनन्द शर्मा ने बताया है कि जयपुर ग्रामीण जिले के गोविंदगढ़ थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए काल्पनिक रूप से फर्जी कॉलेज बनाकर फर्जी तरीके से 23 लाख 6400 रुपये की छात्रवृत्ति उठाने वाले गुरुकृपा आईटीआई महाविद्यालय कुचामन जिला नागौर के संचालक श्रवण लाल जाट (32) निवासी जायल जिला नागौर,बलराम गुर्जर (43) निवासी सांगानेर जयपुर हाल प्रोजेक्ट मैनेजर सामाजिक न्याय अधिकारिता विभाग सहित ई-मित्र संचालक विजय कुमार बोचल्या(27) निवासी गोविंदगढ़ जिला जयपुर को गिरफ्तार किया है। पुलिस जांच में सामने आया कि

फर्जी तरीके से लाखों रुपये की छात्रवृत्ति उठाने वाले तीन आरोपितों को गिरफ्तार किया।

आरोपित ई-मित्र संचालक विजय कुमार बोचल्या विजय कुमार बोचल्या,छात्रवृत्ति पोर्टल से स्वीकृत करवाने वाले गुरुकृपा आईटीआई महाविद्यालय कुचामन नागौर के संचालक और श्रवण राम जाट व विभाग से छात्रवृति दिलवाने के नाम पर रुपये लेने वाले सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के प्रोजेक्ट मैनेजर- डवलपर अनुबंध पर काम करने वाले बलराम गुर्जर ने मिलकर फर्जी तरीके से कॉलेज बनाकर कूटरचित दस्तावेज तैयार कर सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग छात्रवृत्ति पोर्टल से 23 लाख 6400 रुपये लिए है।

इस मामले में आरोपितों द्वारा गबन की गई राशि 23 लाख 6400 रुपये की बरामदगी के प्रयास व शेष आरोपितों की गिरफ्तारी के प्रयास किए जा रहे हैसामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग जयपुर ने मामला दर्ज करवाया कि एसएसओ आईडी छात्रवृत्ति प्रणाली आरजे रावटीनस्टिट्यूट, वीबीएवाई कुमार बोचल्या, डॉ. सोनिया नित्यानंद, अक्षय मुलोडिया 4, बजरंग 019 का उपयोग कर एक फर्जी कूटरचित दस्तावेजों के आधार पर शिक्षण संस्थान रावत कॉलेज ऑफ वेटरनरी एंड एनीमल साइंस राष्ट्रीय राजमार्ग नाघोरी जिला अलवर का गठन किया गया है। इनके द्वारा इस शिक्षण संस्थान को विभाग के छात्रवृत्ति पोर्टल पर पंजीकृत किया गया व कूट रचित फर्जी दस्तावेजों के आधार पर 23 लाख 6400 रुपये की छात्रवृत्ति प्राप्त कर राजकोष को हानि पहुंचाई गई है। मामला दर्ज होने के बाद आरोपित फरार हो गए। पुलिस ने मामला दर्ज कर एक पुलिस टीम का गठन किया और फिर सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग अम्बेडकर भवन व अन्य विभागों से दस्तावेज प्राप्त कर आरोपितों को चिन्हित करते हुए धर-दबोचा।

लाईसेंस का नवीनीकरण नहीं करवाये जाने पर की कार्यवाही

- गंदगी पाये जाने पर 2 प्रतिष्ठानों पर 5-5 हजार रूपये का किया कैरिंग चार्ज

जयपुर। नगर निगम ग्रेटर आयुक्त रूकमणि रियाड़ के निर्देशानुसार मुख्य स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. रश्मि कांकरिया के नेतृत्व में गुरूवार को संयुक्त टीम द्वारा कार्यवाही की गई।

नगर निगम ग्रेटर जयपुर द्वारा दिये गये नोटिसों के उपरान्त भी आर.एम.ए ट्रेड लाईसेंस का नवीनीकरण नही करवाये जाने पर झोटवाड़ा जोन में संचालित 1 प्रतिष्ठान जिसके अन्तर्गत नियमानुसार 30 दिवस या आर.एम.ए लाईन्सेंस (अनुज्ञा-पत्र) नवीनीकरण करवाये जाने तक (जो भी पहले हो) तक के लिए बंद किया गया है।

साथ ही मौके पर गंदगी पाये जाने पर 2 प्रतिष्ठानों से 5-5 हजार रूपये का कैरिंग चार्ज वसूला गया।

मुख्य स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. रश्मि कांकरिया ने अपील की कि नगर निगम ग्रेटर जयपुर सीमा क्षेत्र में संचालित प्रतिष्ठान जैसे होटल, रेस्टोरेंट, कैफे, केंटिन, मिठाई की दुकान, बैकरी, कन्फेक्सनरी, नमकीन के कारखाने व मिठाई के कारखाने, आईसक्रीम व आईसक्रीम फैक्ट्री इत्यादि का संचालन आर.एम.एम ट्रेड लाईन्सेंस प्राप्त करके ही किया जावें अन्यथा नियमानुसार विभाग द्वारा कार्यवाही की जावेगीं जिसकी जिम्मेदारी संचालनकर्ता की स्वयं की होगी।

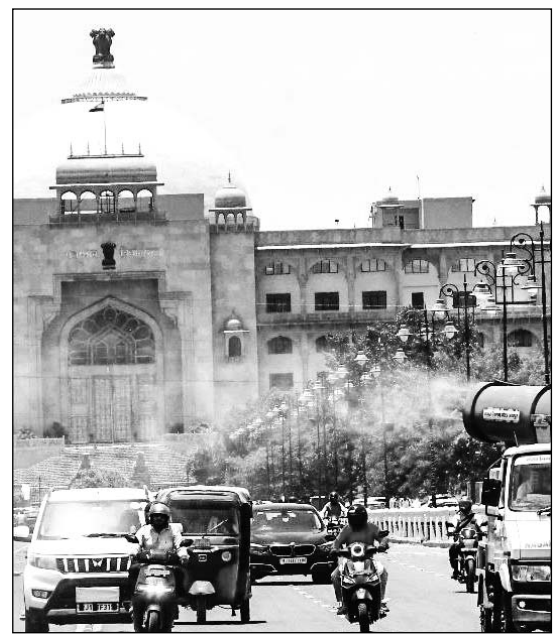

मानसून की बारिश का इंतजार लेकिन भीषण गर्मी से कैसे बचा जाए इसके लिए जनपथ पर विधानसभा के सामने सड़क पर पानी डाल कर कुछ राहत देने की कोशिश

दो बाइकों की टक्कर में एक व्यक्ति की मौत

जयपुर। जयपुर ग्रामीण जिले के कालाडेरा थाना क्षेत्र में बुधवार-गुरूवार की मध्यरात्रि में गुवारड़ी पेट्रोल पंप के पास दो बाइक की आमने-सामने की टक्कर में एक व्यक्ति की मौत हो गई और दूसरा व्यक्ति गंभीर घायल हो गया। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और घायल व्यक्ति को अस्पताल में भर्ती करवाया।

थानाधिकारी बाबूलाल मीणा ने बताया कि युवक की पहचान चौमूं के हाड़ौता निवासी विनोद यादव (28) के रूप में हुई है। जो कालाडेरा स्थित एक फैक्ट्री में काम करता था। हादसा उस समय हुआ जब वह फैक्ट्री से घर लौट रहा था। स्थानीय लोगों ने घायल व्यक्ति को तुरंत नजदीकी अस्पताल में भर्ती करवाया। वहीं युवक का शव चौमूं सरकारी अस्पताल की मोर्चरी में रखा गया। जहां गुरुवार सुबह पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया है। पुलिस ने दोनों बाइक जब्त कर मामले की जांच में जुटी है।

पिस्टल की नोक पर बंधक बनाकर लूटपाट करने वाले दो आरोपी गिरफ्तार

जयपुर। मुहाना थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए पिस्टल की नोक पर घर में घुस कर बंधक बनाकर लूटपाट करने वाले दो बदमाशों को गिरफ्तार किया है और वहीं एक अन्य बदमाश की तलाश की जा रही है। फिलहाल आरोपितों से पूछताछ की जा रही है पुलिस उपायुक्त जयपुर दक्षिण दिगंत आनंद ने बताया कि मुहाना थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 29 मई को पीडित नवीन सैन निवासी इस्कॉन रोड मुहाना के घर पर हथियार पिस्टल की नोक पर पीड़ित को बंधक बनाकर नकदी सहित जेवरात लूटने के मामले में तीस वर्षीय आकाश यादव और बीस वर्षीय ईमरान को गिरफ्तार किया है और दोनों ही बदमाश धौलपुर जिले के रहने वाले है। वहीं इनका एक साथी धौलपुर निवासी भूरा पंडित उर्फ अर्पित शर्मा अभी फरार चल रहा है। भूरा पंडित उर्फ अर्पित शर्मा के खिलाफ दो दर्जन से अधिक आपराधिक मामले है और वहीं आशक यादव के

मुहाना पुलिस ने लूटपाट करने वाले दो बदमाशों को गिरफ्तार किया।

खिलाफ मारपीट,हत्या,हत्या का प्रयास,लूट और फायरिंग के एक दर्जन मामलों में जेल जा चुके है। पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपित आकाश यादव परिवादी का परिचित है और उसे यह मालूम था कि पीड़ित के घर पर काफी पैसा व सोना चांदी मिलेगा। वहीं आकाश यादव के पिताजी बिमार होने के कारण पैसों की जरूरत थी। जिस पर आकाश यादव ने ही परिवादी का घर व दुकान की रेकी करवाई थी तथा घटना के समय दूर रहकर सारा मुवमेंट बताता रहा। जिससे घटना कारित करने में आसानी रही। वहीं किसी तरह का रिस्क नहीं रहा । इसके बाद ईमरान व भूरा पंडित उर्फ अर्पित शर्मा घर में घुसकर पीड़ित को बंधक बना कर पिस्टल की नोक पर नकदी सहित जेवरात लूटने की वारदात को अंजाम दिया और वहीं तीनों धौलपुर चले गए।

दो बदमाश गिरफ्तार

जयपुर। विश्वकर्मा थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए नकबजनी की वारदात को ट्रेस आउट करते हुए दो बदमाशों को गिरफ्तार उनके कब्जे से चुराई गई तीन एलसीडी व एक एसी जब्त किया गया है। फिलहाल आरोपितों से पूछताछ की जा रही है।।

पुलिस उपायुक्त जिला जयपुर पश्चिम अमित कुमार ने बताया कि विश्वकर्मा थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए नकबजनी की वारदात को ट्रेस आउट करते हुए राजू शर्मा उर्फ राज शर्मा निवासी अलवर हाल विश्वकर्मा और नवीन चौहान निवासी जयपुर को गिरफ्तार किया गया है।

पृथ्वीराज नगर पुलिस प्रशासन ने संघर्ष समिति को धरने की नहीं दी अनुमति

जयपुर। पृथ्वीराज नगर जन अधिकार संघर्ष समिति ने मुख्यमंत्री के नाम जयपुर कलेक्टर को ज्ञापन देकर दो सौ फ़ीट चौराहा अजमेर रोड पर रजनी विहार कट को खोलने तथा नया बना हीरापूरा बस टर्मिनल शीघ्र प्रारंभ करने के लिए ज्ञापन देकर आंदोलन का आ ान किया था कि यदि नो जून तक माँगे नहीं मानी गई तो नो जुन को धावास रोड पर निम्बार्क तिराहे पर धरना दिया जाएगा जिसकी अनुमति संघर्ष समिति ने पुलिस प्रशासन से माँगी थी। संघर्ष समिति के संरक्षक अशोक शर्मा और अध्यक्ष एडवोकेट घनश्याम सिंह ने बताया कि पुलिस प्रशासन ने धरना देने की अनुमति संघर्ष समिति को नहीं दी तथा पत्र देकर ये और सूचित किया कि यदि धरना दिया तो क़ानूनी कार्रवाई की जाएगी। पुलिस प्रशासन ने हठधर्मिता दिखाते हुए अनुमति नहीं दी। संघर्ष समिति नियमों के तहत शांति से अपना आंदोलन चलाकर पृथ्वीराज नगर में मूलभूत सुविधाओं की माँग कर रही हैं लेकिन सरकार और पुलिस प्रशासन आंदोलन को दबाना चाहते हैं।

संघर्ष समिति अब नई रणनीति बनाकर आंदोलन को तेज करेगी। घनश्याम सिंह एडवोकेट ने बताया कि पृथ्वीराज नगर में अधिकतर पार्षदों से लेकर प्रधानमंत्री तक सभी भाजपा के हैं जो की डबल इंजन नहीं होकर छः इंजन बने हुए हैं लेकिन फिर भी जनता के काम नहीं हो रहे हैं।

स्वस्थ नागरिक ही स्वच्छ और सशक्त राष्ट्र की रख सकता है नींव : मदन राठौड़

- तकनीक युग में व्यस्त जीवनशैली के बीच योग को अपनाकर जीवन को बनाएं संतुलित और अनुशासितः- मदन राठौड़
- भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने नगर निगम जयपुर ग्रेटर की ओर से आयोजित योग महोत्सव में की शिरकत, पौधरोपण कर दिया पर्यावरण का संदेश

जयपुर। नगर निगम जयपुर ग्रेटर की ओर से गुरुवार को विद्याधर नगर स्थित स्मृति वन उद्यान में जयपुर योग महोत्सव 2025" के तहत योग-प्राणायाम किया गया। योग महोत्वस में भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने भी शिरकत की और योगासन कर स्वास्थ्य तथा स्वच्छता के प्रति जागरूकता का संदेश दिया। इस दौरान राठौड़ ने शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए पर्यावरणीय उत्तरदायित्व निभाते हुए पौधारोपण किया।

भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने "पहले खुद स्वस्थ हो, तब शहर को भी स्वच्छ रखें" थीम पर आयोजित योग कार्यक्रम के दौरान आमजन ऊर्जा और प्रेरणा का संचार किया।

राठौड़ ने कहा कि स्वस्थ नागरिक ही स्वच्छ और सशक्त राष्ट्र की नींव रख सकता है। योग भारतीय संस्कृति की वह अमूल्य धरोहर है, जो हमें संतुलित जीवन की दिशा दिखाती है।

यदि हम प्रतिदिन योग करें और अपने शरीर, मन एवं परिवेश की स्वच्छता को महत्व दें, तो यह न केवल हमारे जीवन को बल्कि पूरे समाज को भी सशक्त बना सकता है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ ने योग को केवल एक शारीरिक क्रिया नहीं, बल्कि "राष्ट्र निर्माण की नींव में एक आध्यात्मिक और सामाजिक साधना" बताया। उन्होंने युवाओं से आव्हान किया कि वे तकनीक और व्यस्त जीवनशैली के बीच योग को अपनाकर अपने जीवन में संतुलन और अनुशासन लाएं।

कार्यक्रम में जयपुर शहर के जिला अध्यक्ष अमित गोयल ने कहा कि शहर का प्रत्येक नागरिक अगर स्वस्थ रहेगा तो समाज भी जागरूक और अनुशासित होगा। योग केवल व्यक्तिगत स्वास्थ्य नहीं, बल्कि सामूहिक चेतना को भी जाग्रत करने का माध्यम है। ग्रेटर जयपुर नगर निगम द्वारा आयोजित इस आयोजन में महापौर डॉ. सौम्या गुर्जर ने भी सहभागिता की और नगरवासियों से आग्रह किया कि योग से आरंभ हो दिन की शुरुआत और स्वच्छता से हो उसकी परिणति - यही जयपुर को सुंदर और सशक्त बनाएगा।

इस दौरान भाजपा प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़, जिलाध्यक्ष अमित गोयल, मेयर डॉ. सौम्या गुर्जर ने पौधारोपण कर पर्यावरण-संरक्षण का संदेश दिया।

इस दौरान वैदिक परंपरा के अनुसार हवन यज्ञ कर वातावरण की शुद्धि की प्रार्थना की। योग प्रशिक्षकों ने सूर्य नमस्कार, प्राणायाम, ध्यान और विविध आसनों का सजीव प्रदर्शन कर सभी को अभ्यास कराया।

ट्रायल के बहाने कार ले भागा बदमाश

जयपुर। एयरपोर्ट थाना इलाके में एक युवक ने कार बेचने के लिए ऑनलाइन विज्ञापन डाला था। कार देखने आया शख्स ट्रायल के बहाने लेकर चलता बना। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। पुलिस को इस घटना का एक सीसीटीवी फुटेज भी मिला है। पुलिस के अनुसार गुरु नानकपुरा राजा पार्क निवासी पारस खन्ना ने मामला दर्ज करवाया कि उसने ऑनलाइन कार बेचने के लिए विज्ञापन डाला था। इस पर एक युवक ने कार खरीदने की इच्छा जाहिर की। इसके बाद आरोपी ने उसे जेएलएन मार्ग पर बुला लिया। इसके बाद कार खुले में देखने के बहाने उसे एयरपोर्ट रोड पर ले आया। यहां पर आरोपी ने कार मालिक को उतार दिया और ट्रायल लेकर आने को कहा। इसके बाद बदमाश कार लेकर फरार हो गया।

जांच अधिकारी हेड कांस्टेबल सीताराम ने बताया कि घटना का सीसीटीवी फुटेज भी मिला है। लेकिन इसके आधार पर शख्स की पहचान करना मुश्किल है। आरोपी के मोबाइल नंबरों की डिटेल खोजी जा रही है। फिलहाल बदमाश का कोई सुराग हाथ नहीं लगा है।

लेनदेन को लेकर युवक पर फायरिंग करने वाले दो आरोपी गिरफ्तार

- अभिषेक मीणा व रोहिताश से घटना में प्रयुक्त एक चौपहिया वाहन सहित एक अवैध देशी कट्टा बरामद भी किया

जयपुर। खोह नागोरियान थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 29 मई को दीपक मीना निवासी हिंडौन सिटी जिला करौली हाल इंदिरा गांधी नगर खोह नागोरियान पर लेनदेन को लेकर फायरिंग करने के मामले में दो और आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

पुलिस उपायुक्त जयपुर (पूर्व) तेजस्वनी गौतम ने बताया कि खोह नागोरियान थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए 29 मई को दीपक मीना निवासी हिंडौन सिटी जिला करौली हाल इंदिरा गांधी नगर खोह नागोरियान पर लेनदेन को लेकर फायरिंग करने के मामले में 23 वर्षीय अंकित मीना उर्फ सुक्का निवासी दौसा और 20 वर्षीय अर्जुन मीणा निवासी करौली को

पुलिस ने लेनदेन को लेकर फायरिंग करने के मामले में गिरफ्तार किया।

गिरफ्तार किया है।

इससे पूर्व में पुलिस ने अभिषेक मीणा निवासी टोडाभीम जिला करौली हाल रामनगरिया जिला जयपुर और रोहिताश मीणा निवासी टोडाभीम जिला करौली को गिरफ्तार किया जा चुका है। आरोपितों ने दीपक मीणा को बैंक खाते किराये पर दे रखे थे। उपरोक्त बैंक खातो की लेनदेन पर ही उनका विवाद दीपक मीणा से था। इसी विवाद को लेकर दीपक मीना पर 29 मई को फायर किया था।

गिरफ्तार आरोपित अभिषेक मीणा व रोहिताश से घटना में प्रयुक्त एक चौपहिया वाहन सहित एक अवैध देशी कट्टा बरामद भी कर लिया गया है।

अग्रज्योति अलंकरण समारोह 15 को

जयपुर । अग्रबंधुओं की राष्ट्रीय पाक्षिक पत्रिका अग्रज्योति अपने 22 वे वार्षिकोत्सव अग्र ज्योति अलंकरण समारोह आगामी 15 जून को साम 5बजे सांगानेरी गेट स्थित अग्रवाल कॉलेज परिसर के अग्रसेन ऑडिटोरियम में आयोजित किया जाएगा। इस मौके पर अग्रज्योति अग्रबंधुओं का भामाशाह अलंकरण व लाइफ टाइम अचीवमेन्ट अवार्ड से सम्मानित किया जाएगा। मुख्य संयोजक अरविन्द अग्रवाल ने बताया कि समारोहे देशभर में कहीं भी समाज उपयोगी भवन बनाने में 5 लाख से अधिक का आर्थिक सहयोग दिया हो उन्हें 'अग्रज्योति भामाशाह अलंकरण'से तथा इसके साथ ही जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन समाजसेवा में समर्पित किया हो उन्हे 'लाइफ टाइम अचीवमेन्ट अवार्ड' से सम्मानित किया जाएगा। उन्होंने बताया कि समारोह के दौरान सर्वोच्च पद 'अग्ररत्न विभूषण' से सत्यनारायण बेरीवाल को तथा 'अग्र विभूषण' से बृजभूषणदास अग्रवाल को भी सम्मानित किया जाएगा। मुख्य समन्वयक डॉ. ओपी गुप्ता एडवोकेट ने बताया कि कार्यक्रम में अग्रज्योति के अलंकरण विषेशांक का भी अनूठे अंदाज में विमोचन किया जायेगा।

गलता तीर्थ मंदिर का हो सौन्दर्यकरण श्रद्धालुओं को मिले बेहतर सुविधाएं

जयपुर । मंदिर ठिकाना गलता जी, जयपुर की प्रबन्ध व्यवस्था, विकास कार्यो एवं श्रद्धालुओं को मंदिर में बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने के सम्बन्ध में गुरूवार को जिला कलक्टर एवं प्रशासक मंदिर ठिकाना गलता जी डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक

- जिला कलक्टर ने कहा कि प्रशासन का उद्देश्य गलता तीर्थ का सौन्दर्यकरण एवं श्रद्धालुओ को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराना है

आयोजित हुई। जिला कलक्टर ने कहा कि प्रशासन का उद्देश्य गलता तीर्थ का सौन्दर्यकरण एवं श्रद्धालुओ को बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराना है। उन्होंने आगामी मानसून के दौरान श्रावण मास में होने वाली कावड़ यात्रा मे किसी प्रकार का हादसा न हो इसको ध्यान में रखते हुए 24 घण्टे सिविल डिफेन्स के वॉलिन्टियर्स की नियुक्ति करने के निर्देश उप नियन्त्रक नागरिक सुरक्षा विभाग अमित शर्मा को दिए

डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में बैठक आयोजित हुई।

है। उन्होंने आम श्रद्धालुओ की सुविधाओ को ध्यान में रखते हुए गलता तीर्थ परिसर में सरस पार्लर खोलने के निर्देश सरस डेयरी प्रबन्धक को दिए हैं। उन्होंने परिसर स्थित कुण्डों सहित सम्पूर्ण परिसर की बेहतर साफ सफाई व पार्किंग की व्यवस्था करवाने के निर्देश ए.डी.सी. नगर निगम हैरिटेज सुरेन्द्र सिंह यादव को दिए है। इसके साथ-साथ मंदिर परिसर में फल-फूल-माला प्रसाद की बेहतर व्यवस्था के साथ-साथ संविदा पर लगे सभी श्रमिकों को नियमानुसार नियमित रूप से पारिश्रमिक देने के निर्देश देवस्थान विभाग के सहायक आयुक्त रतनलाल योगी को दिए हैं। जिला कलक्टर ने आगामी मानसून को देखते हुए गलता परिसर स्थित क्यारा बांध एवं राजा कुण्ड में से मिट्टी खाली करवाकर चारों ओर सुरक्षा दीवार का निर्माण करवाने के निर्देश वन विभाग को दिए हैं। उन्होंने मंदिर ठिकाना गलता जी की स्वामित्व की किराये पर चल रहीं दुकानों के किराये की वर्तमान दरों के अनुसार पुनः निर्धारण करवाने के संबंध में निर्देश देवस्थान व सार्वजनिक निर्माण विभाग के अधिकारियों को दिए हैं। इसके अतिरिक्त उन्होने गलता जी के समस्त विद्युत एवं पेयजल कनेक्शनों को मंदिर के नाम ट्रांसफर की कार्यवाही करवाने के निर्देश अतिरिक्त जिला कलक्टर आशीष कुमार को दिए हैं। इस दौरान सहायक आयुक्त द्वितीय देवस्थान विभाग महेन्द्र देवतवाल, उप अधीक्षक पुरातत्व विभाग मनोज कुमार द्विवेदी, कनिष्ठ अभियन्ता नगर निगम जयपुर हैरिटेज कुलदीप शर्मा,एस.ई. जे.डी.ए. महेश गोयल, उपायुक्त आदर्श नगर युगांतर, एक्स.ई.एन. जे. वी .वी. एन .एल. नागेश अग्रवाल, ए.सी.एफ. एन.बी.पी. देवेन्द्र सिंह राठौड़ सहित अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित थे।

किराये पर दिए जाएंगे अन्न भण्डारण योजना के अंतर्गत निर्मित हो रहे गोदाम

- पैक्स की होगी नियमित आय, वित्तीय स्थिति होगी सुदृढ़
- सहकारिता विभाग ने जारी की मानक संचालन प्रक्रिया
- नैफेड और एनसीसीएफ ने भी गोदाम किराये पर लेने के लिए किया आश्वस्त

जयपुर। विश्व की सबसे बड़ी विकेन्द्रीकृत अन्न भण्डारण योजना के अंतर्गत राज्य में निर्मित किये जा रहे गोदामों को अब किराये पर दिया जा सकेगा। सहकारिता विभाग द्वारा इस संबंध में मानक संचालन प्रक्रिया जारी की गई है। गोदामों को किराये पर दिए जाने से पैक्स को नियमित आय होगी और उनकी वित्तीय स्थिति सुदृढ़ होगी।

सहकारिता विभाग की प्रमुख शासन सचिव एवं रजिस्ट्रार, सहकारी समितियां मंजू राजपाल ने बताया कि ग्राम पंचायत स्तर पर भंडारण की सुविधा उपलब्ध कराने तथा पैक्स की वित्तीय स्थिति सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से 'सहकार से समृद्धि' कार्यक्रम के अंतर्गत राज्य में वृहद् स्तर पर गोदामों का निर्माण किया जा रहा है। राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध करवाई जा रही वित्तीय सहायता से ये गोदाम निर्मित किये जा रहे हैं। गोदामों को किराये पर उपलब्ध कराने के लिए एसओपी में प्राथमिकता क्रम में दो अलग-अलग विकल्प दिये गए हैं।

राजपाल ने बताया कि प्रथम विकल्प के अनुसार पहली प्राथमिकता में किसानों के हितों को ध्यान में रखते हुए अन्न भण्डारण/ मिड डे मील/ उचित मूल्य दुकान (अन्न)/ अन्य कृषि उत्पाद/ अन्य वैकल्पिक उत्पाद आदि के लिए गोदाम किराये पर दिया जा सकेगा। द्वितीय प्राथमिकता के अनुसार, यदि खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग द्वारा उपभोग आधारित विकेन्द्रीकृत भण्डारण की उपलब्धता के उद्देश्य से गोदाम की मांग की जाती है, तो उसे प्राथमिकता दी जाएगी। तीसरी प्राथमिकता में आपातकालीन परिस्थितियों के दौरान खाद्यान्न उपलब्धता सुनिश्चित करने के उद्देश्य से खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग की आवश्यकतानुसार उसे प्राथमिकता दी जाएगी। इसी प्रकार, चौथी प्राथमिकता में यदि सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत ब्लॉक स्तर पर आमजन के लिए निर्धारित सामग्री के भण्डारण का निर्णय लिया जाता है, तो भण्डारण हेतु खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग को प्राथमिकता दी जाएगी। जबकि, पांचवी प्राथमिकता में गोदाम बाजार दर पर अनुमोदित किराये पर नहीं लिये जाने की संभावना होने पर सरकारी विभाग/ संस्था अथवा सहकारी संस्था द्वारा निजी क्षेत्र की प्रतिष्ठित कम्पनी/ फर्म/ सदस्य को अनुमोदित किराये पर गोदाम उपलब्ध करवाया जा सकेगा।

प्रमुख शासन सचिव ने बताया कि द्वितीय विकल्प की पहली प्राथमिकता में समिति के सदस्य/ सदस्यों को भण्डारण की आवश्यकता होने पर उचित दर पर भण्डारण की सुविधा उपलब्ध करवाई जा सकेगी। द्वितीय प्राथमिकता में समिति के कार्यक्षेत्र के कृषकों को समर्थन मूल्य पर खरीद प्रारम्भ होने तक लिए उनकी फसल को रखने के लिए गोदाम उपलब्ध कराया जा सकेगा। जबकि, तीसरी प्राथमिकता में सीमेंट, मशीनरी, खाद-बीज के लिए गोदाम किराये पर दिया जा सकेगा।

राजपाल ने बताया कि समिति द्वारा गोदाम किराये पर देने के लिए पूरे वर्ष का एक कैलेण्डर तैयार किया जाएगा। गोदाम किराये पर दिए जाने से पूर्व वार्षिक कैलेण्डर, किराया निर्धारण एवं अन्य प्रस्ताव का खण्डीय अतिरिक्त रजिस्ट्रार की अध्यक्षता में गठित कमेटी द्वारा अनुमोदन किया जाएगा। न्यूनतम एक वर्ष एवं अधिकतम तीन वर्ष के लिए पंजीकृत किरायानामा के माध्यम से गोदाम किराये पर दिया जाएगा।

प्रमुख शासन सचिव ने बताया कि नैफेड तथा एनसीसीएफ द्वारा भी विश्व की सबसे बड़ी विकेन्द्रीकृत अन्न भण्डारण योजना के तहत निर्मित किए जा रहे इन गोदामों को किराये पर लिए जाने के लिए आश्वस्त किया गया है। उन्होंने बताया कि नैफेड द्वारा श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चित्तौड़गढ़, सीकर, अलवर, जयपुर, राजसमंद, टोंक, सवाईमाधोपुर, झुंझुनूं तथा उदयपुर जिले के 58 गोदामों को किराये पर लेने हेतु आश्वस्त किया गया है। जबकि, एनसीसीएफ की ओर से भी गोदामों को किराये पर लेने हेतु विभाग को पत्र लिखकर आश्वस्त किया गया है।

''वंदे गंगा'' जन अभियान के तहत जल संरक्षण का संकल्प लिया

श्रमदान, दीप प्रज्वलन और जन भागीदारी से जल बचाने का संदेश गूंजा

नसीराबाद, (निसं)। गंगा दशहरा के उपलक्ष में नसीराबाद नगरपालिका द्वारा आयोजित वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के तहत एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन में प्रशासन, नगरपालिका और आमजन ने मिलकर जल संरक्षण और स्वच्छता का संदेश दिया। कार्यक्रम की शुरुआत उपखंड अधिकारी देवीलाल यादव, अधिशासी अधिकारी पिंटू लाल जाट और तहसीलदार ममता यादव द्वारा डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर की गई। इसके बाद तीनों अधिकारियों ने स्वयं श्रमदान कर सफाई अभियान में भाग लिया, जिससे समाज को स्वच्छता और जल बचाने का सीधा संदेश मिला। लाल डिग्गी तालाब पर दीप प्रज्वलित कर सरोवर की पूजा की गई और सभी उपस्थित लोगों को जल संरक्षण की शपथ दिलाई गई।

उपखंड अधिकारी देवीलाल यादव, अधिशासी अधिकारी पिंटू लाल जाट और तहसीलदार ममता यादव ने स्वयं श्रमदान कर सफाई अभियान में भाग लिया।

- **डॉ. भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर अभियान की शुरुआत की गई**

उपखंड अधिकारी ने बताया कि नसीराबाद क्षेत्र में जल संरक्षण को लेकर कई कदम उठाए जा रहे हैं। इस क्रम में 19 जून 2025 को खापरी रोड, तलाई और हाउसिंग बोर्ड क्षेत्र में जल स्त्रोतों की सफाई और मरम्मत की जाएगी। साथ ही पौधारोपण, रेन वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम की सफाई, महापुरुषों की मूर्तियों की सफाई, नो प्लास्टिक डे का आयोजन और कचरा निस्तारण जैसे कार्य भी किए जाएंगे।

इस अवसर पर नगरपालिका के सभी अधिकारी, कर्मचारी, स्वयं सहायता समूहों की महिलाएं, स्वच्छता मित्र, और स्थानीय नागरिक मौजूद रहे। कार्यक्रम ने यह स्पष्ट किया कि जल संरक्षण केवल सरकारी कार्यक्रम नहीं, बल्कि हर नागरिक का दायित्व है।

इस आयोजन में नवीन रियाड, महेन्द्र सिंह चौहान, ललिता वैष्णव, लीलाधर भाटी, आकाश घुस्सर, पूजा गुर्जर, अक्षय सोनी, प्रासुख रियाड, उपदेश कुमार शर्मा, मनीष कुमार मीणा, सुरेन्द्र कुमार जाट, रविकांत लाखन सहित कई कर्मचारी और सामाजिक कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

अजमेर जेएलएन अस्पताल की ओपीडी से बच्चा लापता

अस्पताल स्टाफ की सतर्कता से बच्चा मिल गया

अजमेर, (कासं)। संभाग के सबसे बड़े जवाहरलाल नेहरू अस्पताल में उस समय हडक़ंप मच गया, जब ओपीडी से गुरुवार सुबह साढ़े तीन साल का बच्चा गुम होने की सूचना मिली। अस्पताल प्रशासन को सूचना मिलते ही प्रशासन हरकत में आया और अस्पताल के सभी चारों गेट बंद करवा दिए। गार्ड और प्रशासन ने बच्चे की पूरे हॉस्पिटल में तलाश की, लेकिन गनीमत रही कि अस्पताल स्टाफ की सतर्कता से बच्चा सही सलामत मिल गया। तब अस्पताल प्रशासन ने राहत की सांस ली। और बच्चे को माता-पिता के सुपुर्द कर दिया।

- **ओपीडी में भीड़ ज्यादा होने के कारण बच्चा अपने माता-पिता से बिछड़ गया था**

जानकारी के अनुसार फॉयसागर रोड निवासी चंदन यादव अपनी पत्नी के साथ डॉक्टर को दिखाने के लिए जेएलएन हॉस्पिटल की ओपीडी में पहुंचे थे। इस दौरान दोनों पति-पत्नी अपने साढ़े तीन साल के बच्चे को भी साथ लाए थे। बच्चा भीड़ ज्यादा होने के कारण माता-पिता से बिछड़ गया। मां ने जब अपने बेटे को नहीं देखा तो पति को उसकी जानकारी दी गई। पति-पत्नी हॉस्पिटल अधीक्षक के कक्ष में पहुंचे और बच्चा गुम होने की जानकारी दी। कुछ ही देर में बच्चे के गायब होने का पता चलते ही मां का बुरा हाल हो गया। वह रोती-बिलखती इधर-उधर अपने बेटे को तलाशने लगी। पिता भी हड़बड़ाते हुए अस्पताल परिसर में पुलिस चौकी पहुंचा और बच्चे की गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज करवाई।

जेएलएन अस्पताल डॉ. अरविंद खरे, प्राचार्य डॉ. सामरिया आदि ने बच्चे को मां को सौंपा।

अस्पताल के गेट कराए बंद :- वहीं अस्पताल अधीक्षक डॉ. अरविंद खरे ने सूचना मिलते ही गेट बंद करवाए गए और सुरक्षा गार्ड को अलर्ट किया। सीसीटीवी कैमरों की भी मदद ली गई। हर वार्ड, कॉरिडोर, सीढ़ियों और बाथरूम में भी गार्डों ने तलाशी अभियान शुरू कर दिया। प्रिंसिपल डॉक्टर अनिल सामरिया ने कहा कि अस्पताल इलाज के लिए आने वाले परिजन जरूरत पड़ने पर ही अपने बच्चों को साथ लेकर आए, वरना उन्हें घर पर ही रखें क्योंकि अस्पताल में संभाग भर से से मरीज दिखाने आते हैं, इसलिए भीड़ अधिक रहती है।

बच्चे को गले लगाकर रोई मां :- करीब आधे घंटे की मशक्कत के बाद एक सुरक्षा गार्ड को बच्चा अस्पताल के फर्स्ट फ्लोर पर अकेला घूमता हुआ मिल गया। बच्चे को सुरक्षित देखकर पूरे अस्पताल प्रशासन और परिजन ने राहत की सांस ली। मां पूजा ने बताया कि वह डॉक्टर के पास जांच करवाने के लिए गई थी। तभी वह अपने पिता के साथ था। इस दौरान भीड़ में बेटे का हाथ छूट गया। जब बेटा पास नहीं था तब ऐसा लगने लगा कि मेरा जीना ही बेकार है। मैं अपने बाबू को भी संभाल नहीं पाई। मां ने बताया कि मैं अब अपने बेटे को कभी भी अपने से दूर नहीं करूंगी। मैं बच्चों के बिना जी नहीं सकती थी। अब से उसे एक मिनट भी दूर नहीं रखूंगी। मां ने रोते हुए बेटे को गले लगा लिया और पिता ने अस्पताल स्टाफ का धन्यवाद कहा।

डॉ. अरविंद खरे, अधीक्षक जेएलएन अस्पताल का कहना है कि अस्पताल की ओपीडी से बच्चे के लापता होने की सूचना मिली थी, अस्पताल के मुख्य गेटों को बंद करा तलाशी अभियान शुरू कर दिया गया था। गनीमत रही कि बच्चा सही सलामत मिल गया।

सवारियों से भरी बस पर हमला, यात्री घायल

पाली, (नि.सं.)। पाली में बुधवार देर शाम को सवारियों से भरी एक निजी बस पर लाठी-सरिया लेकर आए 5-6 युवकों ने हमला कर बस में बुरी तरह तोड़फोड़ की। अचानक हुए इस हमले में यात्री घबराए गए। दो यात्रियों को चोटें भी आई। मामले में पुलिस ने 4 युवकों को हिरासत में लिया है। इधर घबराए यात्री दूसरी बस का इंतजार करते नजर आए।

- **हमले में बस में सवार करीब 32 यात्री घबरा गये,**
- **आरोप है कि रूट पर बस चलाने को लेकर दूसरे ट्रेवल्स वाले ने हमला करवाया है**

पुलिस ने मामले में चार युवकों को हिरासत में लिया।

पाली के टीपी नगर थाने के ओमप्रकाश चौधरी ने बताया कि सोमनाथ ट्रेवल्स की एक बस पीसांगन से सूरत जा रही थी। नया गांव ओवरब्रिज के पास बुधवार रात करीब साढ़े आठ बजे बस जैसे ही स्पीड ब्रेकर पर स्लो हुई, 5-6 युवक लाठी-सरिया लेकर दौड़ते हुए आए और बस के शीशे तोड़ने लग गए। अचानक हुए इस हमले में बस में सवार करीब 32 यात्री घबरा गए और सीट छोड़ कर बस की गैलेरी में आ गए। फिर भी 2 यात्री चोटिल हो गए। हमले के कारण बस में सवार यात्री घबरा गए और जोर जोर से चिल्लाने लगे। सूचना पर ट्रांसपोर्ट नगर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और भाग रहे 4 युवकों को पकड़ा। जिन्होंने अपना नाम गोटन (मेड़ता सिटी) निवासी नरेंद्र पुत्र हरिसिंह, कसवा की ढाणी गोटन (मेड़ता सिटी) के सुनील पुत्र रामरख, जेके रोड गोटन (मेड़ता सिटी) निवासी लक्ष्मण पुत्र ओमाराम और टुकलिया गोटन (मेड़ता सिटी) निवासी दीनाराम पुत्र मांगीलाल बताया। जिन्हें गिरफ्तार कर पाली के बांगड़ हॉस्पिटल से मेडिकल करवाया। पुलिस को प्रारंभिक जांच में सामने आया कि इस रूट पर चलने वाली दूसरी ट्रेवल्स वाले ने रूट को लेकर रंजिश के चलते कुछ युवकों को भेजे कर हमला करवाया। पुलिस पूरे मामले की जांच में जुटी है।

अफीम सहित एक गिरफ्तार

टोंक, (निसं)। जिला पुलिस अधीक्षक विकास सांगवान के निर्देशन में पुलिस थाना मेहन्दवास द्वारा कार्रवाई को अंजाम दिया गया। इस दौरान राजेश कुमार विद्यार्थी वृताधिकारी टोंक व मेहन्दवास थानाधिकारी ओमप्रकाश चौधरी के नेतृत्व में गठित टीम द्वारा गश्त के दौरान एनएच-52 मेहन्दवास कट पर रात्रि के समय में एक व्यक्ति के पास काला बैग होने पर शक होने पर उसकी तलाशी की गई। इस दौरान आरोपी सोनू राव पुत्र राजकुमार राव के कब्जे से 3 किलो 211 ग्राम मादक पदार्थ अफीम मिलने पर उसे गिरफ्तार किया।

वृद्ध महिला के साथ ठगी

अजमेर, (कासं)। नया बाजार निवासी एक वृद्धा के साथ ठगी की वारदात सामने आई है। शातिर ठग युवती ने वृद्धा को पेंशन दिलाने का झांसा देकर ई-रिक्शा में बैठाकर पुष्कर ले जाकर दो लाख रुपए कीमत के सोने के आभूषण हड़प लिए। मामले की शिकायत कोतवाली थाने में पीड़िता के बेटे ने दर्ज कराई गई है। जानकारी के अनुसार नया बाजार निवासी रामवतार सोनी ने कोतवाली थाने में मुकदमा दर्ज करवाते हुए बताया कि उसकी मां विजय लक्ष्मी प्रतिदिन सुभाष उद्यान में टहलने जाती हैं। गुरुवार को उद्यान में उन्हें एक युवती मिली, जिसने वृद्धा से दोस्ताना बातचीत शुरू कर दी। बातचीत के दौरान युवती ने वृद्धा को सरकारी पेंशन दिलवाने का झांसा दिया और अपनी बातों में उलझाकर उसे ई-रिक्शा में बैठाकर पुष्कर ले गई। सोनी ने बताया कि छोटे धड़े की नसियां के पास युवती ने वृद्धा के करीब दो लाख रुपए कीमत के सोने के आभूषण उतरवा लिए और पर्स में रखने का बहाना बनाया। इसके बाद वह वृद्धा को पुष्कर स्थित एक बैंक के पास कुछ देर तक बैठाए रही। बाद में युवती वृद्धा को अजमेर ले आई।

हनुमान नगर थाना के सिपाही पुलिस महकमे की साख को धूमिल करने पर उतारू

देवली, (निसं)। यहां शहर के निकटवर्ती हनुमान नगर थाना क्षेत्र में सरपट दौड़ रहे अवैध बजरी से भरे ट्रैक्टरों की शिकायत पर कॉलोनी वासियों को गैर जिम्मेदारना जवाब देकर पुलिस के सिपाही मुकेश कुमार ने पुलिस महकमें की साख कई गंभीर सवालिया निशान खड़े कर दिए हैं। हनुमान नगर पुलिस थाना में तैनात सिपाही मुकेश कुमार का कहना है कि बजरी से भरी ट्रैक्टर ट्रॉलीयों को रोकने का काम पुलिस का नहीं है। अगर जनता को इससे परेशानी है तो स्वयं ट्रेलर लाकर रोड के बीच में खड़ा कर देवे।

- **अवैध बजरी परिवहन को रोकने की शिकायत पर सिपाही बेतुका और गैर जिम्मेदारना जवाब दे रहे हैं**
- **आमजन से कहते हैं कि अवैध बजरी परिवहन से पुलिस का क्या लेना देना, तकलीफ हो तो जनता खुद रोड पर ट्रेलर लगा के रोक लेवें**

पुलिसकर्मी द्वारा ऐसे जवाब देने पर सवाल यह उठता है कि क्या आमजन से मिलने वाली शिकायतों को पर राहत और आम नागरिक की सुरक्षा कि जिम्मेदारी आखिरकार किसकी है। इसलिए कि यहां तो पुलिस अवैध बजरी परिवहन की फिक्रमंद बन गई है। ऐसे में अब यहां जनता शिकायत लेकर किसके पास जाए क्योंकि यहां पुलिस अवैध बजरी परिवहन पर कुछ सुनने को तैयार ही नहीं आखिर क्यों? ऐसे हालातों पर सोमवार को मामला यह सामने आया कि इन दिनों हनुमान नगर पुलिस थाना क्षेत्र के कोटा रोड पर स्थित कॉलोनी के मार्गो पर से अवैध बजरी से भरे ट्रैक्टर ट्रोलियां सरपट दौड़ रही हैं। सरपट दौड़ रहे इन ट्रैक्टरों ट्रॉलियों से गंभीर हादसा होने का भय कॉलोनीवासियों को काफी समय से सता रहा है। लेकिन पुलिस ऐसे मामले में कॉलोनी वासियों को राहत पहुंचाने की बजाय गैर जिम्मेदारना जवाब देकर उक्त मामले में कार्रवाई करने से पल्ला झाड़ते हुए दिखाई पड़ी है। ऐसे में नाम नहीं छापने की शर्त पर कॉलोनी वासियों ने बताया कि इस मामले और हालातों कि जानकारी क्षेत्रवासियों ने कई बार हनुमान नगर थाना पुलिस तक पहुंचाई, लेकिन पुलिस ने ऐसे हालातों पर कार्रवाई करने की जहमत आज तक नहीं उठाई। इससे साफ जाहिर होता है कि बजरी माफिया और पुलिस के बीच मिलीभगत बनी हुई है।

देवली में सरपट दौड़ते बजरी भरे ट्रैक्टर ट्रॉली। (फाइल फोटो)

मुकेश कुमार, सिपाही, पुलिस थाना हनुमान नगर, जिला भीलवाड़ा का कहना है कि अरे भई आप कौन हो क्या कहना चाह रहे हो ट्रेलर लगा दीजिए आप। बजरी के ट्रैक्टरों से हमारा क्या लेना देना, हमारा क्या काम है। भई क्या लेना देना। कुएं में गिरे यह सारे के सारे ट्रैक्टर वाले। यह कौन चला रहा है। आप खुद मालूम कर खुद रोक लो।

लोको पायलट की सूझबूझ से युवक बचा

जोधपुर, (कांस)। जोधपुर में बुधवार देर रात ट्रेन के लोको पायलट की सूझबूझ की वजह से एक युवक की जान बच गई। ओसियां में रेलवे ट्रैक पर एक युवक बेहोश पड़ा था। उसके दोनों हाथ बंधे थे। यह देखकर लोको पायलट ने इमरजेंसी ब्रेक लगाए। ट्रेन बेहोश पड़े युवक से कुछ इंच पहले जाकर रुकी। ओसियां थानाधिकारी राजेंद्र चौधरी ने बताया कि जोधपुर जीआरपी थाने से जीरो नंबर एफआईआर मिली थी। उसी आधार पर केस दर्ज किया है। पीड़ित कानाराम पुत्र कुशालाराम, निवासी इस्लामिया मदरसा के पास नयापुरा ओसियां ने बताया कि वह फैक्ट्री में काम करता है। साल 2024 में एक आदिवासी रैली के दौरान उसकी दोस्ती खींवसर निवासी अजीत सिंह से हुई थी।

श्रीगंगानगर में संदिग्ध गुब्बारा मिला

श्रीगंगानगर, (निसं)। भारत-पाकिस्तान सीमा से सटे श्रीगंगानगर जिले के घमुड़वाली थाना क्षेत्र में एक बार फिर संदिग्ध वस्तु मिलने से सुरक्षा एजेंसियां सतर्क हो गई हैं। देर रात पदमपुर क्षेत्र की चक 3 पीपी भूमि पर किसान के खेत में पाकिस्तानी एयरलाइंस का लोगो लगा एक बड़ा हरा गुब्बारा मिला, जिस पर उर्दू और अंग्रेजी में कुछ लिखा हुआ था। घटना के बाद पुलिस और खूफिया विभाग अलर्ट हो गए हैं।

जानकारी के अनुसार गुब्बारा चक 3 पीपी निवासी पतराम पुत्र मंगलाराम नायक के खेत में मिला। खेत की निगरानी के लिए गए 3 पीपी निवासी किसान मदनलाल ने सबसे पहले इसे देखा। जब पास जाकर उसने गुब्बारे पर लिखावट देखी तो उसे संदेह हुआ। मदनलाल ने घमुड़वाली थाना पुलिस को सूचना दी। सूचना मिलते ही घमुड़वाली थाने से हेड कॉन्स्टेबल सुरेन्द्र कुमार, कॉन्स्टेबल हरिराम और कॉन्स्टेबल श्यामसुंदर बिश्नोई मौके पर पहुंचे। पुलिस टीम ने खेत का निरीक्षण किया और संदिग्ध गुब्बारे को कब्जे में लेकर सुरक्षा प्रोटोकॉल के तहत उसे सील किया। गुब्बारे को थाने के मालखाने में सुरक्षित रूप से रखवा दिया गया है। पुलिस की प्राथमिक जांच में किसी तरह की संदिग्ध सामग्री या उपकरण गुब्बारे के साथ नहीं मिला, लेकिन पाकिस्तान से जुड़े लोगो और लिखावट के कारण मामले को गंभीरता से लिया जा रहा है। थानाधिकारी ने इसकी जानकारी उच्चाधिकारियों और खुफिया एजेंसियों को भी दी, जिनके निर्देश पर विस्तृत जांच की जा रही है।

अवैध शराब ठेका चलाने पर ग्रामीणों में आक्रोश

भरतपुर, (निसं)। भरतपुर जिले के बयाना उपखंड क्षेत्र के गांव बिडयारी से नगला पुरोहित जाने वाले मार्ग पर कंटेनर में अवैध रूप से शराब ठेका चलाने के विरोध में बड़ी संख्या में ग्रामीण जिला कलेक्ट्रेट एवं जिला आबकारी कार्यालय पहुंचे, जहां नारेबाजी करने के साथ साथ अधिकारियों को ज्ञापन दिया और अवैध शराब ठेके को तत्काल हटाने की मांग की। हालांकि इससे पहले उपखंड अधिकारी को भी ग्रामीण ज्ञापन दे चुके हैं, लेकिन जब समस्या का हल नहीं हुआ तो जिला अधिकारियों को ज्ञापन देने को मजबूर हुए हैं। ग्रामीणों का कहना है कि यह कंटेनर गोदाम के नाम पर लगाया गया है, लेकिन इसकी आड़ में अवैध रूप से शराब की बिक्री हो रही है। इस रास्ते से प्रतिदिन छात्र-छात्राएं, महिलाएं, मजदूर, दुकानदार और अन्य आमजन आना-जाना करते हैं।

पेट्रोल पंप सेल्समैन की बदमाशों ने गोली मारकर हत्या की

दूदू, (निसं)। निकटवर्ती मरवा गांव के पास संचालित पेट्रोल पंप पर कार्यरत सेल्समैन की दो बदमाशों ने पेट्रोल के पैसे मांगने की बात को लेकर गोली मार कर हत्या कर दी।

पंप संचालक दातार सिंह ने पुलिस थाने में रिपोर्ट दर्ज करवा कर अवगत कराया कि रात्रि को पेट्रोल पंप पर काले रंग की तर गाड़ी में दो जने सवार होकर आए तथा सेल्समैन शैतान सिंह से पेट्रोल भरवा लिया। पैसे मांगने की बात पर गाली-गलौच कर सिर पर गोली मारकर फरार हो गए। घटना की सूचना नरेना थाने में दी। मौके पर थाना प्रभारी धर्मसिंह गुर्जर मय जाप्ते के पहुंचे तथा घटना के बारे में उच्च अधिकारियों को अवगत कराया। शैतान सिंह को संत दादू दयाल राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में लाया गया जहां चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया। बदमाशों द्वारा इसी दौरान पानवा कला में भी फायरिंग की वारदात को अंजाम दिया था। पुलिस ने नाकेबंदी कर बदमाशों को पकड़ने का प्रयास किया लेकिन सफलता नहीं मिली। परिजनों एवं आसपास के ग्रामीणों की भीड़ चिकित्सालय में जमा हो गई तथा अपराधियों को पकड़ने एवं पंप संचालक से मुवावजे की मांग की गई। मौके पर अ. पुलिस अधीक्षक शिवलाल बैरवा, पुलिस अधीक्षक अनुपम मिश्रा भी पहुंचे।

सेना के जवान विक्रम सिंह का अंतिम संस्कार

सूरजगढ़, (निसं)। थाना क्षेत्र के पालोता का बास गांव में गुरूवार को सेना के जवान विक्रम सिंह का नम आंखों से अंतिम संस्कार किया गया। अंतिम संस्कार से पहले जब विक्रम सिंह की पार्थिव देह घर पहुंची तो पूरा माहौल गमगीन हो गया। विक्रम सिंह की 17 साल की बेटी साक्षी ने साफ कह दिया कि जब तक आरोपियों को फांसी की सजा नहीं हो जाती, ना तो वे कहीं जाएंगे और अपने पिता की पार्थिव देह ले जाने देंगे।

इसी दौरान साक्षी का छोटा भाई 14 वर्षीय निशांत भी भावुक हो गया। उसने भी अपने पिता को फांसी की सजा देने की मांग की और दो-तीन बार चिल्लाते हुए कहा कि मेरे पिता अब वापिस नहीं आएंगे और कहते-कहते रो पड़ा। जिसे मौजूद लोगों ने सांत्वना दी और सभी बच्चों को पार्थिव देह के अंतिम दर्शन कर साइड में ले जाया गया। इसके बाद जब अंतिम यात्रा रवाना हुई तो दोनों बच्चों ने अपने पिता को कांधा दिया और सेल्यूट भी किया। इससे पहले बीती रात को सूरजगढ़ थाने के बाहर धरने पर बैठे ग्रामीणों ने चिड़ावा डीएसपी विकास धींधवाल की समझाइश के बाद पार्थिव देह लेने और अंतिम संस्कार करने पर राजी हुए। गुरूवार सुबह राजकीय जिला बीडीके अस्पताल में रखी पार्थिव देह को ले जाया गया। सेना से आए फूलों से सजे ट्रक में पार्थिव देह को रखकर जब गांव ले जाया जा रहा था तो बुहाना-सूरजगढ रोड पर एक बार फिर ग्रामीण आक्रोशित हो गए। उन्होंने काकोड़ा पेट्रोल पंप के पास गाड़ियों को सड़क पर लगाकर जाम लगा दिया। मौके पर मौजूद एसएचओ हेमराज मीणा और सेना के अधिकारियों ने समझाइश की और करीब एक घंटे बाद जाम खुला। अंतिम संस्कार से पहले गांव के लोगों ने विक्रम सिंह के अंतिम दर्शन करते हुए श्रद्धांजलि दी। वहीं सेना से आई टुकड़ी ने गार्ड आफ आनर दिया। इस मौके पर बड़ी संख्या में मौजूद पूर्व सैनिकों ने भी आरोपियों को गिरफ्तार करने की मांग की।

पिता विक्रम सिंह की पार्थिव देह को बेटी साक्षी और बेटे निशांत ने कांधा दिया।

विक्रम सिंह पुत्र जगमाल सिंह निवासी पालोता का बास फिलहाल अबोहर पंजाब में 15 राज राइफल्स में कंपनी हवलदार मेजर पद पर तैनात थे। जो सात जून को छुट्टी पर गांव आए थे।

- **अंतिम संस्कार के समय जवान की बेटी और बेटे ने कहा कि पहले हत्यारों को फांसी दो**

10 जून मंगलवार रात को वह ड्यूटी पर जाने के लिए घर से निकले थे। रास्ते में स्कॉर्पियो सवार गांव के ही दो युवकों ने उन्हें जबरन गाड़ी में बैठाया और खुद के घर ले जाकर बेरहमी से मारपीट की। रात को परिजनों को सूचना मिली तो उन्होंने विक्रम सिंह को गांव के ही मकान के बाहर से अस्पताल तक पहुंचाया, जहां से उन्हें झुंझुनूं रैफर किया गया। झुंझुनूं में ईलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। बुधवार को भी इस मामले में आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग को लेकर दिनभर धरना प्रदर्शन चला। इस मामले में पुलिस ने दो जनों को राउंडअप किया है। जिनसे पूछताछ की जा रही है। परिवार में विक्रम सिंह की पत्नी अमिला है। जबकि दो जुड़वा बेटियां 17 साल की साक्षी और छवि है। वहीं बेटा 14 साल का निशांत है।

गोयदानी देदानसर तालाब का जीर्णोद्धार कार्य शुरू

गोयदानी माहेश्वरी समाज के देदानसर तालाब पर जीर्णोद्धार कार्य के दौरान राधेश्याम गोयदानी, बृजरतन गोयदानी, कैलाश नाहर, ग्वालदास सांवल उपस्थित रहे।

जैसलमेर, (नि.सं)। वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान के तहत जिले में संचालित किए जा रहे वर्षा जल संरक्षण कार्यों की कड़ी में बुधवार को गोयदानी माहेश्वरी समाज के देदानसर तालाब पर जीर्णोद्धार कार्य प्रारम्भ किया गया। मातृभूमि से कर्मभूमि अभियान के तहत इस तालाब का जीर्णोद्धार कार्य जैसलमेर विकास समिति द्वारा प्रारम्भ करवाया गया है। भू-जल विभाग के मुख्य वैज्ञानिक डॉ. एन.डी. इणखिया ने बताया कि इस दौरान जैसलमेर शहर के इस ऐतिहासिक प्राचीन तालाब की आगोर में बबूल की झाड़ियां, कूड़ा कचरा एवं मलबा डालने के कारण इसका मूल स्वरुप बिगड़ गया था। जिसे अभियान के तहत मशीनों के द्वारा हटाने का कार्य शुरू किया गया। इस कार्यक्रम की शुरुआत तालाब के पूजन एवं श्रमदान के साथ की गई। इस अवसर पर समाजसेवी चंद्रप्रकाश शारदा, राधेश्याम गोयदानी, बृजरतन गोयदानी, कैलाश नाहर, ग्वालदास सांवल सहित माहेश्वरी समाज के अन्य प्रबुद्धजन उपस्थित रहे।

वेबस्टर पूरी तरह से तैयार लग रहे थे और 'तैयार' बिल्कुल वही शब्द है जो वेबस्टर ने अपने सीमित टेस्ट करियर में अब तक करके दिखाया है। दवाब में वेबस्टर की पारी उनके महत्व को दर्शाती है। - रिंकी पोंटिंग

पूर्व ऑस्ट्रेलियाई क्रिकेटर, ऑलराउंडर ब्यू वेबस्टर की प्रशंसा करते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

कुलदीप हांडू

जम्मू-कश्मीर के एकमात्र द्रोणाचार्य पुरस्कार विजेता कुलदीप हांडू को डोपिंग रोधी अनुशासन पैनल का सदस्य बनाया गया है। राष्ट्रीय डोपिंग रोधी एजेंसी (नाडा) द्वारा जारी आदेश के अनुसार, कुलदीप हांडू को डोपिंग रोधी नियम, 2021 के तहत दो साल की अवधि या राष्ट्रीय डोपिंग रोधी अधिनियम 2022 के लागू होने तक, जो भी पहले हो, डोपिंग रोधी अनुशासन पैनल (एडीडीपी) के खेल सदस्य के रूप में मंजूरी दी गई है। हांडू ने कहा, नाडा के एडीडीपी पैनल का सदस्य बनना मेरे लिए सम्मान की बात है और मुझे इसका सौभाग्य मिला है।

क्या आप जानते हैं ?... क्रिस्टियानो रोनाल्डो सबसे अधिक गोल करने वाले खिलाड़ी हैं, 807 गोल के साथ, और लियोनेल मेसी के पास सबसे अधिक 45 ट्रॉफियां है।

कमिंस की कातिलाना गेंदबाजी से ऑस्ट्रेलिया को मिली बढ़त

लंदन, 12 जून। पैट कमिंस (28 रन पर छह विकेट) की कातिलाना गेंदबाजी की बदौलत आस्ट्रेलिया ने आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल मैच के दूसरे दिन गुरुवार को दक्षिण अफ्रीका की पहली पारी को 138 रन पर समेट कर 74 रन की महत्वपूर्ण बढ़त हासिल कर ली। आस्ट्रेलिया ने अपनी पहली पारी में 212 रन बनाये थे। कमिंस ने आज का पहला विकेट दक्षिण अफ्रीकी कप्तान टेम्बा बवूमा (36) का लिया और इसके साथ ही वह 300 टेस्ट विकेट लेने वाले गेंदबाजों की फेहरिस्त में शामिल हो गये। इसके बाद भी कमिंस की विकेट लेने की भूख कम नहीं हुयी और उन्होने विकेटकीपर बल्लेबाज काइल वेरेन (13),मार्कं यानसन (शून्य) को एक ही ओवर में निपटा दिया। कमिंस ने कैगिसो रबाडा के तौर पर अपना छठा विकेट हासिल किया।

दक्षिण अफ्रीका के लिये डेविड बेडिंघम (45) सर्वाधिक निजी योगदान देने वाले बल्लेबाज बने। उनका भी खेल कमिंस ने खत्म किया। सबसे पहले तो ऑस्ट्रेलिया के कप्तान पैट कमिंस ने अपनी टीम को डब्ल्यूटीसी 2025 के फाइनल में आगे किया। फिर उन्होंने रिकॉर्ड्स पर रिकॉर्ड्स बनाए। पैट कमिंस डब्ल्यूटीसी फाइनल में फाइफर यानी पारी में 5 विकेट लेने वाले पहले गेंदबाज बन गए हैं। हालांकि, इस मैच में उन्होंने 6 विकेट निकाले और रन सिर्फ 28 दिए। इसके बाद वे वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप 2023-25 के चक्र में जसप्रीत बुमराह को पछाड़कर सबसे ज्यादा विकेट चटकाने वाले गेंदबाज बन गए। बुमराह ने इस चक्र में 77 विकेट निकाले थे, लेकिन कमिंस के विकेटों

की संख्या 78 पहुंच गई हैं। जैसे ही कमिंस को इस पारी का छठा विकेट मिला तो टेस्ट क्रिकेट में उनकी विकेटों के मामले में ट्रिपल सेंचुरी भी पूरी हो गई। वे ऐसा करने वाले ऑस्ट्रेलिया के 8वें गेंदबाज बन गए। इसके अलावा कप्तान के तौर पर वह 9 या इससे ज्यादा बार पांच विकेट लेने वाले तीसरे गेंदबाज बन गए। इस मामले में उन्होंने भारत के बिशन सिंह बेदी को पीछे छोड़ा है। इमरान खान और रिची बेनोड ने क्रमश: 12 और 9 बार ये कमाल किया था। करियर में 14वीं बार उन्होंने 5 या इससे ज्यादा विकेट अपने टेस्ट करियर के लिए हैं। इस समय ऑस्ट्रेलिया थोड़ी सी कमजोर लग रही थी, लेकिन इस मैच में पैट कमिंस ने वापसी कराई।

ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी को कम स्कोर पर समेटा जा सकता था : रबाडा

लंदन, 12 जून। दक्षिण अफ्रीका के स्टार गेंदबाज कैगिसो रबाडा का मानना है कि आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में आस्ट्रेलिया की पहली पारी को सस्ते में निपटाया जा सकता था। लॉर्ड्स में दक्षिण अफ्रीकी कप्तान टेम्बा बावुमा ने टॉस जीतकर गंदबाजी करने का फैसला किया, जिसके बाद नई गेंद से जिम्मेदारी कैगिसो रबाडा पर आ गई और इस अनुभवी खिलाड़ी ने अल्टीमेट टेस्ट में अपनी छाप छोड़ने में बहुत कम समय लिया। ऑस्ट्रेलिया के सलामी बल्लेबाज उस्मान ख्वाजा और कैमरून ग्रीन को आउट करते हुए रबाडा ने टेस्ट मैचों में अपना 17वां पांच विकेट हॉल हासिल किया। उनके इस स्पैल की मदद से दक्षिण अफ्रीका ने गत चैंपियन को 212 रनों पर समेट दिया लेकिन रबाडा का मानना है कि प्रोटियाज ऑस्ट्रेलियाई बल्लेबाजी को और भी पहले ध्वस्त कर सकते थे। लॉर्ड्स में दिन का खेल खत्म होने के बाद पत्रकारों से बात करते हुए तेज गेंदबाज ने कहा, 212 रनो की चुनौती को हम स्वीकार करेंगे। हमें लगा कि हमें उन्हें 160 पर रोक देना चाहिए था, लेकिन खेल इसी तरह चलता है। ऑस्ट्रेलिया के 146 रन पर पांच विकेट गिरने के बाद ब्यू वेबस्टर ने 72 रन की शानदार पारी खेलकर पहली पारी की कमान संभाली। रबाडा ने ऑलराउंडर की खूब प्रशंसा की, जिन्होंने अपनी पारी की शुरुआत में ही दक्षिण अफ्रीका की तेज गेंदबाजी को भांपकर अपनी रणनीति बदली। उन्होंने कहा, ऐसा लग रहा था कि वह किसी भी गेंद पर आउट हो जाएंगे, लेकिन मुझे लगता है कि उनके सकारात्मक इरादे ने उन्हें जीत दिलाई। रबाडा ने आखिरकार वेबस्टर को आउट किया और एलन डोनाल्ड को पछाड़कर प्रोटियाज के लिए टेस्ट मैचों में चौथे सबसे ज्यादा विकेट लेने वाले गेंदबाज बन गए। रबाडा ने इस उपलब्धि पर कहा, गेंदबाजों की इस सूची में शामिल होना खास है। एक खिलाड़ी के रूप में बड़े होते हुए और दक्षिण अफ्रीका का प्रतिनिधित्व करते हुए, मैं उन लोगों से प्रेरित हुआ हूं जो पहले आए हैं और उन्होंने बड़े मंच पर जो कुछ किया है, उसे देखा है। उन नामों में शामिल होना खास है और यह लंबे समय तक जारी रह सकता है। रबाडा दक्षिण अफ्रीका के लिए गेंदबाजों में सबसे बेहतरीन थे, वहीं ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाजों ने भी लॉर्ड्स में पहले दिन के अंत में अच्छी शुरुआत की। मिशेल स्टार्क, जोश हेजलवुड और कप्तान पैट कमिंस ने शानदार गेंदबाजी की और दक्षिण अफ्रीका ने दिन का खेल 43/4 पर समाप्त किया।

ऑस्ट्रेलिया की वापसी पर स्टीव स्मिथ खुश

लंदन, 12 जून। आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल मुकाबले के पहले दिन आस्ट्रेलिया की पहली पारी में अर्धशतकीय पारी खेलने वाले स्टीव स्मिथ ने कहा कि लॉर्ड्स में दक्षिण अफ्रीका के विकेट गिरने के बाद उनकी टीम की वापसी सराहनीय है। स्मिथ ने आईसीसी विश्व टेस्ट चैंपियनशिप फाइनल 2025 के पहले दिन 66 रनों की शानदार पारी खेली, लेकिन पार्ट-टाइम स्पिनर एडेन मार्करम का सामना करते समय उनका ध्यान भंग हो गया और गेंद स्लिप में चली गई। इसके बाद ऑस्ट्रेलिया की टीम 212 रनों पर आउट हो गई, जिसमें ब्यू वेबस्टर ने 72 रनों की पारी खेली। चायकाल के बाद अंतिम पांच विकेट सिर्फ 20 रन पर गिरने के बावजूद ऑस्ट्रेलिया ने वापसी की। मिचेल स्टार्क ने पहले ओवर में मार्करम को क्लीन बोल्ड करके लय हासिल की।

इसके बाद पैट कमिंस और जोश हेजलवुड ने भी एक-एक विकेट लिया, जिससे दक्षिण अफ्रीका का स्कोर चार विकेट पर 43 रन हो गया और खेल का रुख पूरी तरह से बदल गया। स्मिथ ने कहा मुझे लगता है कि हम अच्छी स्थिति में हैं, हमने बल्लेबाजी करते हुए बड़ा स्कोर बनाने के कुछ मौके गंवाए। विकेट ने पूरे दिन कुछ न कुछ दिया, लेकिन हम अच्छी स्थिति में हैं। 169 रन आगे हैं और उनके चार विकेट गिर चुके हैं। उम्मीद है कि सुबह भी कुछ ऐसा ही होगा, जैसा आज हुआ। यह एक बेहतर दिन हो सकता था, लेकिन हम अच्छी स्थिति में हैं। उन्होने कहा मुझे लॉर्ड्स में बल्लेबाजी करना पसंद है और जब मैं क्रीज पर था, तो मैंने अपना समय का आनंद लिया। जब मैं आउट हुआ, तो मुझे लगा कि गेंद नरम थी, लेकिन विकेट अभी भी कुछ दे रहा था और उम्मीद है कि कल भी ऐसा ही होगा।

आईएसएसएफ विश्वकप : सिफत कौर सामरा को महिलाओं की 50 मीटर राइफल थ्री पोजिशन में कांस्य पदक

नई दिल्ली, 12 जून। शीर्ष भारतीय निशानेबाज सिफत कौर सामरा ने गुरुवार को आईएसएसएफ विश्व कप में महिलाओं की 50 मीटर राइफल थ्री पोजिशन स्पर्धा में कड़ी प्रतिस्पर्धा के बीच कांस्य पदक जीता। महिलाओं की 50 मीटर राइफल थ्री पोजिशन स्पर्धा में मौजूदा विश्व रिकॉर्ड धारक 23 वर्षीय सिफत ने आठ निशानेबाजों के फाइनल में 453.1 अंक बनाए।

नॉर्वे की जीनेट हेग ड्यूस्टेड ने 466.9 अंक के साथ स्वर्ण पदक जीता जबकि स्विट्जरलैंड की एमिली जैगी ने 464.8 अंक के साथ रजत पदक हासिल किया। एमिली 590 अंक के साथ क्वालीफिकेशन में नौवें स्थान पर रहीं थी लेकिन फाइनल में जगह बनाने में सफल रहीं क्योंकि शीर्ष आठ में शामिल दो निशानेबाज केवल रैंकिंग अंक (आरपीओ) के लिए निशानेबाजी कर रहीं थी। क्वालीफिकेशन में सिफत ने नीलिंग, प्रोन और स्टैंडिंग के तीन चरण में कुल 592 अंक हासिल करके दूसरा स्थान हासिल किया। इस साल की शुरुआत में ब्यूनस आयर्स में हुए विश्व कप में उन्होंने स्वर्ण पदक जीता था जिससे 2024 पेरिस ओलंपिक में निराशाजनक प्रदर्शन के बाद इस सत्र की शानदार शुरुआत हुई। फ्रांस की अगाथे सेसिल कैमिली गिरार्ड ने भी क्वालीफिकेशन में 592 अंक हासिल किए लेकिन 10 अंक के अंदरूनी हिस्से (एक्स) में अधिक निशाने के कारण शीर्ष पर रहीं। स्विट्जरलैंड की ऑड्रे गोगनियाट क्वालीफिकेश में तीसरे स्थान पर रहीं।

खिलाड़ियों को तराशने के लिए टेनिस बाल क्रिकेट है अहम : वेंकटेश प्रसाद

दिल्ली, 12 जून। पूर्व भारतीय तेज़ गेंदबाज़ और लेजेंजजी टी10 लीग के चेयरमैन वेंकटेश प्रसाद ने टेनिस बॉल क्रिकेट की अहम भूमिका पर ज़ोर देते हुए कहा कि यह प्रारूप भविष्य के सितारों को तराशने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। टेनिस बॉल क्रिकेट लीग लेजेंजजी टी10 का शुभारंभ दो जून को हुआ था। टेनिस बॉल क्रिकेट को लेकर वेंकटेश प्रसाद ने बताया कि कैसे दुनिया के कई शीर्ष खिलाड़ियों ने अपने शुरुआती दिनों में टेनिस बॉल क्रिकेट खेलकर अपनी तकनीक निखारी। उन्होने कहा टेनिस बॉल क्रिकेट खिलाड़ियों को तराशने में बड़ी भूमिका निभाता है। दुनिया के कई टॉप खिलाड़ियों ने इसी प्रारूप में कट, पुल जैसे शॉट्स और तेज़ रिफ्लेक्स जैसी स्किल्स सीखी हैं, बल्कि मैं खुद भी टेनिस बॉल क्रिकेट खेलकर बड़ा हुआ हूं, और मुझे पता है कि ज़मीन स्तर पर कितना जबरदस्त टैलेंट छुपा हुआ है। लेजेंजजी टी10 लीग का मकसद ही है उस प्रतिभा को मंच पर लाना और मौका देना है। लीग के फाउंडर और सीईओ चिरंजीव दुबे ने कहा कि, यह लीग भारत के युवाओं और जुनूनी क्रिकेटरों के लिए एक बहुत बड़ा अवसर है।

वापसी कभी आसान नहीं होती : गंभीर

नई दिल्ली, 12 जून। लंबे समय बाद भारत इंग्लैंड में अपनी पहली सीरीज जीतने के इरादे से उतरेगा जिसके लिए वह जबरदस्त तैयारी में जुटा हुआ है। दोनों टीमें के बीच पांच मैच की टेस्ट सीरीज 20 जून से लीड्स में शुरू होगी। मुख्य कोच गौतम गभीर ने करुण नायर की भी तारीफ की जिन्होंने घरेलू क्रिकेट में बेहतरीन प्रदर्शन के दम पर भारतीय टीम में वापसी की है।भारतीय कोच ने कहा कि, वापसी कभी आसान नहीं होती, जिसने सात साल बाद वापसी की हो, उसका पिछला साल बेहतरीन रहा। उन्होंने कहा कि, आपने जितने रन बनाए हैं और सबसे अहम बात कभी हार ना मानने का जज्बा है जिसने आपको टीम में वापस ला दिया है और ये इस समूह में सभी के लिए प्रेरणादायक है। करुण नायर का स्वागत है। नायर ने कहा कि वह भारत के लिए खेलने का दूसरा मौका मिलने पर आभारी हैं। उन्होंने कहा कि इस अवसर फिर से मिलने के लिए आभारी हूं। मैं इस मौके का पूरा फायदा उठाने के लिए उत्सुक हूं। मुझे यकीन है कि एक बार जब मैं मैदान पर उतरूंगा तो मेरे अंदर बहुत सारी भावनाएं होंगी लेकिन अभी मैं उन्हें व्यक्त नहीं कर सकता।

श्रेयस अय्यर के पास ट्रॉफी जीतने का सुनहरा मौका

नई दिल्ली, 12 जून। टीम इंडिया के स्टार बल्लेबाज श्रेयस अय्यर पिछले कुछ सालों से काफी दमदार प्रदर्शन कर रहे हैं। फिर चाहे वो उनकी बल्लेबाजी हो या कप्तानी दोनों में ही अय्यर बेहतरीन प्रदर्शन कर रहे हैं।

आईपीएल 2025 में अय्यर ने अपने बैट के साथ-साथ कप्तानी में भी अपनी दमखम दिखाया। पंजाब किंग्स को अपनी कप्तानी में अय्यर ने 11 साल बाद फाइनल में पहुंचाया। हालांकि, उन्हें आईपीएल 2025 फाइनल में आरसीबी के खिलाफ हार झेलनी पड़ी लेकिन ठीक 9 दिन बाद फिर से अय्यर के पास ट्रॉफी जीतने का मौका है।

श्रेयस अय्यर की कप्तानी में मुंबई फैलकंस मुंबई टी20 लीग 2025 के फाइनल में पहुंच गई है। मुंबई टी20 लीग 2025 का फाइनल मुकाबला आजा यानी 12 जून को मुंबई फैलकंस और मुंबई साउथ सेंट्रल मराठा रॉयल्स के बीच वानखेड़े स्टेडियम में खेला जाएगा। ऐसे में ठीक 9 दिन बार अय्यर के पास दोबारा ट्रॉफी जीतने का मौका है। अब देखना है कि ये क्या अय्यर इस बार ट्रॉफी अपने नाम कर पाएंगे। अय्यर ने आईपीएल में दिल्ली कैपिटल्स की कप्तानी की थी और सीजन दिल्ली ने फाइनल खेला था। लेकिन फिर उनकी टीम खिताब से चूंक गई थी। उसके बाद साल 2024 में अय्यर ने कोलकाता नाइट राइडर्स की कप्तानी की और उस सीजन टीम ने खिताब जीता था। फिर 2025 में अय्यर ने पंजाब किंग्स की कप्तानी की और टीम को फाइनल तक पहुंचाया। लेकिन फाइनल में टीम को आरसीबी से हार का सामना करना पड़ा।

बियानी ने शत्रुध्न का आरसीए पर्यवेक्षक के रूप में नामांकन रद्द किया

जयपुर, 12 जून। डीसीए करौली की कार्यकारिणी समिति के चुनाव पर हाईकोर्ट द्वारा रोक के बाद जयदीप बिहानी, संयोजक, तदर्थ समिति, आरसीए ने आरसीए के विधिक सलाहकार रवि भोजक से आरसीए विधिक राय के बाद शत्रुधन तिवारी, सचिव, जिला क्रिकेट संघ भरतपुर का आरसीए पर्यवेक्षक के रूप में नामांकन रद्द कर दिया है। जयदीप बिहानी, संयोजक, तदर्थ समिति, आरसीए ने आदेश जारी कर कहा है कि शत्रुधन तिवारी डीसीए करौली की कार्यकारिणी समिति के चुनाव कार्यवाही में आरसीए पर्यवेक्षक के रूप में कार्य नहीं करे। क्योंकि हाईकोर्ट के आदेश के बाद चुनाव नहीं कराया जा सकता है इसलिए पर्यवेक्षक नियुक्त करने की आवश्यकता नहीं है।

पहले टेस्ट में साई सुदर्शन को मौका नहीं, भारत की प्लेइंग 11 की तस्वीर साफ

नई दिल्ली, 12 जून। इंग्लैंड दौरे पर टीम इंडिया का पहला टेस्ट 20 जून से खेलेगी। इसके लिए शुभमन गिल की अगुवाई वाली टीम इंडिया लगातार नेट प्रैक्टिस कर रही है। इसी बीच रिपोर्ट आई है कि इंग्लैंड के खिलाफ लीड्स में खेले जाने वाले पहले टेस्ट मुकाबले में साई सुदर्शन और अभिमन्यु ईश्वरन को मौका नहीं मिलेगा। दरअसल, ये रिपोर्ट नेट्स सेशन के पैटर्न को देखते हुए जारी की गई है। जिससे साफ हो गया है कि विराट कोहली के नंबर 4 पोजिशन पर कौन उतरेगा? इतना ही नहीं टॉप 6 बल्लेबाजों के साथ अब भारत की प्लेइंग इलेवन की तस्वीर भी साफ होती नजर आ रही है।

टीम इंडिया के बुधवार को केंट में नेट सत्र ने संभवत: इस बात के साफ संकेत दिए कि इंग्लैंड के खिलाफ पहले टेस्ट में टीम के टॉप खिलाड़ी कौन हो सकते हैं। रेवस्पोर्ट्स की रिपोर्ट के अनुसार, केएल राहुल को अभ्यास सत्र के दौरान तेज गेंदबाजों जसप्रीत बुमराह और मोहम्मद सिराज का सामना करते हुए देखा गया। ऐसे में माना जा रहा है कि केएल ही यशस्वी जायसवाल के जोड़ीदार होंगे। जबकि रोहित शर्मा के बाद साई सुदर्शन के टीम में शामिल होने पर ऐसी अटकलें लगाई जा रही थी कि सुदर्शन नए सलामी बल्लेबाज हो सकते हैं। हालांकि, हाल ही में हुए नेट सेशन में ऐसी कोई संभावना नहीं दिख रही है।वहीं, दूसरे नेट पर कप्तान शुभमन गिल और करुण नायर गेंदबाजों के खिलाफ अभ्यास करते नजर आए। नायर करीब 8 साल के अंतराल के बाद टेस्ट टीम में लौटे हैं।

श्रीगंगानगर ने जयपुर को 43 रनों से हराया, कोटा-उदयपुर-सीकर भी जीते

जयपुर, 12 जून। आरसीए एडहॉक कमेटी सदस्य विमल शर्माने बताया कि बीसीसीआई के आगामी घरेलू क्रिकेट सत्र 2025-26 की पूर्व तैयारियों की लिए आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक व विधायक जयदीप बिहाणी के निर्देशानुसार राजस्थान क्रिकेट संघ द्वाराबीसीसीआई सीनियर रणजी ट्रॉफीक्रिकेट प्रतियोगिता में भाग लेने वाली राजस्थान सीनियर टीम के संभावितों के चयन हेतु आरसीए के तत्वाधान में खेली जा रहीराज्य स्तरीय सीनियर कॉल्विन शील्ड प्रतियोगिता मेंश्रीगंगानगर, कोटा, उदयपुर व सीकर जीते।

कॉल्विनशील्ड के छठे दिन गुरूवार को श्रीगंगानगर टीम ने बड़ा धमाका कर दिया। जयपुर के केएल सैनी स्टेडियम पर खेले गए मुकाबले में श्रीगंगानगर ने टूर्नामेंट में खिताब की बड़ी दावेदार जयपुर की टीम को

43 रनों से हरा दिया। श्रीगंगानगर ने पहले बल्लेबाजी करते हुए सुमित गोदारा की 161 रनों की धमाकेदार पारी के दम पर 348 रनों का स्कोर खड़ा किया था। जवाब में जयपुर की टीम निर्धारित 50 ओवर में 9 विकेट के नुकसान पर 305 रन ही बना सकी। जयुपर के लिए भावित कुमावत ने 105 रनों की शतकीय पारी खेली लेकिन वो टीम को जिताने के लिए पर्याप्त नहीं रही।मैच में शानदार शतकीय पारी खेल श्रीगंगानगर को जयपुर की मजबूत टीम के विरुद जीत दिलाने वाले श्रीगंगानगर के सुमित गोदारा को मैच के सर्वश्रेष्ठ खिलाडी की ट्रॉफी प्रतियोगिता के ऑब्जर्वर जालोर जिला क्रिकेट संघ के सचिवसतीश व्यास द्वारा प्रदान की गयी।कॉल्विनशील्डके अन्य मुकाबलों में उदयपुर ने अलवर को 54 रनों से शिकस्त दी। दिन का तीसरे मुकाबले में कोटा ने झालावाड़ को रोमांचक संघर्ष में 9 रन से हराया। जबकि दिन का चौथा और आखिरी मुकाबला सीकर और बाड़मेर के बीच खेला गया। जिसमें सीकर ने 56 रनों से जीत दर्ज की। सुमित गोदारा ने श्रीगंगानगर के लिए 161 रनों की पारी खेली। जयपुर के लिए भावित कुमावत ने 105 रनों की शतकीय पारी खेली। दिन का तीसरा शतक कोटा के कुणाल सिंह राठौड़ के बल्ले से निकला। कुणाल ने झालावाड़ के खिलाफ 135 रनों की पारी खेली।

आज सुमित गोदारा , भावित कुमावत , कुणाल सिंह राठौर के शतक वमानेन्द्र सिंह , शिवा चौहान , सलमान , अरमान, अनिरुद्ध सिंह, रजत चौधरी, अमोल चेलानी, मुकुल चौधरी, जगदीश डूडी, लखन भारती,जयेश पंडिता के अर्धशतक, सलाउदीन ,धनञ्जय तिवारी , तनवीर, मो सलीम, पुष्पेंद्र सिंह,दीपेंद्र सिंह, विनोद कुमावत व हेमंत स्वामी की शानदार गेंदबाजी रही।

पवन कुमावत का वर्ल्ड स्ट्रैंथ लिफ्टिंग थाईलैंड के लिए भारतीय टीम में चयन

जयपुर, 12 जून। राजस्थान स्ट्रैंथ लिफ्टिंग के सचिव चन्द्रेश सोनी ने बताया कि राजस्थान जयपुर के पवन कुमावत का 16 से 19 जुलाई तक होने जा रही वर्ल्ड स्ट्रैंथ लिफ्टिंग थाईलैंड के लिए सीनियर वर्ग 76 किलो भार वर्ग में भारतीय टीम मे चयन किया गया। पवन कुमावत का चयन हाल में हुई सिनियर स्ट्रेन्थ लिफ्टिंग प्रतियोगिता हरियाणा में ट्रायल के आधार पर किया। पवन कुमावत ने इस पहले भी भारत के लिए कई पदक दिला चुके हैं । कोच पुष्पेन्द्र सिंह राठौर की देखरेख में पवन कुमावत तैयारी कर रहे है। पवन कुमावत ने अपनी कामयाबी का श्रेय अपने माता पिता जगदीश प्रसाद, नान्ही देवी, कोच पुष्पेन्द्र सिंह राठोड को दिया। पवन कुमावत का लक्ष्य देश को गोल्ड मेडल दिलाना है।

आर.डी. बाहेती जिला बैडमिंटन में जयवर्धन ने जीता पुरुष एकल व बालिका अंडर-17 पदमजा ने जीता

जयपुर, 12 जून। आर डी बाहेती चैरिटेबल ट्रस्ट जयपुर जिला बैडमिंटन ओपन प्रतियोगिता में खेले गए पुरुष एकल का खिताब जयवर्धन सिंह,अंडर 17 बालिका वर्ग एकल खिताब पदमजा सिंह ने जीता। फाइनल में जयवर्धन सिंह ने अंबर चंद्रवंशी को दो सीधे गेमों में 21 -12, 21- 12 आसानी से हराया वहीं बालिका वर्ग एकल अंडर 17 में पदमजा और अपेक्षा का कड़े संघर्ष के बाद तीन गेमों में फैसला हुआ पहला गेम पदमजा 21-17 से जीती दूसरा 12 - 21 से हारने के बाद तीसरा गेम 21- 14 से जीत 48 मिनट में फाइनल अपने नाम किया, वहीं मिक्स डबल्स अंडर 15 में श्रेयांश चौधरी और आराध्या ढींगरा की जोड़ी ने तीन सेटों में मनन शर्मा व पदमजा सिंह की जोड़ी को 21-18, 12 -21, 21 -17 से हरा फाइनल जीता। लड़कों के अंडर 15 फाइनल डबल्स में अभिषेक और कीर्तिराज यादव की जोड़ी

को 21- 10 ,21 -13 से हरा फाइनल जीता, वही बालिका वर्ग अंडर 15 डबल्स में ओजस्वी दुबे और पर्ल पारिक की जोड़ी ने 21- 12 ,21- 18 कनिष्का व खुशी फाईनल में हराया। गर्ल्स डबल्स अंडर 17 के फाइनल में अदविका अग्रवाल और गरिमा यादव की जोड़ी ने 21 -14 ,21 -9 से ओजस्विता दुबे और पर्ल पारिक की जोड़ी को हराकर खिताब अपने नाम किया। ऑर्गेनाइजिंग सेक्रेट्री अतुल गुप्ता के अनुसारआज अंडर 11 बालक बालिकाओं के दो राउंड के मैच तथा अंडर 13 बालको के एक राउंड के मैच खेले गए। जिला सचिव मनोज दासोत के अनुसार कल अंडर 11, अंडर 13, अंडर-19 के मैच खेल जाएंगे।

चौगान स्टेडियम जयपुर द्वारा ग्रीष्मकालीन प्रतिभा खोज खेलकूद प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 16 से

जयपुर, 12 जून। जिला खेलकूद प्रशिक्षण केन्द्र चौगान स्टेडियम जयपुर द्वारा ग्रीष्मकालीन प्रतीभा खोज खेलकूद प्रशिक्षण शिविर का आयोजन दिनांक 16 जून से 30 जून तक किया जाएगा। भामाशाहों के सहयोग से ये कैंप पिछले 50 वर्षों से लगातार चल रहा है। इसमें खिलाड़ियों को टी शर्ट और सर्टिफिकेट का वितरण राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद के द्वारा किया जाता है। इसकी शुरुआत एस एस किसान द्वारा की गई थी। जिला खेल कूद प्रशिक्षण केंद्र चौगान स्टेडियम ओर राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद के संयुक्त तत्वावधान में ये दूध चना शिविर लगाया जाता है।

जिला खेल अधिकारी मान सिंह के अनुसार इस प्रशिक्षण शिविर में फुटबाल, वुशु, खो-खो, ताईक्वांडो, बॉक्सिंग, कबड्डी, बास्केटबाल, नेटबाल, बॉल बैडमिंटन, भारत्तोलन, हैण्डबॉल खेलों में चयनित खिलाडियों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। इच्छुक खिलाडी जिला खेलकूद प्रशिक्षण केन्द्र चौगान स्टेडियम जयपुर के कार्यालय में सम्पर्क कर अपना पंजीयन करवा सकते है। प्रशिक्षण प्रात: 06:30 बजे से 08:30 बजे तक और सांयकाल 5 बजे से 7 बजे तक रहेगा।

21 दिवसीय केन्द्रीय आवासीय जनजाति खेलकूद प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

तीरंदाजी में पिंकी व मनोज बने सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी

जयपुर, 12 जून। राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद द्वारा बांसवाडा में आयोजित 21 दिवसीय केन्द्रीय आवासीय जनजाति खेलकूद प्रशिक्षण शिविर गुरूवार को सम्पन्न हुआ। 9 खेलों में आयोजित शिविर में सर्वश्रेष्ठ खिलाडियों को पुरस्कृत किया गया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि व राजस्थान राज्य क्रीडा परिषद के वित्तीय सलाहकार महावीर मीणा ने सभी खेलों के सर्वश्रेष्ठ खिलाडियों को पुरस्कृत किया। समारोह की अध्यक्षता मुख्य शिविर निदेशक और द्रोणाचार्य अवार्डी व मुख्य खेल अधिकारी वीरेन्द्र पूनिया ने की जबकि विशिष्ट अतिथि डीएसपी श्याम सिंह थे।

समारोह में सर्वश्रेष्ठ खिलाडियों को पुरस्कृत किया गया, जिसमें तीरंदाजी बालको में मनोज निनामा, पिंकी मईडा, एथलेटिक्स में पवन कुमार डिंडोर व

अंजली मईडा, फुटबाल में आशिष डामोर व चंचल मीणा, हैंडबाल में रमेश मकवाना व नंदनी, हॉकी में सुभाष व रेखा मनात, कबड्डी में जितेन्द्र व धन्वनती, खो-खो में सचिन कुमार डामोर व निशा गरासिया, वॉलीबाल मे कीर्तन कुमार व अर्चना को सम्मानित किया गया जबकि बास्केटबाल में केवल बालक वर्ग का ही शिविर आयोजित किया गया था, इसमें दीपक बांमणिया को सर्वश्रेष्ठ खिलाडी के रूप में पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर शिविर निदेशक व खेल प्रबन्धक नरेन्द्र भूरिया ने शिविर के बारे में लेखा जोखा पेश किया।

जबकि वीरेन्द्र पूनिया ने कहा कि 21 दिन तक जो मेहनत आप बच्चो ने की है, उसे आगे भी इसी तरह से जारी रखना। साथ ही उन्होने बच्चो को आगे बढने के बारे में बताते हुए कहा कि कडी मेहनत ही इसका एक मात्र मंत्र है।

हाई कोर्ट ने इंडियन होटल्स के खिलाफ आदेश पर रोक नहीं लगाई

जयपुर, 12 जून। राजस्थान हाईकोर्ट ने शहर की जय महल पैलेस होटल्स की 2.74 एकड़ जमीन पर अवैध तरीके से अतिक्रमण कर इसका उपयोग करने से जुड़े मामले में, जयपुर मेट्रो-द्वितीय की कमर्शियल कोर्ट-एक के 28 मार्च 2025 के आदेश में दखल से मना कर दिया।

इसके साथ ही अदालत ने द इंडियन होटल्स कंपनी की ओर से इस आदेश पर रोक लगाने के लिए दायर प्रार्थना पत्र खारिज कर दिया। जस्टिस अशोक कुमार जैन व जस्टिस मुकेश कुमार राजपुरोहित की खंडपीठ ने यह आदेश दिए।

खंडपीठ ने कहा कि कमर्शियल कोर्ट ने दोनों पक्षकारों के बीच में संतुलन स्थापित किया है और इस आदेश में किसी तरह का दखल देने की जरूरत नहीं है।

अधिवक्ता आरपी सिंह ने बताया

■ कमर्शियल कोर्ट ने ज्यादा उपयोग में ली जा रही जमीन पर 1984 से 2024की अवधि की लाइसेंस फीस के 1.52 करोड़ रूपये 90 दिन में देने का निर्देश दिया था।

की प्रार्थी, द इंडियन होटल्स की ओर से अपील में कमर्शियल कोर्ट के उस आदेश को चुनौती दी गई थी, जिसमें कोर्ट ने ज्यादा उपयोग में ली जा रही जगह के बदले 2 जून 1984 से लेकर 31 मई 2024 तक की अवधि के लिए लाइसेंस फीस के तौर पर 1.52 करोड़ रुपए की राशि 90 दिन में देने का निर्देश दिया था।

वहीं एक जून 2024 से बढ़ी हुई राशि लाइसेंस की फीस 84 लाख रुपए हर साल देना तय किया था। इसके अलावा यदि 31 मई 2029 तक प्रस्तावित मध्यस्थता की कार्रवाई का निस्तारण नहीं हो तो प्रार्थी की ओर से हर साल 6 लाख रुपए की बढ़ोतरी करते हुए लाइसेंस फीस दी जाएगी। अपील में इंडियन होटल्स का कहना था कि कमर्शियल कोर्ट ने उन्हें होटल में उनके कब्जे वाले क्षेत्र से बेदखल नहीं करने से अप्रार्थी को पाबंद किया है, लेकिन बिना किसी क्षेत्राधिकार से उन्हें लाइसेंस फीस के तौर पर 90 दिन में राशि जमा करवाने का निर्देश दिया है। ऐसे में कमर्शियल कोर्ट ने उन पर लाइसेंस फीस के तौर पर राशि जमा करवाने की शर्त गलत लगाई है। इसलिए कोर्ट के इन निर्देशों पर रोक लगाई जाए। तथापि हाईकोर्ट ने इन निर्देशों पर रोक लगाने से इनकार कर दिया।

मोदी ने 11 वर्ष में कोई वादा नहीं निभाया- राहुल

नयी दिल्ली, 12 जून। कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष एवं लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी पर गुरुवार को सीधा हमला करते हुए हर वादा तोड़ने का आरोप लगाया और कहा कि पिछले 11 वर्षों में उन्होंने देश की जनता से कई वादे किए, लेकिन कोई भी वादा निभाया नहीं।

कांग्रेस नेता ने आज कहा कि मोदी लोगों को लुभाने के लिए खूब वादे करते हैं, लेकिन कोई वादा पूरा नहीं करते। वे वादा तोड़ते हैं, इसलिए उनका हर वादा जुमला साबित हो जाता है। उन्होंने देश के युवाओं को राष्ट्र निर्माण में भागीदार बनाने की बजाए, सपने तोड़कर उन्हें बेरोजगार बनाया है। गांधी ने यहां जारी बयान में कहा, प्रधानमंत्री ने 11 वर्षों में हर वादा तोड़ा। दो करोड़ 'नौकरियाँ' देने का वादा, जुमला बन गया। पकौड़े तलवाए, फॉर्म भरवाए, लेकिन कोई दिशा नहीं दी। डिग्री के बाद भी नौकरी नहीं, तैयारी के बाद भी भर्ती नहीं, मेहनत के बाद भी सम्मान नहीं।

'मतदाताओं के नाम व्यक्तिगत फॉर्म के आधार पर जोड़े जाते हैं'

महाराष्ट्र मुख्य चुनाव अधिकारी ने राहुल गांधी के आरोपों को खारिज किया

■ उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र में मतदाता सूचियों का निर्माण राज्यभर के 288 मतदान पंजीकरण अधिकारियों द्वारा एक लाख से अधिक मतदान केन्द्र स्तरीय अधिकारियों, बीएलओ के द्वारा जमीनी स्तर पर कराये गये सर्वे के आधार पर तैयार होती हैं।

नयी दिल्ली, 12 जून। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव की मतदाता सूचियों के बनाने में गड़बड़ी के कांग्रेस नेता राहुल गांधी के आरोपों को खारिज करते हुए महाराष्ट्र के मुख्य चुनाव अधिकारी कार्यालय ने गुरुवार को कहा कि सूचियों में मतदाताओं के नाम को जोड़ने-घटाने का काम आबादी में वृद्धि के किसी अनुमान के आधार पर नहीं, बल्कि व्यक्तिगत फार्म के आधार पर किया जाता है।

महाराष्ट्र के मुख्य चुनाव अधिकारी कार्यालय ने सोशल मीडिया एक्स पर कहा कि कांग्रेस नेता गांधी ने हाल में आखबारों में लेख के माध्यम से सूचियों में गड़बड़ी के जो आरोप लगाए, उनका तथ्यवार जवाब पहले दिया जा चुका था, लेकिन उन्होंने उन्हीं आरोपों को दोहराया है। बयान में कहा गया है कि जन प्रतिनिधित्व अधिनियम 1950 और मतदाता पंजीकरण नियमावली 1960 के अंतर्गत, मतदाता सूचियों में काटछांट की कोई केन्द्रीय व्यवस्था नहीं हो सकती है। कार्यालय ने कहा है कि महाराष्ट्र में मतदाता सूचियों का निर्माण राज्यभर के 288 मतदाता पंजीकरण अधिकारियों द्वारा एक लाख से अधिक मतदान केंद्र स्तरीय अधिकारियों -बीएलओ के द्वारा जमीनी स्तर पर कराए गये सर्वे के आधार पर किया जाता है। तैयार सूचियों का मसौदा हर पार्टी को उपलब्ध कराया जाता है, ताकि उसके आधार पर दावे और आपत्तियां की जा सकें।

गांधी के आरोप को भ्रामक बताते हुए राज्य निर्वाचन कार्यालय ने कहा है कि महाराष्ट्र विधानसभा के 2019 के विधानसभा चुनाव और 2024 के लोकसभा चुनाव के बीच 32.25 करोड़ मतदाता शुद्धरूप से बढ़े थे। इस दौरान 1.39 करोड़ नाम जुड़े और 1.07 करोड नाम कटे थे। इसी तरह 2024 के लोकसभा चुनाव और उसी साल कराए गये विधानसभा चुनाव के बीच 84.82 लाख नाम जुड़े और 8 लाख नाम कटे थे। इस तरह इस दौरान सूची में 40.81 लाख नामों का इजाफा हुआ था। इनमें से 26 लाख मतदाता 18 से 29 आयु वर्ग के थे। इस तरह 2019 के विधानसभा और 2024 के लोकसभा के चुनाव के बीच मतदाताओं की संख्या में 1.39 करोड़ की वृद्धि हुई थी जबकि 2024 के लोकसभा और विधानसभा चुनाव के बीच 48.82 लाख नाम जुड़े थे। मुख्य निर्वाचन आयुक्त ने कहा है कि विधानसभा चुनाव के परिणाम आने से पहले कांग्रेस पार्टी या उसके प्रत्याशियों ने सूचियों को लेकर कोई गंभीर आरोप नहीं लगाया था।

विमान दुर्घटना की विस्तृत जाँच होगी

नयी दिल्ली, 12 जून। नागरिक उड्डयन मंत्री के राम मोहन नायडू ने कहा है कि अहमदबाद में गुरुवार को हुये विमान हादसे की निष्पक्ष एवं विस्तृत जांच करायी जायेगी।नायडू ने दुर्घटना स्थल पर पहुंचने के बाद संवाददाताओं से कहा कि वे हादसे के बाद से गहरे सदमे में हैं। इस समय वे यात्रियों और उनके परिवारों के बारे में सोच रहे हैं। अभी वे हताहतों की संख्या के बारे में कुछ नहीं कहना चाहते। कई एजेंसियां बचाव और राहत कार्य में लगी हुयी हैं। उन्होंने कहा कि इस दुर्घटना की निष्पक्ष और विस्तृत जांच करायी जायेगी और यह पता लगाया जायेगा कि यह दुर्घटना किस वजह से हुई।नायडू ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उन्हें फोन कर, दुर्घटना स्थल पर रहने को कहा है। उन्होंने कहा कि इस दुर्घटनाग्रस्त विमान में गुजरात के पूर्व मुख्यमंत्री विजय रूपाणी भी सवार थे।

गौरतलब है कि आज दोपहर बाद अहमदाबाद से लंदन जा रहा एयर इंडिया का विमान उड़ान भरने के तत्काल बाद दुर्घटनाग्रस्त हो गया।

'सवा लाख लीटर ईंधन था, किसी को बचाने का मौका नहीं मिला'

गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि डीएनए जांच के बाद मृतकों की संख्या स्पष्ट होगी

■ अमित शाह ने कहा कि 10 मिनट में भारत सरकार के पास सूचना पहुंच गई थी। भारत सरकार और गुजरात सरकार के सभी विभाग एक साथ होकर राहत और बचाव कार्य में लगे थे।

अहमदाबाद, 12 जून। अहमदाबाद में हुए भीषण विमान हादसे के बाद केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने घटनास्थल का दौरा किया। इसके बाद उन्होंने अस्पताल में पहुंच कर घायलों और एअर इंडिया विमान हादसे में एकमात्र जीवित शख्स से भी मुलाकात की। इसके बाद उन्होंने केन्द्रीय नागरिक उड्डयन मंत्री किंजरापु राम मोहन नायडू और गुजरात के मुख्यमंत्री और तमाम शीर्ष अधिकारियों के साथ बैठक की और पूरे हादसे व राहत-बचाव कार्य की जानकारी भी ली।

इसके बाद मीडिया को संबोधित करते हुए गृह मंत्री अमित शाहने कहा, दोपहर एयर इंडिया की विमान संख्या एआई-171 दुर्घटनाग्रस्त हुई। कई यात्रियों के हताहत होने की संभावनाएं हैं। इस घटना से पूरा देश स्तब्ध है... पूरा देश पीड़ित परिवारों के साथ खड़ा है। सबसे पहले मैं भारत सरकार, गुजरात सरकार, प्रधानमंत्री की ओर से हताहत हुए लोगों को प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं। 10 मिनट में ही भारत सरकार के पास सूचना पहुंच गई। तुरंत ही मैंने सभी से संपर्क किया। प्रधानमंत्री का भी फोन आया। भारत सरकार और गुजरात सरकार के सभी विभाग एक साथ राहत और बचाव कार्य में लगे हैं।

उन्होंने आगे कहा, इस विमान में कुल मिलाकर देश और विदेश के 230 यात्री और 12 क्रू मैम्बर सवार थे। इसमें से एक यात्री के बचने का अच्छा समाचार मिला है। मैं उनसे मिलकर आया हूं। मृत्यु का आंकड़ा डीएनए परीक्षण और यात्रियों की पहचान के बाद ही अधिकृत रूप से जारी होगा। घटना के तुरंत बार गुजरात सरकार ने आपदा प्रबंधन की सारी इकाइयों को अलर्ट करते हुए मिलकर राहत- बचाव का कार्य चालू कर दिया है।

केन्द्रीय गृह मंत्री ने आगे बताया कि घटना के दौरान विमान में सवा लाख लीटर ईंधन था, जिससे तापमान इतना ऊंचा हो गया कि किसी को बचाने का मौका ही नहीं मिला। सभी यात्रियों के शव को निकालने का काम लगभग पूरा हो चुका है। जितने यात्रियों के परिजन पहुंच गए हैं, उनका डीएनए लेने का काम भी 2-3 घंटे में पूरा हो जाएगा। जिनके परिजन विदेश में हैं, उनको सूचित कर दिया गया है।

मुख्यमंत्री ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मुख्यमंत्री ने दूरभाष के माध्यम से परिजनों से बात कीं और उन्हें ढांढ़स बंधाया।

अहमदाबाद विमान दुर्घटना की जानकारी मिलते ही शर्मा ने मुख्यमंत्री निवास पर प्रस्तावित सभी बैठकों सहित, अन्य कार्यक्रम निरस्त कर दिए। मुख्यमंत्री जयपुर में कल 13 जून को आयोजित होने वाले योग महोत्सव में भी शिरकत नहीं करेंगे। वहीं, शुक्रवार को बांसवाड़ा में प्रस्तावित प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के राज्य स्तरीय कार्यक्रम को भी रद्द कर दिया गया है। अहमदाबाद में हुए विमान हादसे की अत्यंत दुखद घटना पर भारतीय जनता पार्टी ने प्रदेश संगठन स्तर पर अपने कार्यक्रमों को निरस्त करने का निर्णय लिया। भाजपा प्रदेश कार्यालय प्रभारी मुकेश पारीक ने बताया कि भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष मदन राठौड़ के निर्देशानुसार, हादसे की गंभीरता को देखते हुए पार्टी ने 13 जून तक प्रदेश में प्रस्तावित सभी कार्यक्रमों को स्थगित करने का निर्णय लिया है। गुरुवार को जैसे ही घटना की जानकारी प्राप्त हुई, तत्क्षण सभी कार्यक्रमों को निरस्त कर दिया गया।

जिला उपभोक्ता आयोग के पीठासीन अधिकारी को क्यों बर्खास्त किया?

■ हाई कोर्ट ने राज्य सरकार से जवाब मांगा।

जयपुर, 12 जून। राजस्थान हाईकोर्ट ने जयपुर जिला उपभोक्ता आयोग, द्वितीय के पीठासीन अधिकारी को बर्खास्त करने से जुड़े मामले में राज्य सरकार से जवाब मांगते हुए मामले की सुनवाई 19 जून को तय की है। अवकाशकालीन न्यायाधीश आनंद शर्मा की एकलपीठ ने यह आदेश ग्यारसी लाल मीना की याचिका पर प्रारंभिक सुनवाई करते हुए दिए।

याचिका में अधिवक्ता प्रहलाद शर्मा ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता को बिना सुनवाई का मौका दिए बर्खास्त किया गया है। राज्य सरकार ने बर्खास्तगी आदेश जारी करने से पूर्व याचिकाकर्ता को न तो जांच रिपोर्ट सहित अन्य जरूरी दस्तावेज मुहैया कराए और ना ही उसे सुनवाई का मौका दिया गया। याचिका में कहा गया कि राज्य उपभोक्ता आयोग बार एसोसिएशन की शिकायत के आधार पर राज्य सरकार ने याचिकाकर्ता को सेवा से पृथक किया है। जबकि नियमानुसार उसके खिलाफ कार्रवाई करने से पूर्व उसे भी सुनवाई का मौका दिया जाना चाहिए था। सुनवाई के दौरान राज्य सरकार की ओर से केविएटर के तौर पर अतिरिक्त महाधिवक्ता कपिल प्रकाश माथुर अदालत में पेश हुए। उनकी ओर से याचिका में जवाब पेश करने के लिए समय मांगा गया। जिस पर सुनवाई करते हुए एकलपीठ ने मामले की सुनवाई 19 जून को तय करते हुए राज्य सरकार को जवाब पेश करने को कहा है।

गौरतलब है कि राज्य सरकार ने बीते दिनों जिला उपभोक्ता आयोग के अध्यक्ष याचिकाकर्ता पर कई आरोप लगाते हुए उन्हें बर्खास्त कर दिया था।

प्लेन क्रैश क्यों ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आधारित है, लेकिन कुछ संभावनाएं सामने आई हैं, जो इस दुर्घटना का कारण हो सकती हैं।

एयर इंडिया की उड़ान 171, जो अहमदाबाद से लंदन की नियमित उड़ान पर थी, के दुर्घटनाग्रस्त होने को लेकर कई तरह की थ्योरियाँ सामने आ रही हैं।

एक्स (पूर्व में ट्विटर) के ए.आई. सर्च इंजन ग्रोक के अनुसार: यह संभव है कि विमान के फ्लैप्स की गलत सैटिंग इस दुर्घटना का एक बड़ा कारण बनी हो। वीडियो सबूतों से संकेत मिलता है कि टेकऑफ के समय फ्लैप्स 0 डिग्री पर थे, जिससे गर्म मौसम (37सै.) और पूर्ण फ्यूल लोड के साथ लिफ्ट कम हो जाती है। बोइंग 787-8 के लिए ऐसे मौसम में टेकऑफ के समय फ्लैप्स आमतौर पर 15 से 20 डिग्री पर होने चाहिए, ताकि उचित उड़ान संभव हो सके। यह स्पष्ट नहीं है कि यह पायलट की गलती थी या हाल में हुए विमान के पुनर्निर्माण के दौरान आई कोई तकनीकी खराबी। बर्ड स्ट्राइक जैसे अन्य कारणों की संभावना कम मानी जा रही है। क्रैश का कारण जांच के बाद ही सामने आएगा।

यह मानना कठिन है कि हादसा बर्ड स्ट्राइक के कारण हुआ। 787 जैसे सभी विमान इस तरह के हादसों की स्थिति में एक इंजन पर उड़ान भरने में सक्षम होते हैं, ताकि वे सुरक्षित रूप से लौट सकें और लैंड कर सकें। लेकिन पायलट द्वारा बार-बार कहा जाना कि "थ्रस्ट नहीं है" और "लिफ्ट नहीं है"-यह दर्शाता है कि या तो इंजन ने काम करना बंद कर दिया या फ्लैप्स, जो विमान को उड़ान भरने और ऊपर चढ़ने की गति देते हैं, ने सही तरीके से कार्य नहीं किया। यह यांत्रिक गड़बड़ी थी या जानबूझकर की गई साजिश, यह तो जांच पूरी होने के बाद ही स्पष्ट होगा।

■ पर, यह तोड़फोड़ की साज़िश का नतीज़ा था या वाकई में एक एक्सीडैन्ट था, इस सवाल का जवाब प्लेन निर्माता बोइंग कम्पनी आदि के लिए बहुत जरूरी है। क्योंकि, इससे यह सवाल जुड़ा हुआ है कि मृत यात्रियों के परिवार को कितना मुआवज़ा मिलेगा। एक्सीडैंट है या मशीन का फेलियर, इस पर मुआवज़े की राशि में करोड़ों डॉलर का फर्क पड़ सकता है।

डी.जी.सी.ए. और दुर्घटना की जांच कर रही इकाई पहले ही अहमदाबाद पहुंच चुकी है। उम्मीद की जा रही है कि विमान बनाने वाली कंपनी बोइंग और अमेरिका का नैशनल ट्रान्पोर्टेशन सेफ्टी बोर्ड (एन.टी.एस.बी.), जो सभी दुर्घटनाओं की यू.एस. सुपरवाइज़र बॉडी है, भी इस जांच में हिस्सा लेंगे, क्योंकि यह मामला अंतरराष्ट्रीय स्तर पर गंभीर है और यात्रियों के परिजनों को मुआवज़ा देने में करोड़ों डॉलर खर्च होने वाले हैं। ये मुआवज़े इस बात पर निर्भर करेंगे कि हादसे का कारण साजिश, तकनीकी गड़बड़ी या पायलट की गलती -क्या था। फिलहाल, पायलट की गलती सबसे कम संभावित कारण प्रतीत होती है, लेकिन जब तक जांच पूरी नहीं होती, किसी भी संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता।

एयर इंडिया फ्लाइट 171 के एकमात्र ज्ञात जीवित यात्री, ब्रिटिश नागरिक विश्वास कुमार रमेश के अनुसार "टेकऑफ के 30 सेकंड बाद जोर की आवाज़ आई और फिर विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। सब कुछ इतनी जल्दी हुआ। जब मैं उठा तो मेरे चारों ओर लाशें थीं"।

इस दुर्भाग्यपूर्ण दुर्घटना के कारण एयर इंडिया की कार्यप्रणाली पर भी गंभीर सवाल उठे हैं। टाटा समूह के लिए यह उनकी प्रतिष्ठा पर एक गहरा आघात है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर गुस्साए यूज़र्स ने यह कहते हुए अपनी नाराज़गी जाहिर की कि टाटा की विस्तारा जैसी बेहतरीन एयरलाइन (जो विश्व में 18वें स्थान पर थी) को एयर इंडिया (जो विश्व रैंकिंग में 99वें स्थान पर थी) में नहीं मिलाना चाहिए था।

टाटा समूह ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

छात्रावास भवन के पुर्निर्माण में मदद की भी घोषणा की है। उन्होंने कहा कि टाटा समूह इस अकल्पनीय दुख के समय में प्रभावित परिवारों और समुदायों के साथ खड़ा है। उल्लेखनीय है कि एयर इंडिया का संचालन टाटा समूह के हाथ में है।

अहमदाबाद विमान हादसे के शिकार ड्रीमलाइनर बोइंग 787 विमान में 230 यात्री और चालक दल के दो पायलट सहित 12 सदस्य सवार थे।

पूर्व सैनिक से 1.30 करोड़ रु. की ठगी करने वाला गिरफ्तार

नैनीताल, 12 जून। उत्तराखंड की साइबर पुलिस ने पूर्व सैनिक से 1.30 करोड़ की धनराशि हड़पने के मुख्य आरोपी को छत्तीसगढ़ से गिरफ्तार कर लिया है। विशेष जांच दल (एसटीएफ) के वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक नवनीत सिंह ने गुरुवार को बताया कि चंपावत के लोहाघाट के सेना के पूर्व जवान से साइबर ठगों ने 1.30 करोड़ की धनराशि हड़प ली। सइबर ठगों ने पीड़ित को बताया कि उसका नाम नरेश गोयल हवाला कारोबार मामले में सामने आया है। उसके खिलाफ मुम्बई में मामला दर्ज है। आरोपियों ने पीड़ित को सीबीआई और ईडी का भय दिखा कर कई दिनों तक डिजिटल अरेस्ट रखा और इस दौरान पीड़ित की बैंक में जमा समस्त धनराशि को भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा करायी जा रही जांच के नाम पर अपने विभिन्न बैंक खातों में जमा करा लिया।

काफी बेचैनी सी है, भाजपा के कैडर में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जनगणना में जाति पहचान के आधार पर लोगों की गणना करना। आखिरी बार यह व्यापक रूप से 1931 में ब्रिटिश शासन के दौरान किया गया था। तब से, भारतीय जनगणनाओं में विस्तृत जातीय आंकड़े शामिल नहीं किए गए हैं, केवल अनुसूचित जातियों (एससी) और अनुसूचित जनजातियों (एसटी) को छोड़कर।

भाजपा की राजनीतिक रणनीति अक्सर एक अखिल हिंदू पहचान पर ज़ोर देती है, न कि उप-जातीय पहचानों पर। जाति जनगणना इस एकता को तोड़ सकती है, क्योंकि इससे उप-जातीय मांगें और विभाजन की माँग फिर से सक्रिय हो सकती हैं।

विस्तृत जातीय आंकड़े ओबीसी (अन्य पिछड़ा वर्ग) नेताओं और क्षेत्रीय दलों जैसे राजद (राष्ट्रीय जनता दल), सपा (समाजवादी पार्टी), जदयू (जनता दल यूनाइटेड) को सशक्त कर सकते हैं,

■ अतः अगर, जातिगत जनगणना में यह तथ्य उभरा कि कुछ जातियों को सत्ता में पूरी ''भागीदारी'' नहीं मिल रही है तो आरक्षण बढ़ाने की माँग पनपेगी और इस माँग की अगर पूर्ति होती है तो भाजपा का मूल समर्थक, सवर्ण वर्ग पीड़ित होगा।

जो अपडेट किए गए जनसंख्या आंकड़ों के आधार पर अधिक आरक्षण या संसाधनों के पुनर्वितरण की मांग कर सकते हैं।

यह भाजपा की ओबीसी समूहों के बीच पकड़ को कम कर सकता है, जो उनके लिए एक महत्वपूर्ण वोट बैंक हैं।

यदि जातीय आंकड़ों से यह पता चलता है कि ओबीसी या अन्य समूहों का प्रतिनिधित्व कम है, तो आरक्षण को बढ़ाने या विस्तार करने के लिए भारी दबाव पड़ेगा, जिसे भाजपा अपने सवर्ण जनाधार के कारण टालना चाह सकती है।

भाजपा एक व्यापक गठबंधन है, जिसमें सवर्ण, ओबीसी और दलित शामिल हैं। जाति जनगणना इन आंतरिक विभाजनों को और गहरा कर सकती है और विभिन्न समुदायों की प्रतिनिधित्व की मांगें बढ़ा सकती है, जिससे वर्तमान संतुलन बिगड़ सकता है।

सरकार ने दावा किया है कि दस वर्षीय जनगणना के हिस्से के रुप में जातिगणना कराना लॉजिस्टिक और तकनीकी दृष्टि से कठिन है।

कांग्रेस, राजद, जदयू, सपा, द्रमुक और अन्य विपक्षी दल इसका समर्थन कर रहे हैं।

यहां तक कि नीतीश कुमार (जदयू) और तेजस्वी यादव (राजद) ने बिहार में 2023 में एक जाति आधारित सर्वेक्षण की अगुवाई की, जो एक बड़ा राजनीतिक घटनाक्रम बन गया।

हालिया चुनावों में, विशेषकर बिहार में और 2024 लोकसभा चुनावों से पहले, राहुल गांधी और कांग्रेस ने ''जितनी आबादी, उतना हक'' (जनसंख्या हिस्सेदारी के आधार पर समान अधिकार) का नारा दिया, जिसका उद्देश्य जातीय आंकड़ों का उपयोग कर हाशिए पर पड़े समुदायों को सशक्त बनाना था।

मोदी सरकार की जाति जनगणना करवाने की अनिच्छा के मूल में है राजनीतिक रणनीति, सामाजिक विभाजन का भय और सत्ता संतुलन में बदलाव का विरोध, जबकि सरकार इसे प्रशासनिक व्यावहारिकता का मामला बताती है। कई आलोचक और विपक्षी नेता इसे जाति आधारित असमानता से टकराने से बचने के लिए एक जानबूझकर की गई कोशिश मानते हैं।

'यूपी सरकार ने अयोध्या में शराब की दुकानें खुलवायीं'

-जाल खंबाता-

-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 जून। उत्तर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने अयोध्या में शराब की दुकानें खोले जाने को लेकर गुरुवार को उत्तर प्रदेश सरकार पर जबरदस्त प्रहार किया। ज्ञातव्य है कि 1 मई, 2025 को राम मंदिर जाने वाले 13 किमी के पूरे रास्ते पर शराब की बिक्री पर रोक लगा दी गई थी। नये एआईसीसी मुख्यालय, "इन्दिरा भवन" पर एक प्रैस कॉन्फ्रेंस को सम्बोधित करते हुये उन्होंने कहा कि साहबगंज, अंगूरी बाग, विकास गंज, अयोध्या कैन्ट तथा बस स्टैण्ड पर शराब की दुकानें खोली गई हैं। उन्होंने कहा कि यह राम की नगरी अयोध्या पर ही नहीं, हिन्दुत्व का दम भरने वाली सरकार पर भी एक कलंक है। जहाँ स्थानीय म्यूनिसपल कॉर्पोरेशन ने अयोध्या में शराब की दुकानों पर रोक लगा रखी है, वहीं राज्य सरकार शराब के ठेकों के लाइसेंस जारी कर रही है। एक प्रश्न के उत्तर में अजय राय ने कहा कि नगर निगम की कार्य समिति ने राम मदिर जाने वाली 13 किमी लम्बी सड़क पर शराब और मटन की बिक्री पर रोक लगा दी थी।

■ उत्तर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय ने प्रैस कॉन्फ्रैंस में आरोप लगाया।

कमल हासन सहित राज्य सभा के लिये 6 निर्विरोध निर्वाचित

चेन्नई, 12 जून। तमिलनाडु से राज्यसभा के लिए सभी छः उम्मीदवार गुरुवार को निर्विरोध निर्वाचित हो गये, जिनमें अभिनेता से नेता बने मकाल निधि मेयम (एमएनएम) के संस्थापक कमल हासन भी शामिल हैं।

पीठासीन अधिकारी एवं विधानसभा सचिव बी सुब्रमण्यम ने आधिकारिक तौर पर यह घोषणा करते हुए बताया कि नामांकन वापस लेने की अंतिम तारीख पर आज किसी भी उम्मीदवार के नामांकन वापस नहीं लेने के कारण, सभी छः उम्मीदवारो को राज्यसभा के लिए निर्विरोध चुन लिया गया है। उन्होंने बाद में सभी उम्मीदवारों को इस आशय का प्रमाण पत्र भी दिये।

विजयी उम्मीदवारों में द्रविड़ मुनेत्र कषगम (द्रमुक) के तीन, उसके सहयोगी दल एमएनएम के एक और विपक्षी अन्नाद्रमुक के दो उम्मीदवार शामिल है।

मोदी, शाह, ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उठाये जा रहे हैं। उन्होंने सोशल मीडिया मंच एक पर एक पोस्ट में लिखा, अहमदाबाद में हुई त्रासदी ने हमें स्तब्ध और दुखी कर दिया है। यह शब्दों से परे दिल दहला देने वाली घटना है। इस दुखद घड़ी में मेरी संवेदनाएँ प्रभावित सभी लोगों के साथ हैं। मैं मंत्रियों और अधिकारियों के संपर्क में हूँ जो प्रभावित लोगों की सहायता के लिए काम कर रहे हैं। सोशल मीडिया मंच एक्स पर ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टारमर ने विमान दुर्घटना में पीड़ित व्यक्तियों के प्रति सहानुभूति एवं संवेदना व्यक्त करते हुए कहा, "ब्रिटेन के नागरिकों को लेकर अहमदाबाद से लंदन के लिए रवाना हुए दुर्घटनाग्रस्त विमान की तस्वीरें भयावह हैं।

■ ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टारमर ने पीड़ित व्यक्तियों के प्रति संवेदना व्यक्त की।

हवाई जहाजों व हवाई यात्रा में ''सेफ्टी'' का...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

दुर्घटना हुई है, लेकिन यह स्पष्ट नही हो पाया है कि इस दुर्घटना का कारण तोड़फोड़ थी, तकनीकी खराबी थी या पायलट की गलती। भारतीय विमान दुर्घटना जाँच ब्यूरो और बोइंग ने संयुक्त रूप से जाँच शुरु कर दी है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और ब्रिटेन के प्रधानमंत्री कीर स्टारमर समेत वैश्विक नेताओं ने इस दुर्घटना पर गहरा शोक व्यक्त किया है और पीड़ित परिवारों को हर संभव सहायता का आश्वासन दिया है।

जहाँ इस दुर्घटना के आधिकारिक कारणों का अभी तक पता नहीं चल पाया है और ब्लैक बॉक्स डेटा और तकनीकी विश्लेषण के जरिए इसके कारणों तक पहुँचने में हफ्तों या महीनों का समय लग सकता है, वहीं, सरकार और नागरिक उड्डयन मंत्रालय की शुरुआती चुप्पी पर विपक्षी दलों और विमानन सुरक्षा विशेषज्ञों की तरफ से तीखी आलोचना सामने आई है। गुरुवार देर शाम तक सरकार की ओर से हताहतों की संख्या को लेकर कोई आधिकारिक बयान जारी नहीं किया गया, हालांकि अपुष्ट रिपोर्ट्स में भारी संख्या में मौतों और घायलों की बात कही गई है।

इस घटना ने नरेन्द्र मोदी सरकार को ऐसे समय में बैकफुट पर खड़ा कर दिया है, जब वह भारत को एक वैश्विक विमानन हब के रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश कर रही है। विमानन क्षेत्र के तेजी से बढ़ने के बावजूद, आलोचकों का मानना है कि नियामक निगरानी, आधारभूत ढांचे में सुधार और सुरक्षा जांचों की गति, फ्लीट और यातायात के विस्तार के अनुरुप नहीं है।

विशेषज्ञों का मानना है कि इस दुर्घटना के पीछे कुछ गहरी प्रणालीगत खामियां हो सकती हैं। एक सेवानिवृत्त वरिष्ठ पायलट ने नाम न छापने की शर्त पर कहा, यह सिर्फ एक अलग-थलग घटना नहीं है; यह हमारी सुरक्षा व्यवस्था की कमजोरियों को उजागर करती है। जब एक अच्छी तरह से मेंटेन किया गया विमान, अनुभवी क्रू के बावजूद, सामान्य मौसम में दुर्घटनाग्रस्त हो जाता है, तो यह पायलट की गलती या तकनीकी खराबी मात्र से कहीं आगे की एवं बड़ी बात होती है।"

सूत्रों के अनुसार, एआई-171 की मेन्टिनैंस जाँच इस वर्ष की शुरुआत में हुई थी और उसे संचालन के लिए फिट घोषित किया गया था।

लेकिन विमानन विश्लेषकों का मानना है कि भारत के घरेलू बेड़े के कुछ विमान, विशेष रूप से 10 साल से अधिक पुराने, ऐसे घिसाव-क्षरण (वेयर एण्ड टेयर) के शिकार हो सकते हैं, जो सामान्य जांचों में सामने नहीं आते। भारत के विमानन नियामक, नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (डीजीसीए) पर अब न केवल एयर इंडिया, बल्कि पुराने विमान संचालित करने वाली सभी एयरलाइनों की गहन ऑडिट का दबाव है।

विपक्षी नेताओं ने इस मुद्दे पर राजनीति शुरू कर दी है। कांग्रेस प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने मोदी सरकार पर विमानन सुरक्षा की अनदेखी करने और केवल निजीकरण तथा छवि-निर्माण पर ध्यान देने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा, "यह दुखद दुर्घटना सरकार के लिए एक चेतावनी होनी चाहिए। निजीकरण एवं विस्तार की दौड़ में सुरक्षा से समझौता नहीं किया जा सकता।"

जनता की चिंता और भी ज्यादा बढ़ने का कारण यह तथ्य है कि यह हादसा अहमदाबाद जैसे प्रमुख शहर में हुआ है, जिससे आपातकालीन प्रतिक्रिया की तैयारियों पर सवाल खड़े हो रहे हैं। चश्मदीदों ने घटनास्थल पर अफरातफरी और एंबुलेंस व फायर सर्विस के देर से पहुंचने की शिकायत की, जिससे और अधिक जानें चली गईं।

इस त्रासदी की पृष्ठभूमि में, केन्द्र सरकार ने एक उच्च स्तरीय जांच का आश्वासन दिया है, लेकिन विमानन जगत केवल औपचारिकता से संतुष्ट नहीं है। सिविल सोसायटी संगठनों और विमानन यूनियनों ने स्वतंत्र जांच एवं एयर सेफ्टी ऑडिट के लिए अतिरिक्त फंडिंग और सुरक्षा चूकों की रिपोर्टिंग में अत्यधिक गहन पारदर्शिता की मांग की है।

जहाँ देश निर्दोष नागरिकों की मौत का शोक मना रहा है, वहीं, यह दुर्घटना भारत की विमानन नीति के लिए एक निर्णायक क्षण साबित हो सकती है। मोदी सरकार, जिसने उड़ान योजना और कई नए हवाई अड्डों जैसे बुनियादी ढांचा विकास के बड़े लक्ष्य तय किए हैं, के लिए यह त्रासदी एक सख्त चेतावनी है कि किसी भी विस्तार की योजना में सुरक्षा को सर्वोपरि रखा जाना चाहिए। देखना यह है कि क्या यह घटना असली नीतिगत बदलाव लाएगी या सिर्फ एक और सरकारी फाइल बनकर रह जाएगी।

अहमदाबाद विमान...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उसमें आग लग गयी। कुछ अपुष्ट रिपोर्टों में बताया गया है कि अस्पताल परिसर के हॉस्टल के भवन में मौजूद करीब 15 डॉक्टर भी घायल हुये हैं।दुर्घटना के सभी विवरणों के समन्वय के लिये नागरिक उड्डयन मंत्रालय में एक परिचालन नियंत्रण कक्ष सक्रिय कर दिया गया है। इसके संपर्क नंबर 011-24610843 और 9650391859 हैं। एयर इंडिया ने भी जानकारी उपलब्ध कराने के लिये हॉटलाइन नंबर 18005691444 स्थापित किया है। नागर विमानन मंत्रालय ने एक्स पर लिखा, हम सभी प्रभावितों को त्वरित प्रतिक्रिया और पूर्ण सहायता देने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

प्राप्त जानकारी के अनुसार, अग्निशमन की गाड़ियां और पुलिस के दस्ते घटनास्थल पर पहुंचकर राहत एवं बचाव कार्य में लगे हैं। केन्द्र की ओर से राष्ट्रीय आपदा मोचन बल (नैशनल डिज़ास्टर रैस्पाँस फोर्स एन.डी.आर.एफ.) की टीमें घटनास्थल पर भेजी गयी हैं। राष्ट्रीय सुरक्षा गार्ड (एनएसजी) और एयरक्राफ्ट एक्सीडेंट इन्वेस्टीगेशन ब्यूरो (एएआईबी) की टीमें भी अहमदाबाद के लिए रवाना हो चुकीं हैं।

एयर इंडिया के अध्यक्ष एन चंद्रशेखर ने कहा कि यात्रियों के परिजनों की मदद के लिए एयरलाइंस ने विशेष सूचना केन्द्र स्थापित कर दिये हैं।भारतीय रेलवे ने भी अहमदाबाद से मुंबई, दिल्ली और अन्य स्थानों के लिए विशेष ट्रेनें चलाने की तैयारी शुरू कर दी है और जल्द ही इन विशेष ट्रेनों की घोषणा की जायेगी।

क्रैश में बचा...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

तरफ आग की लपटें थीं।

उन्होंने यह भी बताया कि मुझे एंबुलेंस के जरिए अस्पताल लाया गया। हादसे के बाद रमेश विश्वास कुमार सड़क पर खुद चलता नजर आया। हालांकि वह लंगड़ा रहा था।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, जी-1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौन सिटी, जिला करौली से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2008/27147 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908